ॐ

ह्यंज़े वनवुन

हियमाल

पननि संस्कृति हंज़ अख ज़ान

लेखकः
पुष्करनाथ रैणा

ज़रकासय
(मुण्डन)

योनि त्रावुन

मेखला संस्कार

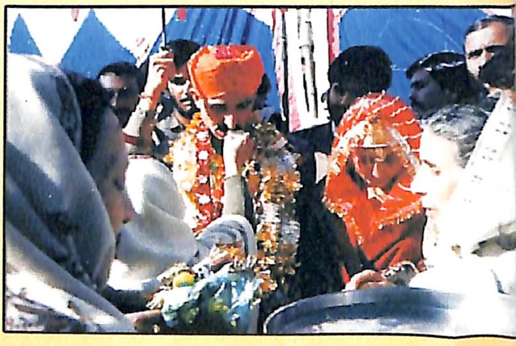

आलथ

ऊँ श्री गुरुवे नमः।

का'शरिस भट् खांदरस त् मेखलि संस्कारन प्यठ

ह्यंज़े वनवुन
हियमाल

पन्नि संस्कृति ह्न्ज़ अख ज़ान।

वुछतोस सन्यर, गन्यर त् नन्यर।

२४ पक्षाक ७२ शा'न्ज़्य, ब्रा'न्च़ रुस प्रोवुथ ब्रह्मय तीज़।
युस फल सन्यवारि त् कन्या दानस, सुय फल छु गूपियन वनवनस।
वीगिस चा'निस शुराह गरय मां'ज़ि मरेदि बर'यो।

600

लेखक-
पुष्करनाथ रैणा

With best compliments from:-

CARE POINT AUTOMOBILES
(MARUTI AUTHORISED SERVICE STATION)
AN ISO 9001 : 2000 CERTIFIED CO.
OPPOSITE B S F CAMP --- PALOURA
AKHNOOR ROAD, JAMMU-- 180002 (J&K)

Tele. Nos' 2501654 , 2503412. Mob.9419283151

प्रकाशक- पुष्कर नाथ रैणाः- एम. ए. बी. एड
(लारीयार, त्राल कश्मीर) 96/7B , मनोरमा विहार, पट्टा बोर्डी ,जम्मू-02
दूरभाषः- 0191-2502888, cell- 9469173422
मिलने का पताः-
96/7B , मनोरमा विहार, पट्टा बोर्डी ,जम्मू - 2 तथा
शारदा केंद्र वस्तु भंडार आनंद नगर बोडी जम्मू- सायंकाल ५ बजे।

मूल्यः १०० रु०
Subsidised Cost Rs 40/=
© सम्प्रति

दूरा संस्करण 2009
संख्या : 2000
मुद्रक : जंडियाल प्रिंटिंग प्रेस, महिन्दर नगर,
नहर रोड़, जम्मू दूरभाष : 0191— 2553140

ॐ तत सत

वनपोह भवम संतम भक्तानाम वरदायकम।

तपस्विनं जितंक्रोधम गोविंदम नौमि सद्गुरुम।। गोविंद अमरे'थ

वनपूह किस त'्सि महा संतस, भखत्यन हुंद युस वर दिन् वोल।
तस तपसियस ये'म्य क्रूध ज़्यून नय, सथ ग्वरस गूव्यंदस म्योन नमस्कार।

च़ेनवन

शाल् च़म व'जिथो सू़ह रूप् पानस, टुंग् त्राव ग्रज़ मा'दानस मंज़।
छुख क्या चू़ असली वुछ मंज़ ध्यानस, टुंग् त्राव ग्रज़ मा'दानस मंज़।
विशवास डो'लमुत टर छुख वनन्य, फरि छुख वनन गर् रुस्तुय।
अहम त्राव प्युल कर श्रीभट मानस, टुंग् त्राव ग्रज़ मा'दानस मंज़।
काहन काह वत् तति कुस बोज़े, यंद्रय च़'र दिया मंज़िलस वथ।
सीन् दि सिपरस तन दि कानस, टुंग् त्राव ग्रज़ मा'दानस मंज़।
शिव छुख त् शक्ति डखि छय पानस, अष्टादश भुजा शारिका रूप।
शारदा पीठस रव त्राव पानस, टुंग् त्राव ग्रज़ मा'दानस मंज़।
त्वहि बुय मदतस इक् वट् रूज़िव, यिय वो'न माजि शारिकाये मे।
कशीर र'छिव'न, नत् भय छुव् प्राणस, टुंग् त्राव ग्रज़ मा'दानस मंज़।
अत्गत च़लिय गथ कर कुनिरस, कार्पण्य दूश त्राव व्वठ लाय स'दरस।
च़् ति लोर पुष्कर गोविंद ज्ञानस, टुंग् त्राव ग्रज़ मा'दानस मंज़।

नमन तथा वंदना।

अपने स्वर्गीय माता पिता, गुरुजनों, कश्मीर के महान संतों, पंडितों (जो स्वयं पूर्ण हैं तथा स्वातंत्रिय जिनका स्वभाव है), विशेष कर ज्ञात तथा अज्ञात 'ह्यंज़े वनवुन' विशेषज्ञ माताओं को मेरा शतशत नमन;

तथा

कश्मीर से निष्कासन के कारण अपनी लडाई स्वयं लडते हुए, एवं वर्तमान असह्यय पीढा में सहनशक्ति प्रदान करने वाले शिवशक्ति (जिन का जेष्ठ अष्टमी, १९९६ ई० का दिय हुआ निर्देश 'च़ेनवन' के पदों में इंगित है) के चरण कमलों को बारंबार सहस्रों नमस्कार करता हूं।

यह कृति, अपनी स्वर्गीय माता हिय (राजरानी,गोत्र स्वामिन मुदगल्य, जिसका भरी जवानी मे निधन हुआ था),

तथा

विस्थापन में व्यथित **'वाय कशीर, हाय कशीर-स्व त्रेश'** पुकारते हुए प्राण त्यागने वालों के प्रति समर्पित है।

पुष्करनाथ रैणा
लारीयार, त्राल, कश्मीर मनोरमा,
पट्टा बोर्डी ,जम्मू -२

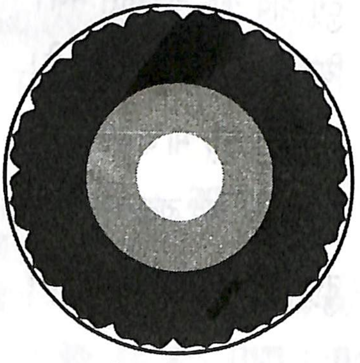

सर्वाशापरिपूरक चक्र

अनुक्रमणिका

विषय	संख्या
चेनवन	3
अनुक्रमनिका	5
काव बट्काव	7
दो शब्द	10
विवेचन	11
भूमिका	13
निवेदन, प्रस्तावना	17
इंद्र कलश	42
ग्वडन्युक खण्ड (प्रथम खण्ड)	
(क) लिवनस वनवुन शो'क्लम,-	43
जायि लछ़ज-	44
दपनस,	45
म्वंग् वरे'न	46
ज़्युन च़टनस,	47
गर्नावयि वनवुन-	47
मस·मूच़रावनस	48
क्रूलस-	49
क्रूल खारनस,वरि,	49
क्रूल खारनस, गछस-	50
(ख) मा'न्ज़ि रा'च्-	51
मां'ज़, लागनस वनवुन	54

विषय	संख्या
(घ) कोरि दिवगोनस	55
कलश पूज़ायि	57
शव भ्वकूच़ , सो'रिव तप्	57
तरंग् गंडनस, दिवतगूल्यन	60
दुर्यबतस-	61
न्यचिव कनि श्रानस-	62
पलव लागनस	63
दिवगोन लडके का-	63
(ग) दिवगोनस कोरि--छुरी-	65
दिवगोन हवनस-गूदान	65
कन्या दान-	68
कन्या संस्कार-	69
प्रपनस अनकनस-	70
दक्षणा त् आ'ही, दिवत् गूल्य वालुन	71
पितरों के लिए-	72
दोयिम खण्ड विवाह	
वां'ख पार्न्य	73
तरंग गंडनस	74
वरदनस	75
बरात यिन् सात् महाराज़स वनवुन	75
बतस वनवुन	81
व्यूग खांदरस प्यठ	83

विषय	संख्या	विषय	संख्या
दार पूज़ायि	84	विद्यारंभस आटीपन, श्रानपटस	107
लगन मंडपस, कोरि ल'गनस	88	योन्यस प्यठ	110
मंगल एवं मंदन माल	90	ब्यख्यायि आज़ि दर्शनस	113
यिाव ब्वकूच् शक्तिनाथ्	92	हुमस	115
कन्यादानस	93	वारिदानस,	119
नील वटस	94	पां'छ् शिव ब्वकच्	120
अथ्वासस प्यठ	95	साफस	130
दय बतस	96	व्यूग मेखलि विज़	131
पोशिपूज़ायि	96	अथिफो'ल	132
महारे'य सखरनस	98	दक्षना,	132
खलतस	99	आ'ही	132
पुत्र विवाह (विवाह संस्कारस)-	99	ल'गन् चीरि वनवुन	134
महाराज़् पा'रावनस	99	वीगिस नच़नुक्य वच़न	134
खलतस	99	टिप्पनी तथा संदर्भ	137
साफ् गंडनस	99	हिंदू साहित्य दर्शन तथा जीवन	152
गो'न्द ट्यो'क लागनस	99	शब्दार्थ	154
होवुर सखरनस	99	रो'व- ल्वति ल्वति पूर्य त्राव-	
ज़ा'म ब्रांद ह्यन् पत् खुशी हुंद्य बा'थ	99	Henzey Comentary english	159

त्रेयिम(तीसरा) खण्ड मेखलि वनवुन य'जमन बा'यय———— 135

हुमचि जायि लिवनस वनवुन।	101
अ'गन् कवंडस	101
तरंगस	102
नार्यवन खारनस	103
संस्कारन हूज़ वखनय	104
मस कासनस	105

अछर ज़ान-

अछर-देवनागरी। बूल्य-का'शुर। मात्रायि-देवनागरी फांट- (क्रुतिदेव ०२४, १०)
कुछ नए हिंदी शब्द—computer_ गणक key board_ गणक पटी com.
CDगणक चक्री, computerize गणकीकरन आदि।

अर्धविराम(') निशान कुनि ति जायि लगावन् सूत्य छि छो़'ट आवाज़ बनन।

अ =(')= च़'र =चिडिया । ग'र = घडी । छ़'र= खाली ।
आ'=दा'र= दाढी , का'र =गर्दन । हा'र = मैना अ् = (्)= च़्
=आप। ब् = बु = मैं । ख्र= फिसलना, कांग्र=कांगडी।
अ्् =(््) त्र= सर्दी। स्ति =साथ । क्र्य = कितने ।
ए' = े' = च़े'=आपको। मे , मे' ,मे'ह, म्यह=मुझे।, तथा च़्यह, म्य भी यथा स्थति प्रयोग होसकता है। स'ने'र,सन्यर =गहराई ओ' = ो' = छो़'ट = छोटा। मो'ट= मोटा। छो'न्य = कम।
व्व = व्वपकार । छ़'वप्। बुद्धि-ब्वद्ध, सुंदर-स्वंदर, उत्तम-व्वतम।

कथ--काव भट् कावो=

'कावबट् कावो ख्यच़रे कावो, गंगय ब़लय श्राना क'रिथ, गुरे म्यचे ट्यो'काह क'रिथ, वल्बा साने नवे लरे, कनधरे बेह, वरि बता खेह'।

बसंतकावस कुन (काक भुशुण्डि जी से निवेदन)-श्रीराम त् लक्ष्मणजी ये'लि इंद्रजितन नागपाशस मंज़ बंद क'र्य त् म्वकला'व्य गरुड जियन। अ'तिय गय गरुडजियस मनस शंका। यि शंका दूर करन् बापथ वोत आ'ख्र शिवजियस निश। त'्मि सूज़ भुषुण्डि जियस निश त् वो'ननसः-

'उत्तर दिसि सुंदर गिरिनीला, तहं रह काक भुशुण्डि सुसीला'। राम च० मा०,उत्तरकाण्ड, ६१।अ'तिय गव गरुड जियस पननि शंकायि हुंद समाधान। वनन् छु यिवन ज़ि अ'हरबल आबशार प्यठ् कौंसर नाग सर किस दामनस तान्य छि लगबग १५किलोमीटर वथ पक्न्य। वति छु यिवन टुसु गाम ति। अ'थ्य सूत्य छि वारयाह थ'ज़ बाल् तंदल य'स् आकाशस तान्य बासन छिह तू अ'थ्य अ'द्य प'ख्य अलाकस छि वनन काव भट। यिहय जाय आसि नील पर्वत। वनन् छु यिवन ज़ि अति छि वुनि ति काकभुषुण्डि जियनि कथ् तू काव काव शब्द कनन गछ़न, ति क्याज़ि, सु छु च़िरिज़ीव तू छुह काव रूपस मंजूय अ'थ्य वनस मंज़ कावन मंज़ रूज़िथ। अति बसन वाल्यन लूकन तू सारिनूय का'श्रे'न आ'स अथ कथि प्यठ श्रद्धा तू यिन वोल व'री अन धन् र'ग्य फ्रूस नेरन् खा'त्रह आ'सिस अस्तुति करन। तवय छि काव् पुनिम दोह सा'रिय का'शिर्य भट् काव पतलिस (तीरचि शकलि) प्यठ श्रूच़ त'ह'र थविथ बसंतकावस अर्थात् काकभुषुण्डि जियस नाद लायन। (कश्मीर में काकभुषुण्डि तथा गरुड के बीच वार्ता के उपलक्ष्य में माघ शुक्लपक्ष पूर्णिमा को लोग प्रातः काकभुषंडी जी के लिए पीले चावल रखते हैं। अत्यंत श्रद्धा के साथ उन्हें इसके लिए आवाहन किया जाता है)।

का'शुर प्रछ़-दाज ल्वंगुन-व्यवहार में पद इस प्रकार हैः- ओ'कुस बो'कुस तिलवान च़ो'कुस, ओनुम बतुख लो'दुम देगि, शाल कूच कूच वांगनो, ब्रिमिज डारस पोन्या छो'कुम, ब्रिमिज ब्यने ट्यकिस ट्यो'का, रहमान आया, गुरा प्याया, गुर्य खेयि बंग् ल्वबर चंगह, तेरे मेरे जाओ। अर्थः-१ वह कौन है, और मैं कौन हूं ? जीवात्मा को शरीर में डालकर बोलने लगा,व्यर्थ बोलने लगा और अशुद्ध हो गया। यह पुरुष और प्रकृति में अब रहमान अर्थात म्लेछ आया और मादीयत की दुनिया की मोज में खोकर ल्वबुर या गोबर होगया तो अब खो जाओ। अज्ञात।

हु कुस तु़ ब् कुस त्यलि वन च़् कुस। मूह् ब् तु़ अख **लो'दुम वेगि। शाह क'च़ क'च़ वा गणो। भ्रमाच़ारस पवन छो़'कुम, बह्मच ब्यने ति कस तु़ ति क्याह?** अर्थः-१ वह कौन है, और मैं कौन हूं ? तू या तीसरा कौन है? अर्थात संसार में दो का ही झगडा है तीसरे की कोई जगह नहीं। मूह वश मैं ने अपने आप तथा उस को दो मान कर व्यवहार में लाया। उसके सांस गिनकर रखे गए हैं, भ्रम में ही सारा पवन(सांस) समाप्त हो जाता है। ब्रह्म से उत्पन्न हुई बहन! बताओ यह पहेली किसको कही गई है और क्या कहा गया है। अर्थात परमात्मा ही एक से अनेक होकर सर्वत्र है। दो तीन का कोई झगडा ही नहीं। सारा द्वैत भ्रम के कारण या आत्म विस्मृति से ही है। लेखक।

हिक्रूट तथा प्रश्नोत्तरी-ज़ून मा'ज ज़ूने अंगन अंगन च़्वयता'जी-----आदि। **ज़ान मा'ज ज़ान, अंगन अंगन च़्यथ तु़ ज़ीव**-हर अंग में चित्त तथा जीवात्मा ओतप्रोत है। **तिम कस कने?** वे किस के पक्षमें हैं? **राय यस गने।** जिसकी भावना तथा विचार शक्ति सुदृढ हो। **रा'य क्या द्युतनय?** भावना ने क्या दिया? **खसवुन गुर तु़ वसवुन्य नाव।** श्वासोश्वास का ध्यान अर्थात सोहमसो। **त'थ्य क्यथ गयस ब तूनिस कुनुय,** इसी को लेकर नाभि में पहुंची। **त'तिय मीजिम छ़'वटर म्वटर मामन्या,** वहां मुझे कुंडिलिणि का साक्षातकार हुआ। **तमि दिच़्म ग्यव टूरेहना,** कुंडिलिणी ने मुझे अमृत दिया। **ग्यव टूर्य ल'ज़्म जजीरे,** अमृत को जजीर अर्थात उदर में समेटा। **जजर ल'जिम नच़ने,** जिस से जजीर नाचने लगी अर्थात मुझ पर मस्ती छा गई। इस पर **हारि लजि असने** और स्त्रियां अर्थात कथरे'नि मुझ पर हंसने लगीं । **गां'ट् लजि नच़ने, हक छी छी, हक छी छी।** और मुरदार खाने वाले अर्थात अज्ञानी मेरे गिर्द घूमकर सताने लगे। छी छी ऐसों पर।

अथ़ूचन **ओं'गजन हुंद नावः**-१.ओं'गुल (तर्जनी)। २.ज़ों'गुल (मद्यमा)। ३.काठ (अनामिका)। ४.किस (कनिष्ट)। ५. न्यठ (अंगूठा)। म्वठ (मुट्ठी)।

दो शब्द

'ह्यज़े वनवुन' की टीका, समीक्षा करने अनुसंधानमक मौलिक कार्य करने में मेरा यह प्रयत्न केवल इसलिए है कि:

१.कश्मीरी पंडित को उनकी वास्तविक ऊँचाई तथा २४ संस्कारों तथा 'ह्यज़े वनवुन' की गहराई से अवगत कराके इसके प्रति रुचि बढाकर इस के मूल तक जाने की प्रेरणा दी जाए। इस में मेरा कोई आर्थिक लक्ष्य नहीं है। २.यह सत्य ज़ोर देकर बताना कि अपनी मान्यताओं को मानना परंतु जानबूझ कर उन का उल्लंघन करना भयंकर दुष्कर्म तथा पाप है। क्योंकि बीच वाली कोई राह नहीं है तथा यह जान लें कि 'deviation is destruction' ३. संसार में उच्च कोटि की संस्कृति वाले कश्मीरी पंडितों में गिरते हुए मूल्यों का उत्थान ही मेरी चिंता का विषय है। जनता को अपनी कमियों से अवगत कराना। जैसे: **बरात का समय पर न पहुंचना**, तथा **स्वागत के लिए महिलाओं को वनवुन का ज्ञान न होना, ४. पोशपूज़ा के फूलों** को पैरों तले रोंदना, ५. **शिवशक्ति रूप** बने दंपत्ति को प्याज़ वाला तथा **अशुद्ध वुरबत् खिलाना**,६.**मेखला तथा दूसरे संस्कार समय पर न करना** आदि,

७. कानों में (ज्ञान रूपी) शंख फूंककर जगाने का प्रयास करना कि अपने को जान बूझ कर भूल जाना ही अपने समाज की क्षति पहुंचाना है। वैसे ही जैसे एक शेरनी का बच्चा जन्मते समय भेडों के बीच रहकर भेडों की तरह 'में में' करने लगा। और अपने को भूल बैठा। संस्कार रूपी शेरों से जब इसकी भेंट हुई तो अपनी महानता को जानकर दहाडने लगा। तब जाकर उस से सब डर खाने लगे। यही मौलिक प्रयास रामसेतु के निमित गलहरी का छोटा पत्थर ही समझें। इस कारण से अति दृढ होकर अपने(वैज्ञानिक पृष्ठभूमि रखने वाले)संस्कारों का दृढता से अनुसरण करें। आप भी पुस्तक को पढ कर दूसरों को भी ऐसा करने की प्रेरणा देकर अपना तथा अपने समाज का कल्याण कर ज्ञान की वृद्धि करेंगे । तथा अस्तु।।

पुष्करनाथ रैणा

लारीयार त्राल, बोडी जम्मू-२

विवेचन

कुछ समय पूर्व श्री पुष्करनाथ रैणा जी ने उन के द्वारा लिखित पुस्तक '**ह्यंजे वनवुन** Ig; e ky* मेरे विचार्थ मुझे भेंट की। इसे पढकर यह कह सकता हूं कि इस विषय पर पूर्ण रूप से यह पहला प्रयास है जो पूर्ण भी है और बेजोड भी।

ह्यंजे शब्द का उदगम मूलतः संस्कृत भाषा का कश्मीरी रूप है। संस्कृत नाट्य शास्त्र में यह शब्द हंज़े के रूप में पदे पदे मिलता है। **ह्यंजे वनवन** विशेषज्ञ का पद प्राप्त होने का सौभाग्य किसी सरस्वती पुत्री को ही हो सकता है। मेरी एक बहिन जो इस विशेषज्ञ पद को प्राप्त कर चुकी हैं। मैंने ह्यंजे वनवुन की प्रस्तुत पुस्तक की रिचाओं को उन से प्रमाणित कराया। उनका कहना है कि ''अवश्य ही श्री पुष्करनाथ जी ने किसी परिपूर्ण 'वनवन ग'र' से सहायता ली है। अन्यथा इस पुस्तक का लिखना संभव नहीं होता। यद्यपि वनवन की अनेक पुस्तकें मेरी दृष्टि में आई हैं वे शुद्ध होने पर भी अपूर्ण ही हैं। किंतु **ह्यंजेवनवुन हियमाल** को सम्पूर्ण कहा जा सकता है और एसी पुस्तक लिखने में रैणा जी को वर्षों की श्रम साधना करनी पडी होगी''।

यह कार्य पूर्ण करने पर मै हृदय से अपने मित्र श्री पुष्करनाथ जी को साधुवाद देता हूं।

लेखक ने अंत में **ह्यंजे** शब्दों का अर्थ तथा टिप्पणि देकर कश्मीरी हिंदुओं में २४ संस्कारों को गिनाया है किंतु मनोस्मृति में केवल सौलह ही है। मनु-२: २७-६५। कुछ संस्कार केवल रीति रिवाज ही हैं किंतु इन में गर्भादान संस्कार को काफी महत्व दिया गया है। इस के भिन्न आयामों को यथार्थ रूप में लिया गया है जैसे मनु-३: ४६.४७। दस रात्रियों में संभोग अनुचित दिखाया है।' युग स्वभावः स्त्रीणां रात्रयः षोडशः स्मृतः। **चतुर्भिरतरः** साद्यं अहोभिः सद्विगर्हितैः।। तासामधिभूचतस्त्रस्तु निन्दितैकादशी च यःत्रियोदशी च शेषास्तु प्रशस्तः दश रात्रयः। युग्मासु पुत्राः जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषुः। तस्मात्युग्मासु पुत्रार्थी सो वशेदार्तयो स्त्रियः। शास्त्र की इन बातों पर चलकर क्रित्रिम उपचार तथा ब्रूण हत्या से छुटकारा मिल सकता है। अंत में मै पुनः श्री पुष्करनाथ रैणा का अपने समाज

की ओर से यह झटिल कार्य पूर्णता को पहुंचाने पर धन्यवाद देता हूं। और अपनी पठित महिलावर्ग से विनम्र प्रार्थना करता हूं कि वे इस पुस्तक का यथावश्यक उपयोग करें और अपनी शुद्ध परंपरा और संस्कृति का सुरखित रखने में अपना योगदान देकर सामाजिक ऋण से मुक्त हो जायें।

आश्वन शुक्ल चतुर्दशी, ३-१०-०६

त्रिलोकीनाथ पंडित वानप्रस्थी,

अध्यक्ष संजीवनी शारदा केंद्र, आनंद नगर बोडी, जम्मू।

आभार

महिला समाज के समाजिक दरोहर **'ब्यंज़े वनवुन हियमाल'** को समाज तक पहुंचाने का अनुरोध करने वाले तथा इस महान कार्य में मानसिक प्रोहत्साहन तथा आर्थिक योगदान एवं साहित्यक जानकारी देने वालों का मैं अंतःकरण से आभारी हूं। जिन की सहायता तथा आशीर्वाद के बिना इस अमूल्य दरोहर का कम दामों पर समाज के ज्यादा से ज्यादा लोगों को उपलब्ध कराना संभव नहीं था।

इन में श्री **'बादशाह कलंदर आश्रम, ट्रस्ट'** पंडोका **कालौनी पलोरा, जम्मु**, श्री ओमकार नाथ वातल फोहर अनंतनाग, श्री जानकी नाथ विर्क्यमू आदि प्रमुख हैं।

दूसरे संस्करण की विशेषताएंः-

१-मोटे अक्षर। २-नए शब्दों का अर्थ।

३-अध्यात्मिक पहेली ४-अंग्रेज़ी भाषा में वनवुन का सार। ५-चित्र इंद्रकलश। ६-पृष्ठों की संख्या पहले से अधिक।

भूमिका

' ह्वज़े वनवुन ; हियमाल '

वनवुन शब्द का शाब्दिक अर्थ है- शुभ वेला पर किसी विशेष संस्कार कर्मको सम्पन्न करते समय हर्षोल्लास के साथ ईश्वरीय शक्तियों का गुणगान अथवा देवी देवताओं के प्रशंसापूर्ण उल्लेख के साथ भीतरी आनंद को मुखर करते हुए स्त्रियों का समवेत गायन। इस परिभाषा के भीतर कई महत्त्व पूर्ण तत्त्वों को एक साथ समेटने का प्रयास किया गया है।

१. 'वनवुन' महिलाओं का समवेत गायन है।

२. 'वनवुन' पारिवारिक जीवन में आनंद और हर्षोल्लास को द्विगणित करता है।

३.'वनवुन' शुभ और मंगल का सूचक है।४.'वनवुन' ईश्वरीय शक्तियों का गुणगान है।

५.'वनवुन' किसी विशेष समाज की भव्य ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्परा की पुनःस्मृति कराता है।

६.'वनवुन' हमारे धार्मिक और सामाजिक उत्सव को महिमा मंडित कर देता है।

७.'वनवुन' में लोक भाषा, लोक कविता एवं लोक संगीत का अदभुत मिश्रण रहता है।

८.'वनवुन' किसी समाज को अपनी सांस्कृतिक परम्परा के साथ जोड देता है।

९'वनवुन' नव पीडी के स्वर्णिम भविष्य की मंगलमय कामना सहित 'शुभस्य शीघ्रं' की पूर्व सूचना है।

'वनवुन' वस्तुतः महिलाओं का गायन है। इसमें किसी भी वाद्ययंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता है। 'वनवुन' कश्मीरी लोक़ मानस का प्रतिबिंब है, लोक कविता (शायरी) का एक अंग है। 'वनवुन' को कोई विशेष रचयता नहीं होता है अपितु लोक मानस समय बदलने के साथ साथ आवश्यकता और रुचि अनुसार इन गीतों में परिवर्तन कर देता है अथवा और पद या छंद जोड़ कर श्रीवृद्धि करता है। यहां कोई कवि या लेखक प्रमुख नहीं रहता अपितु जन मानस सृजन हेतु सक्रिय रहता है। अतः स्पष्ट है कि 'वनवुन' का कोई विशेष लेखक नहीं होता है। जात कर्म, नाम कर्म, चूडा करण, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कारों से नई पीढी को सम्पन्न करते समय घंटों घर में 'वनवुन' गायन चलता रहता है। प्रत्येक धार्मिक-सामाजिक संस्कार या सांस्कशतिक अनुष्ठान के अपने विशेष 'वनवुन' गीत हैं। 'वनवुन' गाते समय एक जानकार महिला गायन मंडली का नेतृत्व करती है। उसे नेत्री कहते

- *पुष्करनाथ रैणा*

हैं। कश्मीरी में इसे 'वनवुन वाजे'ञ कहते है और यह महिला पेशेवर-व्यवसायी professional भी होती है अथवा परिवार से जुडी कोई अनुभवी संबंधिन्। कश्मीरी पंडितों के 'वनवुन' की एक विशेष लय,राग, धुन tune होती है जो शास्त्रीय संगीत के बहुत निकट है। प्रत्येक पद या छंद को विस्तार के साथ धीमी चाल में मानो संगीत की लहरियों पर सवार करके प्रस्तुत किया जाता है। युवा महिलायें धीरे धीरे इस कला को सीखती हैं। निस्संदेह 'वनवुन' गायन अपने आप में एक कला है और निरंतर अभ्यास से ही कोई महिला इस में दक्षता प्राप्त कर सकती है।

कश्मीरी मुस्लिम समाज में 'वनवुन' का अपना भिन्न स्वरूप है और इस्लामी संस्कति के रंग में रंगा हुआ है। इस 'वनवुन' का भी अपना सौंदर्य है। मधुर गायन है जो वातावर्ण में गूंज उठता है। लेकिन उसकी सांस्कृतिक पष्ठभूमि उतनी प्राचीन नहीं है जितनी कश्मीरी पंडितों के 'वनवुन' की है।

'वनवुन' के साथ वननावुन शब्द विकसित हुआ है। 'वनूनावुन' अर्थात महिलाओं के द्वारा 'वनवुन' के महातम्य का संदेश हर उपस्थित व्यक्ति के कानों तक पहुंचाना। परिवार के यश और बडप्पन का गुणगान करना। भीतरी हर्षोल्लास को बाह्य अभिव्यक्ति प्रदान करना। इसी प्रकार एक और शब्द है - 'वनवुन हुर' अर्थात 'वनवुन' गायन का एक छंद या बंद या दो पंक्तियां या मिस्रा। हुर कश्मीरी भाषा का अपना मूल शब्द है। इस शब्द के कई अर्थ हैं और उन में एक अर्थ है 'हुर त्रावुन' या 'हुर वनुन' या 'वनवुन हुर त्रावुन' या 'हुर वननावुन' इस शब्द के विभिन्न रूप है। इस शब्द को संस्कृत के किसी मूल शब्द के साथ ज़बरदस्ती जोडना व्यर्थ है। दो और शब्दों की चर्चा करना तर्कसंगत होगा। ये शब्द हैं- 'वनवन वाजे'ञ' तथा 'वनवन वाजनि'। प्रथम शब्द नेत्री तथा दूसरा शब्द नेत्री का साथ देकर गाने वाली महिलाएं। वह धनराशि, वस्त्र इत्यादि, जो उस परिवार की ओर से नेत्री को भेंट स्वरूप दी जाती हैं उसे 'वनवन द्यार' कहते हैं। इस महिला विशेष को वनवन ग'र भी कहते हैं। वे समस्त महिलाऐं जो बैठकर वनवुन गाती है उन्हें ' वनवन काकनि' कहते हैं। उनमें से किसी एक को 'वनवन ग्राकून्य' कहते हैं। स्पष्ट है कि 'वनवुन' हमारे पारिवारिक जीवन के साथ जुडा है और हर्षोल्लास तथा प्रसन्नता के साथ वृद्धि और सिद्धि का भो द्योतक है।

मैं एक और महत्त्वपूर्ण बात की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है कि धीरे धीरे कश्मीर पंडित परिवारों से 'वनवुन' निकल रहा

है। यह हम से छूट रहा है। हाय और वाय कल्चर ने हमें हर तरह से लूट लिया है। हमारी सांस्कृतिक विभूति को हमसे छीन लिया है। एक ज़माना था कि बारात घर में आते समय स्वागत हेतु स्त्रियां सैंकडों की संख्या में खडे होकर 'वनवुन' गाती थीं। और आज उसी अवसर पर युवा स्त्रियां यूरेपियन डांस, फिलमी नाच तथा अशलील नृत्य में मग्न रहती हैं। यह मूलतः सांस्कृतिक ह्रास का परिणाम है, विनाश का सूचक है। जो हमारे पास श्रेष्ठ और मूल्यवान था वह हमसे छिन्न चुका है। धीरे धीरे हम अपनी परम्परा से अनभिज्ञ हो रहे हैं। विस्थापन के बाद कश्मीरी 'वनवुन' के कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं। जिन में श्री सोमनाथ 'वीर' कृत 'का'शुर शास्त्री वनवुन' श्रीमती कमलावती द्वारा रचित 'लोल वखनय' एवं श्रीमती लक्षमीश्वरी कांद्रू द्वारा लिखित 'ह्यंज़े वनवुन' उल्लेखनीय हैं। लेकिन इन्हों ने केवल संग्रह कार्य ही किया है। व्याख्या विश्लेषण, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि या सांस्कृतिक स्रोत- को ढूंढने का, प्रस्तुत करने का इन्होंने प्रयास नहीं किया है। सम्भवतः ऐसा करना संग्रह ग्रंथ-कर्ता तैयार करने के लिये आवश्यक नहीं था। दूसरी बात यह है कि किसी भी शोधार्थी नो आज तक इस विषय पर विस्तार से लिखने का प्रयास नहीं किया है। संस्कारों पर कई पुस्तकें सन् १९९० ई० के बाद प्रकाशित हो चुकी हैं जिन में श्री मोहन लाल'आश' ज्योतिषी ओमकार नाथ शास्त्री एवं सोमनाथ पण्डित की रचनाएं चर्चित रही हैं।

श्री पुष्करनाथ रैणा का यह प्रयास स्तुत्य है। आरंभ में विस्तृत भूमिका प्रस्तुत करते हुए उन्हों ने वस्तुतः अपने सांस्कृतिक बोध का परिचय दिया है।

यहां यह बात स्पष्ट करना चाहता हूं कि ह्यंज़े कश्मीरी पण्डितों के वनवुन प्रथम

ध्वनिमय उद्‌बोधनात्मक अभिव्यक्ति है। ' ह्यंज़े ' का शाब्दिक अर्थ है हांजी, अरी ओ, ओ सखी, अरी, पुकारने में प्रयुक्त हे, ऐं या अरे। ध्यानाकर्षण के हेतु इस शब्द का प्रयोग कश्मीरी 'वनवुन' बंदों (पदों) में सर्व प्रथम किया जाता है। 'आप तनिक मेरा साथ दीजिये ' या ' मेरी ओर ध्यान दीजिये' -यही तो इस संबोधन सूचक शब्द का अभिप्राय है।

लेखक ने 'ह्यंज़े वनवुन की महिमा' 'ह्यंज़े वनवुन क्यों ?''वननावुन क्या है?' , कश्मीरी पंडितों के विवाह वनवन गीत तथा अन्य महत्त्वपूर्ण बातों पर विचार करके एक विशेष क्रम में ' ह्यंज़े वनवुन' गीतों का संग्रह प्रस्तुत किया है।

संगृहीत वनवुन गीतों के अंत में लेखक ने पुनः कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला

है। जिन में 'व्यूग' 'टे्कि पूच़' 'जातकर्म या काहनेथ्रूर' तथा अन्य अनेक विषयों पर विचार किया गया है।

वनवुन गीतों में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली या पारिभाषिक शब्दों को अर्थ सहित एक क्रम में प्रस्तुत किया गया है। वनवुन गीतों के भावार्थ को समझाने में विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों के अर्थ की जानकारी प्रस्तुत कर लेखक ने गीतों को सर्वग्राह्य बनाने का कार्य किया है और यह प्रशंसनीय भी है। कहीं कहीं उनके साथ मतभेद भी हो सकता है लेकिन कुल मिला कर उनकी यह कौशिश प्रशंसनीय है।

मैं इस तथ्य की ओर पाठक वर्ग का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि लेखक ने दवनागरी लिपि में कश्मीरी भाषा लिखने के लिये सर्वस्वीकृत मानक लिपि का प्रयोग नहीं किया है। दुर्भाग्य यह है कि जम्मू में एक दो व्यक्तियों के पास ही उनके कम्प्यूटरों में मानक लिपि का फॉंट सुरक्षित है और वे बन्धु शुद्ध कश्मीरी लिपि टंकन के हेतु दुगना, तिगना, चौगुना दर वसूल कर रहे हैं और ऐसे महापुरुष साधारण लोगों की पहुंच के बाहर हैं।

श्री पुष्कर नाथ रैणा एक अनुभवी लेखक और रचनाकार हैं। प्रायः इनकी रचनाएं अंग्रेज़ी भाषा में समाचार पत्रों में प्रकाशित हो रही हैं।

सन २००६ ई० में इन की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक ' परम संत परम दयाल- स्वामी गोविंद कौल' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। इस रचना में लेखक ने स्वामी गोविन्द कौल के व्यंक्तित्व, कृतित्व, चिंतन, विचार पद्धति, योगसाधना एवं जीवन उपलब्धियों पर विस्तार से लिखा है। भक्तिपरक श्रद्धामय अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत पुस्तक पर्याप्त चर्चित है।

' ह्वांज़े वनवुन- हियमाल' पुस्तक का समाज में अवश्य स्वागत होगा, जन मानस के लिये यह श्रेयस्कर सिद्ध होगी और इस प्रकार एक कर्मयोगी लेखक अपने उद्देश्य में सफल होगा- ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं आलोचक बन्धुओं की प्रतिक्रिया को जानने के हेतु भी प्रतीक्षारत रहूंगा।

३ अक्तूबर, २००७ ई०

प्रोफेसर (डॉ) भूषण लाल कौल
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग ,
कश्मीर विश्वविद्यालय-श्रीनगर, कश्मीर।

निवेदन-

अ'्सि दीविथि छि सामवीद परान, तो'ह्य ब्राह्मण कोन् शां'च़ परान-प्रहरी।
अ'स्य दीविथि छि सामवीद परान, तो'ह्य ब्राह्मण कोन् शां'च़ परान- प्रहरी।
संध्योपासन तय श्रानूव्यद प'रिज़े, गरि गरि क'रिज़े प्राणायाम-निर्देश।
वीगिस चा'निस शुराह गरय, मा'न्ज़े मरेंदि बर'यो। सर्वाशापरिपूरक श्रीचक्र।
दछ प्रजापतने तस ब्रुब्रारे, हारे छु कन्या संस्कार । कन्या, शक्ति रूपा।
हेरि छय स्यंदूर तय ह्यर दा'न्तावू्य, हेरि छु खसान दीवादि दीव-दुल्हा शिवरूप।
युस फल सनिवारि तू् कन्या दानस, सुय फल छु गूपियन वनवनस-पुण्यार्जन।

ह्यंज़े की महिमाः-उपरोक्त पदों को पढने से प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है कि कश्मीरी पंडितों में संपन्न होने वाले संस्कारों के समय महिलाओं द्वारा ह्यंज़े वनवुन गाया जाता रहा है इस गायन को महिलाएं सामवेद के समांतर मानकर चलती हैं। इस प्रकार के गायन में शिव शक्ति तथा दूसरे कारणों का ही गुणगान तथा स्तुति है। इस में पार्वती रूपी कन्या अर्थात महारे'ञ का, शिव रूपी महाराज़ अर्थात दुल्हे के मिलन या संयोग का बखान है, तथा मेखलि महाराज़ के लिए निर्देश भी है। कश्मीरी पंडितों में ह्यंज़े वनवुन वेदिक काल से ही चला आ रहा है। भाषा बदलने से इस का क्रम नहीं बदला। चाहे मेख़ला संस्कार हो अथवा विवाह संस्कार दोनों के बारे में एक़ विशेष पद्धति अपनाई जाती रही है जो संस्कार के आरंभ से अंत तक एक विशेष क्रम में तारतम्य के साथ चलती है। इसलिए इस महत्त्वपूर्ण ह्यंज़े वनवुन को सामान्य कश्मीरी लोक गीत की संज्ञा देना इसकी महत्ता को कम करने के बराबर है।

ह्यंज़े वनवुन का लिखित रूपः-ह्यंज़े वनवुन वास्तव में कर्मकांड का ही अनुसरण करना सिखाता है। इसी बात को ध्यान में रखकर जन साधारण में ह्यंज़े वनवुन की महत्ता तथा वास्तविकता को दर्शाने के लिए प्रस्तुत पुस्तक लिखने का प्रयास किया गया है। सामान्य लोक गीतों से पृथक होने के कारण इस पद्धति को यहां **'ह्यंज़े वनवुन'** का ही नाम दिया गया है। यह वनवुन पहले से ही मौखिक रूप से चला आ रहा है। बाद में ह्यंज़े वनवुन के साथ कुछ नए वच़न(पद) तथा शिवभक्तिस्तोत्र (शिवभ्वकच़) भी सम्मिलित किये गये हैं।

१६वीं शताब्दि के अंत तक कहीं भी ह्वंज़े वनवुन का मुद्रित रूप उपलब्ध नहीं हो सका है।

ह्वंज़े वनवुन का धार्मिक पक्ष होने के कारण ही इसे पीढी दर पीढी अबाध गति से मौखिक रूप में महिलाओं द्वारा शुद्ध रूप में जीवित रखा गया है चाहे कई शब्दों का अर्थ उन्हें ज्ञात न हो। किसी भी शब्द या पद का लोप करना भयंकर पाप माना जाता था। वैदिक भाषा का जो वर्तमान कश्मीरी रूप है वह ह्वंज़े वनवुन परंपरा में बाधक नहीं बना।

पुरुषों ने कभी भी ह्वंज़े वनवुन की ओर कोई रुचि नहीं दिखाई है। इस कारण इसके बारे में कहीं कोई समीक्षा या टिप्पणी नहीं मिलती है। महिलावर्ग पर पुरुष वर्ग का दबाव तथा इनकी अवहेलना इस का कारण हो सकता लगता है। लेखक ने नारी जाति का ह्वंज़े वनवुन की समीक्षा करके उनका प्रतिनिधत्व करने का प्रयास किया है।

ह्वंज़े वनवुन का एक ही स्रोतः-सारे कश्मीर में ह्वंज़े वनवुन एक ही प्रकार का मिलता है। चाहे बूछू त्राल निवासी ह्वंज़े वनवुन विशेषज्ञ गुरुमुख महिला मेरी मामी जी, स्वर्गीय **श्रीमती तारावती भट्ट** हो जिसने ह्वंज़े वनवुन अपनी दादी से सीखा था या अनंतनाग निवासी श्रीमती **जानकीजी थपलू** हो, अथवा कमराज़ की माता जानकी जी हो या श्रीनगर निवासी श्रीमती **वेशिमाली** या माता श्रीमती **राधा देवी** तथा श्रीमती **तारादेवी** हों अथवा अन्य विशेषज्ञ हों, सब ने एक ही प्रकार के पद एक ही तारतम्य के साथ, तथा ह्वंज़े वनवुन के पदों की एक ही प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया (स्थानीय प्रभाव को छोडकर) है। मेरे जनेऊ संस्कार से लेकर मेरे बच्चों के जनेऊ संस्कार तक तथा अन्य कार्यक्रमों में मामी जी का ह्वंज़े वनवुन मैं ने ध्यान से सुना है उनको हज़ारों पद कंठस्थ थे। इस कारण मेरे मन में इस की ओर अभिरुचि बढ गई। इससे मेरे मन में ह्वंज़े वनवुन का एक रेखाचित्र सा खिंच गया था। दूसरी महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले ह्वंज़े वनवुन को भी मैं ने ध्यान से सुना है जो अन्य गुरुमुख महिलाओं द्वारा गाये गये पदों के साथ शतप्रतिशत मिलता है तथा एक ही प्रकार का पाया गया है। इस से सिद्ध होता है कि सारे कश्मीर में ह्वंज़े वनवुन का स्रोत तथा मूल रूप वास्तव में एक ही रहा है जो हज़ारों वर्षों से पीढी दर पीढी मौखिक

रूप में ही हम तक आ चुका है। समय समय पर इस वनवुन में नए रोचक पद भी शामिल हुए हैं।

अनेक बार असाधारण परस्थितियों का सामना करते हुए भी कश्मीरी पंडित महिला वर्ग ने इस पुरातन धरोहर को अपने हृदय में संजोये रखा है। अभी भी कुछ वरिष्ठ पंडित माताएं इस धरोहर को संजोये हुए हैं तथा स्वजनों से इसे लिखकर छपवाने का अनुरोध करती रहीं हैं। इसी कारण कई ह्यंज़े वनवुन पुस्तके बाज़ार में छप कर आ चुकी हैं। पहली पुस्तक छप कर कब जनता के सामने आई थी, ज्ञात नहीं हो सका। यही प्रयास हमारे स्वस्थ समाज की परंपरा को दर्शाता है। छपी हुई कई ह्यंज़े वनवुन पुस्तकों में एक विचित्र बात यह देखी गई है कि इन में किसी प्रकार की कोई टिप्पणी नहीं दी गई है और कुछ वैदिक या अपभ्रंश शब्दों का अर्थ ज्ञात न होने के कारण छोड दिया गया है। जैस दिवगोन मेंः-

आघासीमांत करुन ह्यो'तये, नाराण ह्योतये आशेनय। **या**

सद्भूदर होम कर च़ांगि धूप व्यो'तये, सोम गव सिर्यस सूतिय ह्यथ।

लक्षमी निनूर्दन करुन ह्यो'तये, नाराण ह्योतये आशेनय। आदि

विलुप्त शब्दार्थः-1989 ई० में समस्त कश्मीरी हिंदू समाज को भारतीय सरकार के देखते देखते कश्मीर से मार भगा कर निकालने के पश्चात् लोगों में ह्यंज़े की ओर रुचि कम हो गई है। इस कारण प्रस्तुत पुस्तक **'ह्यंज़े वनवुन'** के मूलभूत एवं आधारभूत सिद्धांतों, नियमों या प्रक्रिया को जानने तथा जनसाधारण की वर्तमान बोली से लोप हुए शब्दों का अर्थ ढूंढने का प्रयत्न किया गया है ताकि तारतम्य शुद्ध क्रम के साथ चलता रहे।

'ह्यंज़े वनवुन' की **विशेष गायन विधि** का कारण भी दर्शाया गया है। इस पुस्तक में ह्यंज़े तथा वनवुन का अर्थ, कुछ यूग प्रूग, **हिंदुओ की जीवन पद्धति,** धार्मिक ग्रंथ तथा हिंदुओं के १६ विशेषकर कश्मीरी पंडितों में प्रचलित २४ संस्कारों को ओर मेहंदी, व्यूग, पगडी, रत्न चां'गिज(द्वीप) आदि का प्रयोजन भी संक्षेप में संकेत दिया गया है।

सारांश यह कि इस पुस्तक में कश्मीरी पंडितों में प्रचलित दो मुख्य पवित्र तथा शूभिदार या शोभायमान एवं महत्त्वपूर्ण संस्कारों जैसे मेखला तथा विवाह के समय गाया जाने वाला

ह्यंज़े वनवुन का मूलपाठ तथा टीका सहित प्रस्तुत किया गया है। जैसे लकडी काटने 'ज़्युन च़टुन' से लडके या 'मेखलि महाराज़्' के नदी(यारबल) पर जाकर वापस घर आने तक और विवाह में लडकी की विदाई तक शास्त्रीय पद्धति के अनुसार भिन्न पडावों का ब्योरा दिया गया है, ताकि हर कश्मीरी पंडित को अपनी संस्कृति के वर्ताव में तनिक भी कठिनाई न हो और दूसरे पर निर्भर न रहना पडे।

'स्वांतः सुखाय लोक हिताय' के इस न्यूनतम मौलिक प्रयास की सफलता का आंकलन जनता ही कर सकती है। इस प्रयास में अनेक लोगों ने मेरी सहायता की है जिन का मैं हृदय से आभारी हूँ। इनमें अनंतनाग निवासी प्रोफेसर श्री मनमोहनजी तिक्कू, मनोरमा बोडी के श्री विजय कौल नाज़िर, सतीसर फाऊंडेशन-संस्कृत विभाग जम्मू विश्वविद्यालय, श्रीमती रूपाजी गंजू भारत नगर जम्मू, श्रीमती ज़ालाजी दर(बहूरानी) श्रीनगर, श्रीमती कमलाजी (चांदरानी लेखक की धर्मपत्नि) तथा उनकी बहन श्रीमती चूनीजी ,श्रीमती शोभावती दर हरमैन निवासी, श्री सूरज कृष्ण कौल उदयवाला जम्मू, श्रीमती मुगलानी देवी वच्ची निवासी , आदि उल्लेखनीय हैं। हर शुभ प्रस्ताव अमान्य नहीं है।

विशेष-स्मरण रहे कि इस पुस्तक में वनवुन शब्द के लिए 'ह्यंज़े वनवुन" तथा 'गोर' शब्द के स्थान पर 'ग्वर' प्रयोग में लाया गया है ताकि कोई भ्रम उत्पन्न न हो। पुस्तक के अंत में शब्दार्थ वर्णमाला के अनुरूप है।

असाधारण रचनाः-कश्मीरी 'ह्यंज़े वनवुन' कोई साधारण रचना या पद्धति नहीं अपितु हिंदुओं, विशेषकर कश्मीरी पंडितों के संस्कारों की सारगर्भित तथा अर्थयुक्त एवं क्रम बद्ध सांस्कृतिक कृति है जो कश्मीरी पंडित समाज के जीवन के लिए एक मार्ग दर्शक भंडार है। वास्तव में विवाह संस्कार शिव सती या पार्वती के विवाह का ही प्रतिबिंब है। इस कारण वनवुन शैव मत की सैद्धांतिक रीति का पर्याय ही है। जो संस्कारों के आयोज़न के समय गायन द्वारा प्रस्तुत करके दर्शाया जाता है। ज़ो पुरातन काल से प्रचलित है जिसको विधर्मी क्रूर शासकों के समय भी जीवित रखा गया है। अब इस को जीवित रखना हमारा धर्म ही नहीं दायित्व भी है। **कश्मीरी पंडित समाज के कोष में हमारी संस्कृति के इस भाग**

का समावेष होकर वर्तमान जनता तथा आने वाली पीढी के लिए संदर्भ प्राप्त हो सकता है।

एक विशेष क्रम में बरतने वाले इस प्रकार के वनवुन को कश्मीर के सामान्य लोक गीतों से अलग रखना ही श्रेयस्कर है। जब वैदिक भाषा व्याकरणबद्ध हो गई तो दूसरी भाषाओं की तरह कश्मीर की वैदिक भाषा के व्यवहार में भी विकार आगया और आधुनिक कश्मीरी भाषा का रूप ले लिया। हालांकि कश्मीरी भाषा में अनेकानेक वैदिक भाषा के शब्द अब भी प्रयुक्त हो रहे हैं। पुराने युग में विवाह अथवा मेखला संस्कार संपन्न करते समय वैदिक भाषा या संस्कृत भाषा में श्लोक का उच्चारण करते हुए सबको समझ आया करता था। उस समय होम का अनुष्ठान करते समय गुरुमुख महिलाएं भी होम के पास में बैठ कर वेद पाठ करते हुए आहुति दिया करती थीं। किंतु जब कश्मीरी लोक भाषा जन साधारण में प्रचलित हुई तो श्लोकों का अर्थ हमारी समझ से छूट गया और विशेषज्ञ गुरुमुख महिलाओं ने इस कार्य को संभालते हुए होमाग्नि के निकट ही बैठकर सामवेद का गायन प्रचलित भाषा में संभालने का भार वहन किया।

मील का पत्थर(ब्रांद क'न्य) महिला-हमारे धर्म तथा समाज को दृढता प्रधान करने की प्रथम पौडी मात्रशक्ति ही है। इस तथ्य को समझना, कश्मीरी पंडित महिला वर्ग के लिए जानना अत्यंत आवश्यक है। इसी कारण संस्कारों की शास्त्री पद्धति की क्रमबद्ध प्रक्रिया को होम या हवन आदि के समय समांतर रूप में जनसाधारण की भाषा में ह्यंज़े वनवुन द्वारा प्रस्तुत करने की परिपाटी आरंभ हुई है ताकि उपयुक्त स्वछ दैवी वातावर्ण बनाने के साथ दूसरे लोग भी इस बात से अवगत हो जाएं कि होम आदि किस स्तर या क्रम तक पहुंच चुका है, इस प्रकार यही मात्रशक्ति होम कर्ता ब्रह्मणों के समांतर चलकर उनके प्रति प्रहरी का भी काम कर रही होती हैं कि लगन या जनेऊ या मंडल की निर्धारित घडी टल न जाए। जैसेः-

त्वहि छ'व् चंद् गरि अ'स्य क्या बोज़व, ल'गनस क'च गरि रोज़'व ।

स्वर् रूज़िज़ि योनिच ग'र युथन् फेरे, ला'गिव ट्यो'क, पोश, अर्घ शेरे।

प्रस्तुत पुस्तक लिखने का आशय भी यही है कि कु-समय की धूल में ढके हमारे 'ह्यंज़े वनवुन'

कोष रूपी मोती को झाड कर संसार के सामने लाया जाए ताकि जनता के मन में संदेह, भय तथा अंधविश्वास न रहकर अपने अमूल्य धरोहर की वास्तविकता को जानकर इसे संभाल भी सकें। ह्यंज़े वनवुन का पुस्तक रूप में बने रहना कुछ और बात है तथा इसको समझकर वास्तविकता को जानना और व्यवहार में लाना दूसरी बात है।

ह्यंज़े वनवुन क्यों ? 'ह्यंज़े वनवुन' को सामवेद की संज्ञा दी गई है। इसका गायन परम पुण्य माना गया है। साम गायन को मानसिक रोगों की समाप्ति का कारण कहा गया है। इसके बारे में कहा है

युस फल सन्यि वारि तू कन्या दानस, सुय फल छु गूपियन वनवनस।

पुराणों, विशेष कर भागवत पुराण में ऐसा कहा गया है कि जहाँ हर चर्चा, भगवत भजन, सतसंग, होम आदि कोई भी धर्म संबंधी कार्यक्रम का अनुष्ठान हो रहा होता हो वहां गंगा यमुना सरस्वती आदि नदियां, देवतागण, ऋषि, मुनि अवतार आदि पधारते हैं। इनको ऐसे समय पर बुलाया जाता है इसी कारण उनके पधाराने के उपलक्ष में घर की नई मिट्टी से लिपाई तथा जंगल से 'जायि लसूज' नाम का विशेष प्रकार का पवित्र घास जायि लछ़्ज लाया जाता है जिस को झाडू के स्थान पर सफाई के लिए विशेष कर घर के द्वार को साफ करने हेतु प्रयोग में लाया जाता है। जिस से घर तथा आस पास का वातावरण शुद्ध तथा पवित्र हो जाता है ताकि संस्कार के समय देवता आदि के उपस्थित रहने से उनके अतिथि सेवा में कोई कमी न रह कर देव लोक जैसा वातावरण बनाकर उनके आषीर्वाद के भागीदार बन सकें। आषय यह होता है कि एक ओर वेद वाणी तथा दूसरी ओर 'ह्यंज़े वनवुन' की गूंज से समाज के सदस्यों को मानो देवताओं की सभा ही में परिवर्तित किया गया हो।

विशेष :-

ब्राह्मण घर में जन्म लेने विशेष कर गर्भादान के समय से ही बच्चे को ब्राह्मण समाज में सम्मिलित करने हेतु स्वस्थ तथा गुणसंपन्न बनाने के लिए संस्कारित किया जाता है ताकि बच्चा ब्रह्मकर्म करने के योग्य होकर पूर्ण ब्रह्म को जानते हुए उसमें स्थित होकर चारों पदार्थों, धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को प्राप्त कर सके। जैसे:- ह्यंजे-

लछ् ब'द्य ज़न्म व्लंगिथ आखो, चाखो ब्राह्मण जनमस मंज़।

अर्थ-मेखलि माहराज़ की ओर संबोधन करके:-अरे तुम लाखों जन्मों को लांघते हुए अब ब्राह्मण शरीर में आ गए हो इसी लिए तुम्हारा जनेऊ संस्कार किया जारहा है।

ह्यंज़े :- अर्थ-**(आवाह करुन)** किसी उच्च स्तर के व्यक्ति को बुलाना। ह्यंज़े किसी ऊंची पदवी वाले को आवाह जब अर्थ सिद्ध हुआ तो ऊंची पदवी वाला कौन है? जिस को किसी शुभ अर्थात मंगल कार्य के आरंभ करने के समय आवाह्न किया जाता है। यह देखा गया है कि भारतीय संस्कृति में किसी भी ऐसे शुभ कार्य जैसे जन्मदिन पर नारीवन (मौली को), होम (श्रीगणेश को), शिव पूजा (शिवलिंग को) आदि के समय नारायण या पूजा संबंधी देवता का आवाहन करके जीवादान दिया जाता है, तथा उस देवता का आवाह करके उसे प्रत्यक्ष मानकर उसकी पूजा अर्चना की जाती है। देवताओं तथा शक्तियों विशेष कर माता **पार्वती के लिए इसी आवाह्न को ह्यंज़े कहते हैं जो एक सूत्र ही है।**

हम किसी भी संस्कार की प्रक्रिया का जब समष्टि रूप से समीक्षा करके देखें तो **'ह्यंज़े वनवुन' देवलोक जैसा स्वच्छ तथा शांत वातावरण बनाने में अत्यंत सहायक होता है। सारांश यह कि 'ह्यंज़े वनवुन' दृष्यमान वातावर्ण को अलौकिक बिंदु में परिवर्तित करता है। संगीत के कंपन युक्त ताल और लय से जिससे शांत रस की अनुभूति होती और उसी को अहं विमर्ष के रूप को प्रतिमा द्वारा प्रतिबिंबित करना होता है और इस अनुभूति को शास्त्रज्ञों ने शांतरस[३] के नाम से निर्देशित किया है।** तुमतडाके वाली छकरी या धमाके दार गाने का प्रभाव अधिक समय तक नहीं रहता। 'ह्यंज़े वनवुन' के सामने वह तो केवल कोलाहल ही है। **स्मरण रहे कि टेप** द्वारा वनवुन से गाने की वह सूक्षम तरंगें प्राप्त नहीं होती हैं जो जीवंत 'ह्यंज़े वनवुन' से प्राप्त होकर सूक्षम प्रकार से हमारे जाने बिना ही हम को प्रभावित करती हैं। इस कारण टेप के साथ साथ महिलाओं को भी गाना चाहिए।

ह्यंज़े तथा कश्मीरी समाज का लक्ष्य। यहां के लोगों का लक्ष्य सरस्वती की पूर्ण प्राप्ति है तो 'ह्यंज़े वनवुन' इस का एक साधन है।

वननावुन क्या है?- कश्मीरी भाषा में किसी भी शुभ कार्य पर केवल महिलाओं द्वारा गीत गाने को वननावुन कहते है। इस में रो'फ, वचुन आदि भी शामिल हैं (शोक युक्त गाने को ल्यलवान कहते है किंतु हिंदुओं में इसका प्रचलन नहीं है)।

वनुन शब्द वाणी शब्द का ही बिगडा रूप है। वाणी का मूल रूप वाक् है, जो वाणी या वाक् देवी सरस्वती का अर्थ देता है। अर्थात स्वयं कुछ सार्थक कहना। कहने की प्रक्रिया के तीन अंग या भाग हैं। १. वनन वोल अर्थात कहने वाला, वक्ता २. वनुन या कहने की क्रिया वाक् तथा वनवुन जो कुछ सार्थक कहा गया हो वक्तव्य। वननावुन अर्थात कहलवाना शब्द में कहने वाला तथा उसी पद को दोहराने वाले दोनों आते हैं। लगातार क्रम से गाते हुए पदों को वनवुन कहा जाता है। किसी दूसरे द्वारा कहलवाना वननावुन होता है। 'ह्यंज़े वनवुन' में वननावुन किसी वैखुरी युक्त गुरुमुख विशेषज्ञ महिला से लय में पवित्र पदों को कहलवाना ही अर्थ है।

ह्यंज़े गायन विधि- इस क्रिया कलाप अथवा सामूहिक गायन में विशेषज्ञ गुरुमुख महिला ही ह्यंज़े वनवन मंडली में नेता का पदभार संभालती आ रही हैं। मंडली में नेत्री पहले एक श्लोक या पद का बोल सुनाती है फिर लय के साथ शेष महिलाएं **ह्यंज** बोलकर इसका अनुकरण करती हैं। हर एक पद में संस्कार के चलते हुए भाग की जानकारी देकर आशीर्वाद दिया जाता है। यज़मन (जजमान) तथा उसकी धर्मपत्नि को वसदेव देवकी या राजा दशरथ तथा कौशल्या, श्रीकृष्ण, रुकमणी की संज्ञा देकर दुल्हन बनी कन्या को जनक पुत्री अथवा पार्वती और जनेऊ धारण करने वाले पुत्र को बलरामजी, रामजी तथा बुआजी को सुभद्रा आदि के पवित्र नामों से संबोधित किया जाता है। इसके बाद हर पद के साथ यज़मन (जजमान) तथा इसके संबंधियों का नाम जैसे यज़मन तथा उसकी पत्नि का नाम, दादा दादी चाचा,पुफी आदि के नाम बोलकर कर उपर्युक्त पद को दुहराया जाता है **जिसको वखनय कहते हैं।** जैसे:-

कलशस पूज़ कर दरबे तुल्यव, टा'न्पट कुलि वसदीव राज़ने।

वखनय- **कलशस पूज़ कर दरबे तुल्यव,टा'न्पट कुलि बाल कृष्ण्ने।** यजमान का नाम।

ह्यंज़े सर्गम-इसका एक विशेष वैदिक सरगम है। जो षडज तथा ऋषभ मंद्र सप्तक में कोमल निशाद (रे, स, नि़)-आरोह अवरोह में चलता है। इस में गाने का वर्तमान सात सुरों वाला शास्त्रीय सरगम या थाट नहीं है।

यह गाना या वनवुन, संस्कार संबंधी होने के नाते अहिंदु जाति से सर्वथा भिन्न है। **ह्यंज़े वनवुन** को पहली बार कोई सुनने वाला या पूरा ध्यान दिए बिना सरलता से समझ नहीं सकता है। इस का कारण इसकी स्पंदात्मक विशेषता है। वनवुन में पूरी प्रक्रिया संस्कार के अंत तक क्रम के साथ अबाध गति से श्रृंखलाबद्ध तारतम्य के साथ चलती है।

कश्मीरी मुसलमान महिलाओं में सुनत या विवाह के अवसर पर वननावुन का प्रचलन है जो अधिकतर (तत्काल रची) रचना ही होती है। जैसे :- (बाबन ओ'नयो टे्यचल गुर छ़ा'रिथ, जल वलो नंबले सा'र करिथ।। या निच निच सू्चने लदु सों'दूकस नेरु बंदूकस टास त्रावने, आदि)। रो'व या रो'फ रमज़ान तथा ईद के दिन गाया जाता है। एक समय था जब मुसलमान महिलाएं रमज़ान मास में हर शाम से आधी रात तक रो'फ या रो'व गाती थीं। दूर दूर स्थानों से रात को सामूहिक 'रो'फ' की मधुर तथा रसीली तान बहुत ही सुंदर लगती थी।

घरनावय से मेहंदी रात तक 'ह्यंज़े वनवुन' के बाद तुंबकना'र (मिट्टी की ढोलक) पर भजन तथा लीलाएं गाई जाती हैं, गागू्र (पीतल का घडा) या नो'ट (मिट्टी का घडा), लो'यि खोस (cup made of alloy) छनका, कुंजू् को'र (चाबियों का गुच्छा), थाली चमचा, आदि वाद्ययंत्रों के तोर प्रयोग करते हुए यह जागरण प्रभात तक चलता रहता हैं।

ह्यंज़े वनवुन प्रक्रिया का सारः-

१. **साथ वुछुन**.(महूर्त देखना) लडका जब ७ से १५ वर्ष के आयु के बीच तक का होता है तो सबसे पहले अपने परोहित, जिनको कश्मीरी पंडित ब्रह्माजी अथवा गुरु, (कालांतर में विकृत होकर गोर)५ के पास जाकर नई न्यचिपत्र (नक्षत्र पत्री) में बच्चों के मेखल संस्कार या विवाह संस्कार के लिए शुभ नक्षत्र देखकर शुभ तिथि नियुक्त की जाती है।

नवि न्यचि प'तरे रुत द्राव साथा, ज़गि हुंद दाता छु श्री भगवान।

२. **ज़्युन चट़ुन**. (लकडी का प्रबंध). इसके बाद लकडी का प्रबंधन होता है।

ज़्युन चो़'ट कारंदव त् तबरदारव, अज़ गय खबर बांधा'वन।
स्वन् सुंज़ि मकचे़ रो'प् सुंद दन', वन' खसव च़ंदुन च़ट'ने।

३. वुर् बल त् पश द्युन .(मिट्टी लाना , रसोई के लिए छप्पर लगाना) ।

४. दपुन-सोव या शुभ नक्षत्र पर अपने संबंधियों को बुलाने का कार्यक्रम आरंभ होता है। अच्छे ज़ेवर पहनकर अच्छे शगुन (रू़च़ ज़ंग वुछिथ) के साथ सबसे पहले यज़मन बाय (जजमान की भार्या)अपने मायके जाती है। सब को निमंत्रण देकर तथा उनसे पुशाक अत्गथ (आने जाने का खर्चा), नमक, व'र (गर्म मसाले की टिक्की), अट्हो'र (कानों में लटकने वाला सूती लटकन) तथा रोटी लेकर घर वापस आती है।

५. म्वंगवरे'न वननावुन त् लिवुन (सारे घर की लिपाई होती है)।

६. गर् नावय-पननिस मकानकिस हंगस जावि लस्ज डाल्ज त् क्रूल खारुन। (घर के द्वार को रंगोली से सजाना)

सुभद्रा मा'ली क्रूल खोरूथय, लो'दये भगवानन त् प्रावेहम।

मेहंदी रात (मां'ज़िराथ)। 'घरनावय' के बाद मेहंदी रात होती है। अच्छे नक्षत्र पर बालक या कन्या को पुफी,(श्रीकृष्णजी की बहन, उच्चतम आदर की परिचायक) द्वारा मेहंदी लगाई जाती है। फिर सब रिशतेदारों को मेहंदी लगाई जाती है। मेहंदी समीर पर्वत से आई होती है। मेहंदी का प्रभाव ठंडा होता है और इसका आयुर्वेदिक महत्त्व भी है। मेहंदी का दूसरा पक्ष भी विचारणीय है कि दोनो भौहों के बीच में निश्चलता से ध्यान टिकाने के कारण कुछ देर बाद हल्का लाल पीला रंग दिखाई देता है। मेहंदी लगाने का अर्थ भी यही हो सकता है कि महाराज़्(दुल्हा) या महारे'न्य(दुल्हन)भी वासनाओं का दमन करके इस प्रकाश को अनुभव करने के योग्य हो गए हैं तथा इन में मेहंदी जैसी शीतलता आ चुकी है।

समीर अ'न्द्रय मां'ज़ि हुन्द तर द्राव, त्यलि द्राव ये'लिआव ल्यनृ्य गाश।

अर्थः- समीर पर्वत (सर या ब्रह्मांड) के अंदर मेहंदी की कोंपल उत्पन्न हुई और ऐसा तभी हो सका जब छोटे छिद्र (आज्ञा चक्र) के बीच प्रकाश प्रकट हुआ।

७.दिवगोन-देवगुण(सं) देवता जैसा गुणसंपन्न बनाना। यह एक हवन होता है।

दिवगोन होम अथवा यज्ञ का ही अनुष्ठान है जिस में तिल, जौ, अखरोट, चावल, घी, श्रीफल, चूना आदि प्रयोग में लाए जाते है। दिवगोन से शुद्धि हो जाती है तथा मन और शरीर में पवित्रता प्राप्त होकर व्यक्ति संस्कार के योग्य हो जाता है। इसी लिए माना गया था कि दिवगोण के बाद मेखलि महाराज़, महाराज़् (दुल्हा) या महारेन्य (दुल्हन) का लग्न संस्कार होने तक घर से बाहर जाना निषेध है, **जो उनके लिए हानि कारक हो सकता है।**

८.**दिवगोनस लिवुन**- (दिवगोन के लिए लिपाई करना)। य'ज़मन (जजमान) का स्नान करके आना, लव् दिज -सर तथा मुख को पानी की छींटें देना। मरेद अर्थात चूना, तेल, बादाम, श्रीफल तथा अखरोट लाना। त्र्शाकल डून (जिस अखरोट के अंदर छः गिरियां हों) या तीन अखरोट रखना। मरेद से मंडल बनाने का काम गुरुजी स्वयं करते है। यज़मन (जजमान) मंडल के पास बैठते हैं। कलश की पूजा अर्घ्य तथा फूलों से होती है और महिलाएं वर्ष के भिन्न महीनों में खिलने वाले पुष्पों का नाम, गुण बताते हुए मेखलि महाराज़् को 'स्वरिव तप् रे'षव सदाशिव' अर्थात तपस्वी कहकर सदाशिव का स्मरण कराया जाता है। यज़मन बाय (जजमान की भार्या) स्नान करती है भर्ता का ध्यान करती है, तरंग् (head gear) या नई साडी पहनकर **टे'क्य पूच़** लगाती है तथा सब इसको **'छायख छ्युय'** कहकर बधाई देते हैं। इसके बाद साफ थाली में दिवत्गूल्य (गोलाकार पिंड) समेटना, पहला ईशान कोण से से आरंभ करना -(पूर्व-उतर के बीच का कोण-ईशानकोण है। फिर उतर पश्चिम-वायु। फिर दक्षिण पश्चिम-नैऋत।-और पूर्व दक्षिण -आग्नेय) तथा पानी को काट कर इस में इन का विसर्जन करते हैं।

९.**(दुर्यबत् या सहायता)**:-यज़मन बाय के माता पिता लडकी के लिए अर्थ तथा छत्रहार या चावल, पुशाक आदि के रूप में सहायता लेकर आते हैं। मेखल हो या विवाह मायके वाले सामूहिक तौर पर यथा संभव पदार्थ तथा सामान साथ ले आते हैं। दरवाज़े पर पहुंच कर उनकी तथा साथ में लाए गए वस्तुओं की आलथ (चावल तथा पानी की थाली)या आर्ती उतारी जाती है। आलथ के थाल में मैके वालों द्वारा कुछ रुपया डाला जाता है। इसके बाद ही वे लडकी के घर में प्रवेश करते हैं। जहां इन की विशेष खातिरदारी होती है।

१०अभिषेक-(दूब या कुशा से अभिमंत्रित पानी छिडक कर ऊंची पदवी पर आसीन होने के लिए पवित्र बनाना)। कन्यश्रान (स्नान) नई चौकी के ऊपर मरेद (चूना) से लकीरें खेंचकर 'महाराज़' या 'महारेन्य' को बिठाया जाता है तथा ऊपर साडी रखी जाती है। इस साडी को खडी चार कन्याएं चार कोणों से पकडती हैं। गुरुजी मंत्र पढते हैं और गो'ड (स्नान) देता है। साडी के ऊपर सर के सीध में दूध मिला पानी डालते हैं। दूध दही तथा अन्य अवशधि मिले पानी से शरीर को मला जाता है। इसके बाद कपडे पहनाये जाते हैं। महाराज़ का चेहरा अंगोछे से ढका जाता है और मामा जी उसे गोद में उठाकर अग्न कुण्ड के पास ले जाते हैं और अग्न के सामने चेहरे से पर्दा हटाया जाकर अग्नि तथा दिवतमून (देवयों) का दर्शन कराया जाता है। तिलक लगाकर पिता के बायें ओर और गुरुजी के दाहिने ओर बिठाया जाता है। इसके बाद चावल, रुपया, नमक, वरी (मसाले से बनी टिक्की), अखरोट या बादाम थाली में रखकर सर ढांपे कन्या के हाथ में देकर तिलक लगाते समय यज़मन के दाएं कंधे को तीन बार इस थाली का स्पर्श कराया जाता है इस को **ज़ंगि युन** कहते हैं। फिर कलाई पर नारीवन (मोली) बांधा जाता है। फिर श्रीफल लेकर आज़िदर्शन(आहुति देने वासते बर्तन में रखे घी में अपना दर्शन करना) किया जाता है। फिर दाएं बाजू में जनेऊ रखकर तर्पण किया जाता है।

११. दिवतृगूल्य वालुन:- दिवगोन वाले दिन के सायंकाल को महिलाएं दिवतगूल्य(भात के गोले) लिए हुए यज़मनबाय (जजमान की भार्या) के गिर्द रह कर गाती हैं। एक महिला दीपक लिए आगे गीत गाती चलती है और पानी के पास जाती हैं। पानी को काटकर एक एक करके दिवतगूल्य पानी में डाले जाते हैं। फिर महिलाएं गाती हुई घर लौट आती कहती हैं:------**वसदीव राज़ुनि दा'न्तुवि डबे, अ'स्य वा'त्य पनने लबे तल।**

१२. हुव्दूशीश- इसके बाद नैवेद्य या हुव्दूशीश (हुतशेष) बांटा जाता है जिसको खाकर श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं। **यज्ञशिष्टाशिनः संतोमुच्यन्तेसर्वकिल्बिशैः** गीता३:१३।

१३.अग्न् क्वंडस सों'दरावुन- मेखला के लिए अग्न कुंड में आग सुलगाई जाती है। जिस में आहुतियां डाली जाती हैं।

१४.ना'र्यवन तारून्य मेखला के समय कानों में मौली पहनना-specific symbol of identification यज़मनबाय (जजमान की भार्या) स्नान करके आती है। पति पत्नि हवनकुण्ड के पास बैठ जाते हैं। देवता समान पति नारीवन समधि अर्थात तूत के दांतन के साथ लपेट कर पत्नि की गुथ में पिरो लेता है, (अंत में देखें सीमांतोनयन)। अपने गोत्र के नज़दीकी संबंधियों जैसे लडके की चाचियां तथा उनकी बहुएं आदि सभी को नारीवन इसी प्रकार से पिरोए जाते हैं। यह बहुत ही शुभ माना जाता है। इनमें से विधवा महिला को गुरुजी पिरोने में सहायता करते हैं। इसके बाद टे'क्य पूच़ पर सिंदूर से पत्ते तथा विशेष मंडल या चक्र लिखा जाता है। अरतलि वथूर कढाये जाते हैं। आजकल इसके स्थान पर विशेष कागज़ से बने टे'क्य ताल से काम चलाया जाता है। इसको सर पर साडी के साथ लगाना समस्त यज़मन बायों का दायित्व है। उसके बाद लडके के गर्भादान से लेकर त्रुय 'तेल अर्थात दंदगूज, स्वंदर,' चूडाकरन या ज़रूकासय, बोधि रखना, लोंगी, उस्तरा, ज़ंग (रुपया) नाई को देना तथा काहनेथर् (जातकर्म) आदि का होना गिनाकर 'ह्यज़े वनवुन' में गाया जाता है। लडके का स्नान करना तथा आ'ट्यपन (मेखला) श्रानपट (स्नानपट) बांधना, मृगाज़ल (मृगछाला) धारण करना, बोधि को ब्रह्मगंड लगाना, तिलक लगाना, नारीवन (मौली) बांधना, पैर मुख को पानी की छींटें देना, सोने की अंगूठी से पंच गव्य (गौ या बछडे का ताज़ा गोबर, मूत्र, घी, दूध, मिश्री को मिलाकर बनता है।) का आचमन कराना, वेद पाठी ब्रह्मणों को ब्रहस्पत गुरु की पदवी प्रधान करना, तिलक लगाकर फूल तथा अर्घ चढाना, 'ह्यज़े वनवुन' में बालक रूपी श्रीकृष्णजी को जनेऊ धारण कराने का समय ब्रह्मणों को स्मरण कराना, धागे की जीवन यात्रा, जनेऊ के लिए जंग लाना। लाखों जन्मो के बाद अब ब्रह्मण जन्म में पदार्पण होना, भिक्षा थाली, अभीद (मैं और आप अभेद हैं) लेना, श्रीफल से आज़ि दर्शुन करना तथा अग्नव'त्री से होम करना, संध्योपासन तथा 'श्रान व्यद' (स्नान विधि) सिखाना, लडके के कान में मंत्र बताना, देवकी माता के पुत्र रूपी मेखलि महाराज़ द्वारा होम करना, पोशि क्षुर (टोकरी) भरना तथा व्वमन हो'र (चमचे)को मेवा आदि से भर कर आहुतियां देना, २४ पक्षाक तथा ७२ शांतयों का पूर्ण हो जाना, यज्ञ शाला में त्रिकारण तथा देवताओं का

आवाहन करके उनका सानिध्य प्राप्त करने के विषय में ह्यञज़े 'वनवुन' में गाया जाता है।

आवाहन कोरुख ब्रह्म लूकस तय, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ह्यथ आव।
सतु्रे'ष ये'ति बीठ्य वीद परनस तय, दिवता आयि पोशिदसतय ह्यथ।
अ'सि दीवी छि सामवीद परान, तोह्य ब्राह्मण कोन् शा'न्च् परान ।।

कारणों आदि का उपस्थित रहकर आहुति लेते हुए आर्शीवाद देना, आदि क्रियाएं श्रंखला में वनवुन में कही जाती हैं। इसके बाद वारि दान के बारे में 'ह्यंज़े वनवुन' गाया जाता है।

१५. **वारिदान**(३६ गग वाला चूल्हा) का प्रूग का कार्य करने का अधिकार पूर्णरूपेण लडके की बुआजी का होता है। जैसे कृष्णजी के मेखला या जणेव संस्कार के समय सुभद्रा का स्थान है। स्वर्ग से आई हुई कामधेनु ३६ प्रकार के व्यञजनों के लिए दूध आदि प्रगट करती है इसी दूध तथा छत्रहार (चावल का एक प्रकार) से ३६ छोटी वारियों (मिट्टी के छोटे बर्तनों) में ३६ प्रकार के व्यञजन पका कर इसी से होम किया जाता है। हुतशेष (बची हुई आहुति) को प्रसाद के रूप में बांटा जाता है।

सुभद्रायि रो'नयो खजूर लशे, होतय शीशे करीज़ेस।

नोटः-(३६ गग या सुराख शैवमत के ३६ तत्त्वों का प्रतीक भी हो सकते हैं।)

१६.मंडुल- लिपाई करके निर्धारित समय पर मंडल बनाने पर वनवुन-

तोहि छ्व् चंद्गरि अ'स्य क्या बोज़व, मंडलस क'च् गरि रोज़व'।
बोज़ मालि ब्रह्मणो रोज़ कन दा'रिथ, मंडुल त्रा'विज़े'स व्यस्ता'रिथ।
वैकुंठ अ'न्दरय मंडुल छु खसान, ब्रह्मा छु वसान वुछ'ने।

इस मंडल में सौलह घर (कला) या खाने होते हैं, जिसको गुरु द्वारा चूने, मेहंदी, सिंदूर, तथा केसर से भरा जाता है। यहां पर शिवभक्ति पद(शिवभ्वकच्) गाये जाते हैं। जैसेः-

राम लक्षमण वनवा'सी गय। गछ़तय रामजू बोज़िना म्योन। बायो खो'तखो दंडकवन। त'स्य नाराणस गछ़ शरणे। चे़ परमधामय भविनय जय ,आदि।

१७.पगडी बांधनाः (दस्तारस वनवुन), चाचा जी मेखलि मजाराज़ तथा विवाह के समय महाराज़ की पगडी बांधता है।

चीर् क'म्य गो'न्डयो अगस्त म्यत्री, प्यत्री गो'न्डयो खिरकि दस्तार।

फिर अथिफो'ल, सा'द् फुटजि (अनाज की पोटली) कंधे पर रखकर, कलश् लव (पवित्र जल छिडकना) लेना तथा होम का समापन्न, कल्श् डून (अखरोट) का प्रसाद लेना, ब्रह्मणों को दिल खोल कर दक्षणा देना, दायें बाजू में जनेऊ तथा बायें हाथ में जप माला, पगडी बांध कर व्यूग पर खडा रहकर यारबल या नदी पर मामाजी की गोद में गुरुजी को साथ लेकर जाना, वहां संध्योपासना एवं स्नान विधि सिखना; न कि मेखलि महाराज़ को मंदिर लेजाकर मूर्तिके दर्शन कराके पूजा करवाना, (जो केवल दिखावा ही है)। कितना ही अच्छा होता यदि गुरुजी घर पर नलके पर ही लडके को संध्योपासना तथा स्नान विधि सिखाते।

त्रेह वोम करिथ त्रे ओम वाख छुय-रुद्र वोम भद्र वोम श्रानय व्यद।।

मेखला जनेऊ का अर्थ योनि तथा मेखला का अर्थ आ'्टिपन है। मेखला संस्कार में 'ह्यजज़े वनवुन' का विर्वण यहां समाप्त है।

१८. विवाह विधान, लडके, लडकी का- (शिवजी तथा पार्वतीजी के प्रतीक) पहले समय में विवाह संस्कार के लिए लडकी के लिए वर कुल गुरु ही तय करते थे। समय बदल जाने के साथ विधि भी बदल गई है। किंतु कश्मीरी पंडितों में प्रचलित विवाह की शास्त्रीय पद्धति (code of conduct) में कोई परिवर्तन नहीं आया है। विवाह की विधि यह है:-

१. वर ढूंढना:- कुछ समय पहले किसी कारणवश लडकी का विवाह छोटी आयु में ही संपन्न होता था। अर्थात छः वर्ष के बाद लडकी का वर ढूंढकर रखा जाता था किंतु अब ऐसा नहीं है। लडकी आयु में लडके से कुछ कम होनी चाहिए।

२ बराबर वाले से विवाह करना अधिक शुभ माना जाता है।

३. लड़का या लड़की दोनों कुलीन, धर्मात्मा होने चाहिए। इस बारे में सावधान रहने की अत्यंत आवश्यकता है। न्यूनतम छः पीढी तक सगोत्री ब्राह्मण जाति का आपस में रिशता नहीं होता ताकि जैविक रोग न हों। सगोत्री होने पर कन्या लग्न दूसरे गोत्र का संपन्न करता है।

४. लडके की जन्म कुण्डली लडकी के घर वालों को दी जाती है तथा दोनों की कुण्डली का मिलान कराया जाता है, यदि मिलान ठीक है तो लडके वालों को हां कही जाती है। फिर गंगाजलि पर हाथ रखकर रिशता पक्का होने की शपथ ली जाती है। आपस में फूलों का

आदान प्रदान होता है (गंडुन कोई संस्कार नहीं है)। उसके पश्चात शुभ महूर्त निर्धारित करके निश्चित समय पर दोनों का लगन होता है। जिसका कठोरता से पालन किया जाता है। **कन्या दान का समय ही लग्न का निश्चित समय हाता है।** कश्मीरी पंडितों में लडकी वालों का पलडा भारी रहता है। लडकी वालों पर पूरा विश्वास किया जाता है। क्योंकि समझा यह जाता है कि लडकी के पूरे जीवन का प्रश्न होने के नाते तथा दूसरे घर की भावी मालकिन बनने के नाते उनकी ओर से कोई धोखा नहीं हो सकता है। इस तरीके को जातक मिलान (ज़ातुक मिलनावुन) कहते हैं।

५. विवाह के बाद अच्छी महूरत में लडकी तथा लडके की जन्म पत्री लडके वालों के घर भेज दी जाती है। यदि जातक मिलाप अशुद्ध हो तो दम्पति का जीवन सुखमय नहीं होता है। इस मिलान को एक सिद्ध ज्योतिषी ही संपन्न कर सकता है। यह रिशता पूर्व जन्म का ही माना जाता है। इस लिए इस लोक में इस संबंध का पूर्ण रूपेण निर्वाह होता है। इसी लिए हमारे एक बार विवाह होने पर टूटता नहीं है। फलतः हिंदुओं, विशेष कर कश्मीरी ब्राह्मणों में 'तलाक' नाम का शब्द अथवा ऐसी प्रक्रिया मौजूद नहीं है। विवाह की तिथि निश्चित होकर विवाह की तैयारी की जाती है। दिवगोन तक मेखला तथा विवाह का कार्यक्रम लगभग एक जैसा ही होता है।

कश्मीरी पंडित लड़के या लड़की का विवाह शिवजी तथा पार्वतीजी का जैसा रूप होकर संबंध जोडना है ताकि ब्राह्मण जन्म पाकर जीवन को पूर्णतः शुद्ध बनाया जाए तथा शुभ कर्मो द्वारा मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना भी की जा सके। विवाह से पहले लडके या लडकी को सुसराल जाना हानि कारक होता है ऐसी मान्यता है। क्योंकि न पार्वती शिवजी को देखने गई थीं न ही शिवजी पार्वती माता को ही देखने गए थे। जब शिव पार्वती का मिलन ही हमारे विवाह का प्रतीक है तो उसी परिपाटि में प्रदूषण क्यों होने देंगें। (पति पत्नि के पूर्व जन्म के निर्धारित संस्कारों ने ही दोनों को मिला दिया होता है)। इसी कारण से लडके तथा लडकी दोनों को देवगोण दिया जाता है। जो कि पूरा हवन ही होता है। इस से अभिषेक द्वारा वे दोनों शिव तथा पार्वती की पद्दवी प्राप्त करते हैं। **लडका केसरी पगडी पहन कर शिवजी**

का ही रूप लेकर पार्वती को वरण करने निशिचित समय पर जाता है। इस कारण शिव रूप लडके को छत्र, चामर, शंख आदि साथ देकर व्यूग पर ले जाया जाता है जो श्रीचक्र में शोडशदल कमल का ही प्रतीक होता है। इसी श्री चक्र के मध्य बिंदु के आसपास में दोनो वर वधू को ठहरा कर उनकी थाली में पानी तथा कुछ चावल डालकर आरती उतारी जाती है तथा मिष्टांग रूपी नैवेद्य दोनों को खिलाकर उनका शिष्टाचार तथा आदर सत्कार किया जाता है। (ऐसा देखा गया है कि व्यूग पर खडे इस जोडे से यदि कोई वर मांगा जाए तो पूर्ण होने में कोई संदेह नहीं है। शर्त यह है कि वर वधू भी अपने को शिव पार्वती के स्तर तक का उस समय चिंतन कर रहें हों)। स्टेज पर वरमाला पहनाने की पृथा क्षत्रियों की है न कि कश्मीरी ब्राह्मणों की। जूते चुराने, रिबन काट कर विवाह मंडप में प्रवेश करने आदि निषेद तथा घातक नखरे हमारे संस्कार में विद्यमान नहीं है। हर समाज की अपनी रीति निधारित है। जैसे रिंग सेरमोनी अंग्रज़ों की, निकाह मुसलमानों की, आदि। दूसरे की रीति अपनाने से समाज बिगडता है।

श्रेयां स्वधर्मो विगुणःपरधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। गीताजी ३. ३५ अर्थात अपना धर्म श्रेष्ठ होता है दूसरे का धर्म भयावह होता है। अपने ही धर्म में मरना बेहतर है।

लडके का देवगुन मेखलि महाराज की तरह ही होता है और कोरि दिवगोण भिन्न प्रकार का होता है।

१६.दिवगोन क्या है- लडके तथा कन्या का शुद्धिकरण (खारुन तेल, मरेद तय ड्रूनी, ज़न्मूच यूनी च़'जीये) करके लडके को शिव तथा लडकी को सती पार्वती की उपाधि देकर अभिषेक करके लडकी को कन्यादान के लिए तैयार किया जाना कोरि दिवगोन का अभिप्राय होता है।

अब **कोरि दिवगोन** की बात करते हैं। इस में 'घरनावय' के साथ मेहंदी रात होती है। मेहंदी रात को लडकी के बाल खोलकर कलपुश (पशमीना तथा ज़रबाफ की बनी विशेष टोपी) पहनाया जाता है तथा मेहंदी लगाई जाती है, फिर दिवगोण के लिए लिपाई की जाती है।

दिवगोन में कार्यक्रम मेखल तथा विवाह दोनों का लगभग एक जैसा ही होता है। श्रीफल से आज़िदर्शुन करना तथा सज वाजि (सोने की अंगूठी) के साथ पंच गव्य से आचमन करना, तक दिवगोन लडके जैसा ही है।

अग्नहोत्र के बाद दिवगोन, में लडकी को कन्या संस्कार के लिए पीडी (भद्र पीठ) पर बिठाया जाता है। नारीवन से बंधा हुआ डेजहो'र६ (एक आभूषण एवं मंगलसूत्र) तथा अन्य गहने दान करके पहनाये जाते है। हाथ में छुरी (क्षुरिका) देकर ज़ोर ज़ोर से थाल बजाया जाता है ताकि कन्या अपने आभूषणों की स्वयं रक्षा कर सके तथा असुरों पर अंधकार छा जाए। दिवगुण के लिए हवन किया जाता है तथा उस स्थान पर देवताओं का आगमन होता है इसलिए देवताओं के लिए मंगलाचरण वनवुन गाया जाता है। समधि अर्थात दांतुन से तूत की लकडी के दांतुन से लडकी के बालों में चीर (सुम) निकाला जाता है तथा बालों को दो भागों (चोटियों) में बांट कर नारीवन से बांध दिया जाता है। ताकि देव कर्म के समय चोटी को दाएं कंधे (सवीन) पर सामने की ओर लटकाया जा सके तथा (अपसवीन) पर पितरों का तर्पन करते समय लठुर बाऐं कंधे पर सामने की ओर रखा जा सके और (कंठे) में दोनों लठरों को सामने की ओर रखा जा सके।

ओम ब्रह्मादिक दिवता आयि सोन यो'तये, नारायण ह्योतये आशेनय।

ब्रह्मा रक्तवर्ण् ज़पू मालि व्योतये, चो'तुरभुज़ नारायण शंख चक्र ह्यथ।
ईश्वर बृशभस खसिथ छु येतिये। नारायण ह्योतये आशेनय।

इसके बाद पिता कन्यादान का संकल्प करता है। लडकी को अपने धर्म पर अडिग रहने के लिए प्रेरणा दी जाती है।

धर्ममूच बडा आ'शिनय र्चये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।

कन्या को दक्षपुत्री, माता पार्वती का दर्जा दिया जाता है।

दछ प्रजापतनि तस ब्रुब्रारे, हारे छु कन्या संस्कार।
ग्वड् आव परमीश्वर तस ब्रुब्रारे, शूभान त्रि नेत्र भस्मी अंग।
ड्यकस प्यठ चंद्रम तस वुम ब्रारे। हारे छु कन्या संस्कार।

कन्या भद्रपीठ पर बैठकर मंत्रों को ध्यान से सुनती है। हाथ में अर्घ लेती है। माता पिता का अभिषेक जल देना फिर सद्रूदर होम करना, निर्नूदन करना तथा संस्कारों का स्मरण कराना, पूरा गहना पहनाना, फिर होम करना, और कन्या के सुसराल वालों को दक्षणा भेजना और दुल्हे के लिए सुख की कामना के वचन कहना, थाल में प्रेप्युन लाना और कलश का फूल हाथ में देना, वहां पर उपस्थित देवी देवताओं को नमस्कार करके प्रदिक्षण करके आर्शीवाद मांगना, कन्यादान प्रारंभ करना, कन्यादान संपन्न होना, निर्मल बुद्धि के साथ स्वधर्म पर स्थिर रहने के लिए अनुरोधात्मक आशीर्वाद देना ह्वेंज़े में गाया जाता है।

अब कन्या पार्वती जैसी शुद्ध होती है तथा अब शिवजी वरण करने आएंगे। दोनों को वनवुन वचुन (हारे छु कन्या संस्कार) में श्रीकृष्णजी तथा रुक्मणि तथा सीताराम आदि के समांतर रखा जाता है। अग्न के लिए प्रप्युन तैयार करके पास लाया जाता है। प्यतरन (पितरों को) अन्न दिया जाता है जो हा'बिल (घास, द्रमुन) पर रखा जाता है। सनिवारियों में अन्नकन्न (मंत्रित भात) डालना, अग्न को हवा देकर जलाकर उस में आहुति (अथ्य फो'ल) डालना। चो़'ट (देवी भगवती के लिए अन्न का भाग) रखना, पवित्र कलशिलव् देना, तथा बादाम या अखरोट (कलशिडून) लेना और अश्वमेध यज्ञ रूपी होम से क्षमा याचना के रूप में फूल अर्पण करना (क्षमा पोश), इसके पश्चात ब्रह्मणों को यथा संभव दक्षणा देकर कन्या को आही तथा आशीर्वाद दिया जाता है। दिवत्गूल्य का विसर्जन करके निवेद्य लेना जो पहले बताया जा चुका है।

२०.**(वा'न्ख पाग्ज)**:-चोटी बनाना। बरात आने से पहले ही दुल्हन को हर प्रकार से सजा कर रखा जाता है। सबसे पहले कंगी की जाती है। चोटी में तिल्ला वाली चोटी (वा'न्ख) बांधी जाती है इसके बाद तरंग् (सर पर बांधने का एक विशेष आभूषण) बांधा जाता है इसमें कलपुश, ज़ूज(वयसक होने का चिन्ह, कम आयु की महारानी को ज़ूज नहीं पहनाते थे), तरंग् लाठ जो तीन इंच चौडा होता है लंबा इतना कि सरके गिर्द तीन बार लपेटा जासके, ज़री लाट या ज़ितनि लाट, बं'ध्यकलू, सोने के सिरे वाली दो सूइयां तथा पूछ़, डूरिदार फिरन, पोछ़, शांद् क'र, कुर्तज, ज़रका'र्य न'र्यवार जूर्य, द'ज या रुमाल।(अब केवल विवाह के समय

तरंग तथा ज़ूज ही पहना जाता है पूच़ फिरन आदि अब समाप्त हो चुके हैं केवल साडी का ही रिवाज है, कुछ नई वस्तुएं भी सम्मिलित की गई हैं) अब पिता द्वारा दिए गए ज़ेवर, पार्वती के रूप में कन्या पहनती है जिस में मुख्यत **ड्यजहुर** (दहेज के निमित आभूषणें में सब से बडा सोने का मूल्यवान आभूषण) जो मंगल सुत्र ही है, गले, बाहों तथा कानों के आभूषण आदि शामिल हैं। इस प्रकार उसे कन्यादान के लिए तैयार किया जाता है। स्मरण रहे कि मनुष्य दान में नहीं दिया जा सकता है इसी कारण वास्त्व में ज़ेवर को ही दान किया जाता है जो अत्यंत मूल्यवान होता है और पहनने वाली अमूल्य कन्या भी साथ में दान हो जाती है। कन्या दान को परम पुण्य माना गया है। इसी कारण़ लडकी के घर जाकर कुछ भी आहार करना पाप माना गया है। (गऱ् अचुन का किसी भी संस्कार से कोई संबंध नहीं है)। (वास्तव में लडकी मातापिता के घर में दुलहे की धरोहर ही होती है इस कारण यही विधान है कि १-लडकी की पढाई का खर्चा, जिसको 'लगन चीर्य' कहते हैं।

२- विवाह के समय दुल्हे वालों के ही वस्त्र पहना कर व्यूग पर उतारना, तथा

३- बारात को खिलाने के खर्च का कुछ भाग लडके वालों को वहन करना पडता है,

४-वनवुन गाने वालों को धन राशि प्रदान करना आदि)। कन्या को सुसराल की धरोहर मानकर ही अच्छी शिक्षा तथा उच्च संस्कार दिए जाते हैं।

'त'म्य कोर हथ अश्वमीध, ये'म्य को'र सत् वुहुर कन्या दान'।

युस करि माग् श्रान न्यथ पूज़ि साल्यग्राम, सुय करि सत वुहुर कन्या दान।

२१. लगन संस्कार-अब लडकी वाले बरात लेकर दुल्हे के आने की प्रतीक्षा करते हैं। दुल्हा (महाराज़) का आना- इधर से देवगोन युक्त शिववत दुल्हा केसरी पगडी बांधकर बरातियों के साथ पधारते हैं उसके साथ में एक छत्र धारी महाराज़ का साया करते हुए तथा दूसरा साथी शंख बजाते तथा कुल गुरु को साथ लेकर कन्या के घर पहुंचते हैं। होम का सामान दुल्हा वाले ही लाते हैं। दुल्हन के पहनने के लिए ओढनी दुल्हा वाले देते हैं। **'छ'लिथ छ'व् त् वलिथ नियवून'**। लग्न का समय किसी भी स्थिति में टलना नहीं चाहिए वर्ण महूर्त देखना या जातक मिलाप का कोई लाभ नहीं है। 'ह्यंज़े वनवुन' में उस समय बल

देकर गाया जाता है-

त्वहि छ'व् चंद् गरि अ'स्य क्या बोज़व, ल'गनस क'च ग़रि रोज़'व ।

स्वर् रूज़िज़ि योनिच ग'र युथन् फेरे, ला'गिव ट्यो'क, पोश, अर्घ शेरे।

दुल्हा पहुंचने पर गाते हैं-

पूरे कने खो'तखो सिर्यो, पछिम कुनुय ज़ूचय त्राव। तथा

पूरे कने न'ब्य को'र व्वदय, दूरे स्वन् सुंद बोदय आव-तथा

सा'न्य चाव आंगन स्वन् सुंज़ वतय, सो'निस मो'कल्योव अतय गत।

मंगलाचरण के बाद कुछ विनोद के पद भी गाये जाते हैं। जैसे-शंख न बजाने पर।

य'ज़मन सुंदुय नाबद फो'लये, असि बूज़ शेंक् वोल को'लये द्राव।

ब्राह्मण के आने तथा महाराज़ के शिक्षित होने की जांच के लिए:-

ओर् आव महाराज चाव बजि बरने, पाठ पूथ्य वा'ल्यतोस परने किच।

दुल्हे वाले इसका उत्तर महिलाओं के मुखिया को तुरंत भेज देते थे। दुल्हा रूपी शिवजी पहुंच जाते हैं, शंखनाद से वातावर्ण गूंजता है और दुल्हन के मन में भय, लज्जा, उल्हास मिश्रित समावेश हो जाता है। आंखें झुक जाती हैं शरीर में रोमांच उत्पन्न होता है।

२२.व्यूग₇ - दुल्हे को आदर से व्यूग पर लाया जाता है। साथ में छत्र धारी तथा शंख बजाने वाला रहता है। शंख नाद होता है। दुल्हन के नए घर वालों अर्थात सुसराल वालों से प्राप्त की हुई ओढनी ओढ कर ही दुल्हन को व्यूग पर लाया जाता है। दुलहन दुल्हे के बाएं ओर तनिक झुकी हुई (शिवजी के आने पर आभार प्रगट करती पार्वती), पूरी लज्जा एवं धर्म के साथ व्यूग पर खडी रहती है। परमासन के समय भी व्यूग लिखा जाता है।

२३. आलथ-Reception साफ थाली में पानी चावल डालकर दुल्हा तथा दुल्हन रूपी शिव शक्ति के सिरों के ऊपर से तीन बार ही घुमाई जाती है इस थाली में दुल्हे का पिता वरवधू की ओर से एक मोहर या रुपया डालता है। इसके बाद आटे से बने सात घी से प्रज्वलित दीपों (रत्नूचा'न्गिज) से दोनों की आर्ती उतारी जाती है। इस्बंद (सुगंध युक्त बीज) को दोनों के कंधों को छुआकर सज्जी हुई कांगडी (अग्नि रखने का बर्तन) में सुलगते हुए

कोयलों में डालकर नज़र उतारी जाती है। यह काम घर की प्रतिष्ठित महिला या दुल्हन की माता आदि करती हैं। इसके बाद दोनों को व्यूग पर एक ही नैवेद्य (नाबद) का टुकडा अर्पण करके तीन बार बारी बारी चखाया जाता है। पहले महाराज़ को फिर वही जूठा महारेञ को चखाया जाता है और फिर महाराज़ को(oral immunization) ही, यह नैवेद्य सदा नाबद (has preservative property) ही होता है, न कि कोई बासी पकी चीज़ या उबाला गया खाद्य पदार्थ जैसे बर्फी लड्डू, शर्बत आदि जो नितांत निषेद है। आशय है दोनों को एक करने की पहली क्रिया यहां से ही आरंभ हो जाती है।

२४. द्वार पूजा$_{८}$ (permission to enter) व्यूग पर शिवपार्वती का धूप दीप कार्यक्रम होने के बाद दोनों लडकी के पिता के घर के द्वार पर पहुंचते हैं। महाराज द्वारा सुसराल के द्वार की पूजा होती है।

वैकुंठ मंजू द्राव चंदन दारय, वारय क'रिज़्यस दारय पूज़।

विधिपूर्वक द्वारपूजा करके पोडियां चढते हुए लगन मंडप में जाते हैं-

हेरि छय स्यंदूर तय हेर दा'न्ता'वूय, हेरि छु खसान दीवादि दीव।।
धर्म् हेरि खो'तखो मर्म् दिथ छ़ाये, छ़ांडान कर्म लीखाये आख।
ओर् आयि दशरथ राज़ून्य पंडित, ज़नक राज़ुनि छु मंडुल वाहरा'विथ।।
वशिष्ठ महाराज वीद परान द्रोये, ब्रह्मा, वे'ष्ण तू ईश्वर द्राव।।
दीवी क'रिनय पोशे फ'तिये, सतिये वोतये वेवाह काल।।

इस प्रकार शिव पार्वती जी की महिमा गाई जाती है।

२५. लगन मंडप तथा कन्यादान- legalization of marriage and solmn pledge before sacred fire. कन्या के माता पिता तथा निकटतम संबंधी लगन होने तक व्रत रखते हैं। लगन मंडप में जाकर लगन आरंभ होता है। कन्या अपने पिता के गोद में बैठी होती है। सामने बैठे महाराज़ पिता से कन्या का दान मांगता है कन्या का पिता 'अस्तु' कहकर कन्या दान करता है। **कन्यादान का समय ही लग्न का निश्चित समय होता है।** जिस को टाला नहीं जा सकता है। ध्यान रहे कि कन्या दान समय पर न हो महूर्त

देखने का कोई अर्थ नहीं होता है। महाराज़ कन्या के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर पाणि ग्रहण करता है। इसी को अथवास कहा जाता है। कि अब से सारी ज़िंदगी साथ रहेगा। अथवास के समय दोनों को लगन मंढप में अलग से बिठाकर पहली बार एक दूसरे का परिचय पूछते हैं। आहुति देकर मामाजी को माम नाबद देना होता है। इधर से बराती खाना खाने को बैठ जाते हैं। उनकी पूरी खातिर की जाती है किंतु हर मामले में लडकी वालों का ही वर्चस्व या हाथ ऊपर होता है। आज इसका उलट हो रहा है। **'ह्वंज़े वनवुन'** में पकवानों का सरल बखान होता है। कि-

हाखा दाला नदूर्य मुशकाला, यज़मन सुंद साला गनीमथ।।

कश्मीर के लोगों की दयनीय दशा का बखान भी **'ह्वंज़े वनवुन'** में किया गया है। देखें- (तात्कालिक तथा इह कालिक सामाजिक दशा)

एक ज़माने में संपन्न लोग अब क्या कहते हैं.

त्यलि कोन् आयोख यिमन कोचन ये'लि असि म्वखत् ओस पूचि़ लोंचन
त्यलि कोन् आयोख यथ बाज़ारस, ये'लि असि स्वन ओस दिव द्वारस।

हमारी बाद की दुर्दशा को परखें-

त्यलि किस वुछ्ज़्य'स न् दुम दवालस, अ'ज़िकिस वुछ्ज़्यस हालस कुन।

अथवा

वय मुच़ को'रथय, कंठ माल ग'रथय, को'रथय संच़्यथ सामानय।

महाराज़ (दुल्हा) शिवजी का ही रूप है।

कूरी र'छमख़ द्वध् तय दानय, हर भगवान हय प्रारान छुय।

लडकी पार्वती का ही रूप है।

ल'गनस ख'च़खय मा'ज पार्वतिये, अगनस कुन रोज़ अथ् दा'रिथ।

२६.पारम डूञ [9] promise for 9-11 children (do or perish) —पारम डूञ र'ूटि माजि पार्वतिये, कारण बूज्य बूज्य हलम दार।

२६.क मनन माल या वुसुर (मंगल माला)wishing prosperity for both फुफी

महाराज़ के पगडी के गिर्द मनन माल बांधती है। मंगल माल्या दोनों के मंगल कामना हेतु बांधी जाती है। यही मंगल माल परमासन के समय व्यूग पर आपस में बदल दी जाती है।

२७.लायि बोय गंग्‌ व्यस10 witness to piousness of bride. कन्या का भाई तथा बहन, दुल्हन की शुद्धता के साक्ष्य के रूप में लाज या लायि फेंकते हैं।

आकाश ब्रा'री कूंश्य छुन खोरन,प'द्य त्राव हे'हर्‌ सं्ज़न मो'हरन प्यठ।।

२८.सप्त पदी— seven promises by bride and groom. सुसर के सात मोहरों या रुपयों पर से चलती हुई दुल्हन सात शर्तें पालन करने का शपथ लेती हुई सुसराल के गोत्र में शामिल हो जाती है और सुसर बहू को गृहण करता है। मैके का नाम बदल कर सुसर उसका नया नाम करण करता है।

बब्‌ सुन्द नाव छुय जाना ज़िगरय, हे'हरन नाव क्याह को'रूये।

२६.नीलय वटस११ खोर चो़नूथय, ग्वर ज़ोनूथय परमीश्वर। (Firm footing for future life.)

३०.पोशि पूज़ा-floral tribute to Shiv Parvati अब पूरी विधि के साथ वरवधू रूप भगवान शिवजी तथा पार्वती माता की पूजा होती है जो केवल माता पिता तथा व्रत रखने वालों का ही अधिकार होता है। एक ही शाल को दोनों ओर दो लडकियों द्वारा पकडे रखकर दोनों के सरों पर शाल के ऊपर फूलों से पूजा की जाती है ताकि फूल चढाकर पैरों तले न रोंधें जाएं। तत्पश्चात पूजा के उन फूलों को बहते पानी में बहाया जाता है। पोशपूज़ा के समय **'व्यंज़े वनवुन'** में लडकी के जन्म लेने से आज तक की कहानी गायी जाती है।

ओम कर श्रुक्य पर श्री गणेशाये, पोशि पूजाये वेल्‌ हय वोत।
म्वखत्‌ कनि तारख छिस तापदानस छमय ईशानस पोशिपूज़ा।।

३१.दय बत्‌ या दव्य भात-extreme mutual acceptance and tolarence by taking purified food in the same plate अब वरवधू के लिए श्रूच़ अन्न लाकर एक ही थाली में खिलाया जाता है। जूते पहन कर गंदे बर्तनों में बनाया हुआ अन्न शिवपार्वती को लगन के समय खिलाना शिष्टाचार के विरुद्ध है। इस से अनुग्रह के स्थान पर कोप ही

मिल सकता है,अच्छा है कि लगनमंडप में ही कुछ साधारण खाना बनाया जाए।

३२.संज़वो'तुर या श्रंगार पेटी$_{purse}$ महारे'न्य सखरावनस-दुल्हन के लिए।

दियिव मालि संज़्य वो'तुर, ड्यकस ट्यो'क लागोस, अद् वसि रामस निशि सीता। श्रिंगार के लिए सुसराल वालों से संज़वो'तुर लेकर दुल्हन को बिदाई के लिए तैयार किया जाता है उसके बाद दुल्हन को खिडकी के रास्ते से बाहर निकाला जाता है। लडके के मामा या अन्य जैसे सुसर आदि बहू को गोद में उठाकर गाडी में रख लेते हैं तथा विदा होते हैं। दुल्हन हाथमें झोली लिये चलती है। झोली में मुथ्य मो'र (सास के लिए पहली बार मुंह दिखाई-एक रिवाज), अतुगथ (जितनी तेथ अर्थात राशि रखनी हो जो कम से कम पूरे वर्ष के लिए निर्धारित हो जाती है। यह राशि बहू के पास ही संचित रहती है। वर्ष के बाद अतगत सास के हाथ दिया जाता है।)

पिटार् (ट्रंक,टीन से बनी पेटी)$_{१२}$ अंत में सतराथ, दही, रोठ साथ दिया जाता है। उपरयुक्त कथन का सारांश यही है कि कश्मीरी पंडितों का विवाह संस्कार उच्च कोटि का वह संस्कार है जिस में देवगुण प्राप्त किए हुए वर वधू शिव का अर्धनारीश्वर (दो का एक) रूप धारण करते हैं तथा शांति के साथ सांसारिक क्षेत्र में रहते हुए भी आध्यात्मिक खेत्र में भी संलग्न रहते हैं। एक दूसरे में मिश्रित होकर चारों पधार्थ प्राप्त करते हुए परमानंद के रस का आस्वादन करते हैं। इस पवित्र आयोजन को यथार्थ में ही लेना बुद्धिमत्ता है इस लक्ष्य प्राप्ति के विधान को दूशित करने की कोई गुंजाईश नहीं है।

ज़रा ध्यान दें:

१. प्रस्तुत मूल पाठ में किसी कारण वश कुछ न्यूनताएं हो सकती है। जिन को शुद्ध करना समाज का दायित्व है। वास्तव में मूल पाठ केवल संदर्भ के लिए ही दिया गया है।

२. महिलाएं आजकल पढी लिखी होती हैं इस लिए:-

व्यंज़े वनवुन गाते समय केवल लय का ही ध्यान रखना है शेष साथी पुस्तक से सामूहिक तोर से पढ सकते हैं जिस से समय की बचत हो।

३. .दार पूजा तथा लगन अपने घर में संपन्न करें यदि अपना घर हो।

४ बरात आने पर पुस्तक के अंत में दिया हुआ व्यूग ही लिखें।

५ यदि कोई जानकारी या सहायता चाहिए तो लेखक के साथ टेलीफोन से संपर्क कर सकते हैं।

६ लेखक की अन्य कृतियां- जीवनी, स्वामी गोविंद कौल वनपूह। (तैयारी में गूकल ह्यदय म्योन, माता ललीश्वरी पर एक नज़र, रावन त्यो'ल, आदि)।

पुष्कर नाथ रैणा

मंडल - कलष

विवाह तथा मेखला के लिए।

हवनार्थं इन्द्रकलशम्

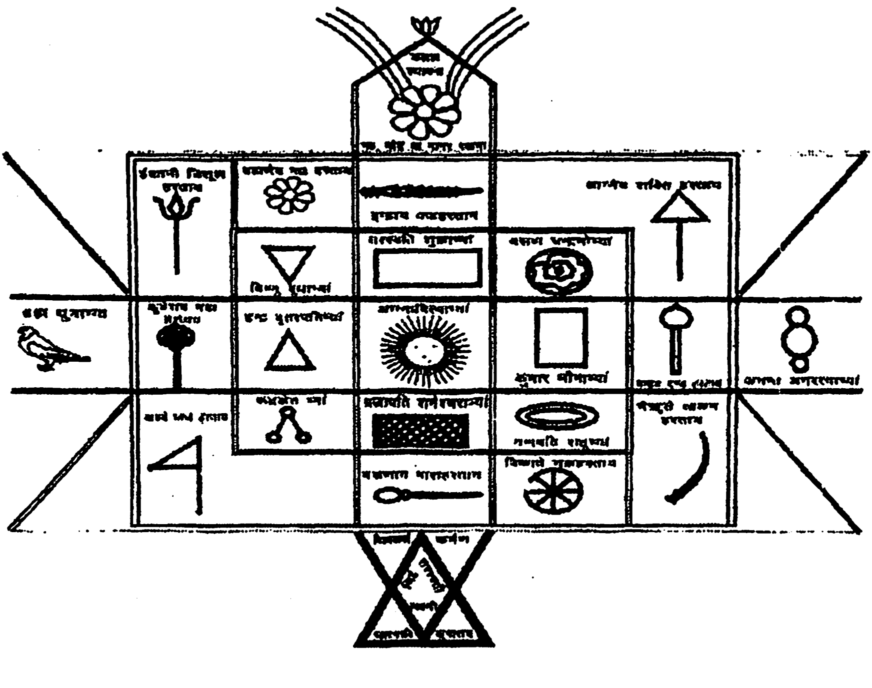

ह्यंज़े वनवुन मूल पाठ- तीन भागों में-

1. लिवुन 2. खांदर- 3. मेखल।

ग्वडन्युक खण्ड (पहला भाग) ———— लिवुन

ह्यंज़े शब्द का प्रयोग-आरंभ में तथा हर एक नए पद के आरंभ में, अथवा विराम के बाद होता है, जैसे-

लिवनस वनवुन-(खांदर त् मेखलि द्रशवुन्य बापथ)।

ह्यंज, शो'कलम क'रिथ्य वनवुन ह्यो'तमय, श्व'भ् फल दितिय माजि भवा'ने,
वखनय- श्व'भ् फल दितिय माजि शारिकाये, माजि रा'ज्ञाये।
वसदीव राज़न्यव वनवुन ह्यो'तुये, वखनय श्व'भ् फल दितिय माजि शारिकाये
ह्यंज, शोक्लम क'रिथ राम वर् दाये, हरि गंगाये नमस्कार।
वखनिथ कुस ह्यकि चा'ज बडाये, गंग सर सूत्य ब्ययि जमनाये।
पादन चान्यन शरणे आये, हरि गंगाये नमस्कार।
विष्णु पादि कमलव निश् न'न्य द्राये, जे'टि ह्यच़ परमीश्वराये।
भगीरथने तप् सूत्य आये, हरि गंगाये नमस्कार।
आकाशि प्यठ् य'लि गंगा द्राये, सूत्य छिस कारण त् ब्ययि दिवता।
अछ् रछ् वनवान पत् पत् द्राये, हरि गंगाये नमस्कार।
अपारि अ'न्यतोन पंडिथा गा'रिथ, लिवनस क्युत दियि साथ चा'रिथ।
नख् तल् अ'न्यतोन कश्यप ऋषि गा'रिथ, वसदीव राज़न्यन दियि साथ चा'रिथ।
नख् तल् अ'न्यतोन(पननिस ब्रह्मण् सुंद नाव)गा'रिथ, (य'ज़मन)दियि साथ चा'रिथ।।

ह्वंजे, नवि न्यचि प'त्रे रुत द्राव साथा, ज़गि हुंद दाता छु श्री भगवान।
वसदीव राज़न्यन रुत द्राव साथा, यज़मन सुंद दाता श्री भगवान।
असि क'र म्यचि़ का'म प्र्छ़िथ ग्वरस, तिय आव परमीश्वरस ख्वश।
दिवकी माजि प्र्छ़ ब्रहस्पत ग्वरस, तिय आव गणपत जियस ख्वश।
दीवियि खचा़'य वस्तूर वनस, **जाय लछ़्ज** दिवता वथ हाव'नस छिख।
दिवकी खचा़य व'सतूर वनस वसदीव वथ हाव'नस छुस।
बेरि बेरि वो'वमय लछ़्जे ब्योलुय, सोवुय छु करान सामानय।
विग्न्यव सग द्युत दण्डक वनस, ब्रह्मा वथ हावनस छुख।
स'मिथ खसवय दण्डक वनस, न'मिथ च़टव जावि लछ़्जे।
बं'दिथ खच़वय दण्डक वनस, गं'डिथ ति वालव जावि लछ़्जी।
अस्त् अस्त् खच़वय दण्डक वनस, दस्त् दस्त् वालवय जावि लछ़्जी।
दिवकी मा'ज खच़्य दण्डक वनस, दस्तदस्त् वा'जनय जावि लछ़्जी।
स'मिवे विग्न्यव लछ़्जे गंडवय, दयस मंगवय आधेकार।
आ'रिव्यन लछ़्जे त् म्वखत् रज़ गण्डवय, दयस मंगवय आदेकार।
पोन्य फिरि टठजन त् लछ़्ज डालि हंगस, यथ राजरंगस नमस्कार।
सुभद्रा मा'ल्य लछ़्ज डालि हंगस, यथ राज रंगस नमस्कार।
हाय वाल रवकन लछ़्ज डालि हंगस्य, यथ राज् रंगस नमस्कार।
स्वन् सं्दि टों'गरे रु'वप् सं्दि बेलो, अपारि ता'रमय शेलय म्यच़।
बरस डा'जिथय ज़ा'जि ल'छ़्जी, सावे तोनुय प्रावे हम।
सुभद्रा'य डा'जि थय ज़ावे ल'छ़्जी, सावे तोनुय प्रावेहम।

अछ् रछ़ि डोलुय ल'छ्ूजे लोवुय, सोवुय करान सामानय।
बरस डा'जथय म्वखतय ल'छ्ूजी, स्वख लड् रा'निम प्रावे हम।

● दपुन - दपनस वनवुन

ह्यंजे, दपनस क्युतये रथ मंगनोवमय, सोव न्यछतुर वुछनोमय।
दिवकी माजि क्युत रथ मंगनोवमय, सोव न्यछतुर वुछनोमय।
महराज सा'बुन हो'स मंगनोवमय, ह'स्यतिस स्वन् साज़ करनोवमय।
त'थ्य प्यठ कृष्ण माहराज ब्यहनोवमय, सोव न्यछतुर वुछनोमय।
दपने द्रायिखय राजाबा'यी, ताज तारुक ज़ंगि ओयीये।
दिवकी मा'जी राजा बा'यी, ताज् तारुख ज़ंगि ओयीये।
दपने द्रायिखय क्रंड् को'स्तूरी, वति म्यूलुये सूत्य नारायण।
दपने द्रायिखय मं'ज़्य बाज़ा'री, हा'री गछ़खय बांधवन।
दपने द्रायिखय दछ् ड'ख्य त'लिये, अछ्दार्य यज़मन बायीये।
दपनुक सामान म्वल् प्यव जा'री, कपटुय बब सुबदा'रीये।
दिवकी मा'जी म्वल् प्योय जा'री, कपटुय ड्यक् सुबदा'रिये।
दपनुक सामान को'डथय क्रंडय, गो'न्डथय सन्यच़्यथ सामानय।
दिवकी मा'जी को'डथय क्रंडय, गो'न्डथय सन्यच़्यथ सामानय।
वय मुच़ को'रथय का'न्ठ माल ग'रथय, गो'न्डथय सन्यच़्यथ सामानय।
क्रंड् कडि का'न्ठ माल पोट कर दायी, अज़ गंडि य'ज़मन बायीये ।
हटि का'न्ठ माला लटि अकि द्रायखय, द'पिथ आयखय बांधवन।
दिवकी मा'जी लटि अकि द्रायखय, द'पिथ आयखय बांधवन।

ग्वडन्य दीवक राजुन च़ायखय, सति सिनि क'रहय ज़ियाफत।
नून च़्वचि अत्गथ तोर् ह्यथ आयखय, द'पिथ आयखय बांधवन।

● म्वंग् वरे'न वनवुन

ह्यंजे, ब्रंग कुटहारस ल'जमय ब'स्यती, द'स्यती असि वा'च़ म्वंगरहकाय।
वसदीव राज़न्यन ल'जमय ब'सिती, जा'गीर् प्यठ् वा'च़ म्वंगरहकाय।
मचि को'ड म्वंग तय दायव डोलुय, बायो ब्यनि पज़ि कुन पा'थ्र।
आकाश् व'थिवय स्वन् सूंद्य शुपिये, गूपियन ह्युतनय म्वंग डालुन।
मचि को'ड म्वंग तय थाजि वज़नोवये, माजि ज़ाख माल्य को'डखो होवुरुय।
दिवकी माजे थाजि वज़नोवुय, वसदीवन को'डखो होवुरुय।
स्वन् सूंज़् पहरा'च़ रुप् सूंद्य कंज़ छिय, राजो संज़ ह्योत म्वंग च़ेटनस।
स्वन् सूंद्य मुहूल्य त् रुप् सूंद्य कंज़ छिय, प्वखत्कार म'हनिव म्वंग च़ेटन।
आकाश् व'थ्यवय स्वन् सूंद्य मुहूली, व'थिव मानरे'न्यव म्वंग च़ेटव।
व्वथदनि मोहनिव ससूकं'ड्य पिलवान, बिहिथ त् ब्यनि छे'स ओट मिलवान।
वसदीव राज़न्य ससूकं'ड्य पिलवान, सुभद्रा कूर छस ओट मिलवान।
स्वम्बरिव क्रायि ओ'कच़ा'र्य तय रम्बे, डम्बि ज़ाख वसदीव राज़ने।
क्रायि ओ'कच़ारे'न स'न्दरिसि त्योंगला, मंगला ज़ंगे अनेसे।
वसदीव राज़स मांगय मंगे, कन्यक ज़ंगे अनेसे।
वो'र त्रावनस कुनुय पा'थर, नून व'र तय मोहरा प्रास।
स्वन् सूंज़न क्रायन रुप् सूंद्य क'रिये, असि क'र व'रये रंग ला'ग्य ला'ग्य।
स्वभद्रायि छुननय क्राये वो'रये, ऋषि माहराज छम ज़्यववुनये।

क्राये छुनथय क्राये वो'रये, आये दो'रये तू ज़य-वोनुये।

● गरनावय

ह्यंजे, समिवे टठजन स्यंदि वोन्य फिरूवय, यिह्यंदि लरि करवय गरनावय।
गरू नावनस ज़ंगि कुस ओये, मंगला दीवी तू नंदकीश्वर।
गरू नावुथय राज़बा'यीय, ताज तारुख ज़ंगि ओयीये।
ग्वड'न्य सूंतिय ज़ंग आयि रूचये, रुवंग फ'ल्य ज़ंबक बागसूय।
वसदीव राज़न्यन ज़ंग आयि रूचये, दिवकी माजि फो'ज्य बागस हिय।
गरनावनस न्यछतुर सोवुय, भवा'न्य आयि पोशि लोवुय ह्यथ।
म्यचि़ तू पा'निस खो'त ख'म्बीरूय, गंभीर असि क'र गर नावय।
हर म्वख पतकुय श्रूच़ पोन्य तोरमय, हरिचंदराजुन गरू नोवमय।
गंगबलू ओ'नमय गंगजल नो'टये, फ'लिलय वो'टुय लिवसे।
गंगबलू तोरमय गंगजल नावन, हावस क'रमय गरनावय।
गरू नोवूथय क्वंग को'स्तूरी, व'सतूर्य वनूचे लछ़'जे।
गरू नावूथय शुक्ला प'छी, श्वभ वारि तय न्यछतरस प्यठ।
गरू नोवूथय गरुडस ख'सिथ, भ'विनय लक्षमी स'सतिस आय,
सुभद्रा'य लिवुथय गरुडस ख'सिथ, दीवकी माजि छु प्वनयसुन।*वखनय*।
पाथछे बागस बबरे रो'बये, दो'ब्य आयि गरू सोन नावने।

ज़्युन चट़नस वनवुन।

ह्यंजे, स्वनू संज़ि तबरे रो'पू सुंद दन, वन खसव चंदुन चटने।
ज़्युन चो'ट कारंदव तू तबरदारव, अज़ गय खबर बांध'वन।

• मस मृच़रावनस

ह्यंजे, मस मृच़रनस संज़ ह्योतूथय, **मंज़ ह्योतूथय नारायन,गनपथ--।**
मस मृच़रावनस ज़ंगि कुस ओये, मंगला दीवी तृ नंदकीश्वर।
नारान जुवस मांगय मंगे कन्यख ज़ंगे अनेसे।
मस मृच़रावनस डो'लये गुमय, लो'गये रुमय रेशुन आय।
मस मृच़रावये खेशे खेशे, रेशे बाबृन्य कूरिये। **वखनय-माता या पिता या गुरु का नाम।** यहां वां'ख पारने के कुछ पद भी गाए जासकते हैं।

• क्रूल १. जावि लछ्रूज डालृन्य हंगस

(जब दूसरे दिन क्रूल का प्रोग्राम हो तो दुबारा **जाय लछ्रूज,** वसतूर वनस गाना होगा)।

ह्यंजे, दीविथि खच़ा'य वस्तूर वनस, दिवता वथ हाव'नस छिख।
दिवकी खच़ाय व'सतूर वनस वसदीव वथ हाव'नस छुस।
बेरि बेरि वो'वमय लछ़्ते ब्योलुय, सोवुय छु करान सामानय।
विग्न्यव सग द्युत दण्डक वनस , ब्रह्मा वथ हावनस छुख।
स'मिथ खसवय दण्डक वनस, न'मिथ च़टव जावि लछ़्जे।
बं'दिथ खच़वय दण्डक वनस, गं'डिथ ति वालव जावि लछ़्जी।
अस्तृ अस्तृ खच़वय दण्डक वनस, दस्तदस्तृ वालवय जावि लछ़्जी।
दिवकी मा'ज खच़ृय दण्डक वनस, दस्तदस्तृ वा'ज़ृन जावि लछ़्जी।
स'मिवे विग्न्यव लछ़्जे गंडवय, दयस मंगवय आदेकार।
आ'रिव्यन लछ़्जे तृ म्वखतृ रज़ गण्डवय, दयस मंगवय आदेकार।

पोन्य फिरि टठजन त्‌ लछ्‌ज डालि हंगस, यथ राजरंगस नमस्कार।
सुभद्रा मा'ल्य लछ्‌ज डालि हंगस, यथ राज रंगस नमस्कार।
हाय वाल रवकन लछ्‌ज डालि हंगस्‌य, यथ राज रंगस नमस्कार।
सुभद्रा मा'ल्य ल'छ्‌ज डालि हंगसय, यथ राज़्‌ रंगस्‌य छु नमस्कार।
बरस डा'जिथय ज़ा'जि ल'छ्‌जी, सावे तोनुय प्रावे हम।
सुभद्रा'य डा'जि थय ज़ावे ल'छ्‌जी, सावे तोनुय प्रावेहम।
अछ्‌ रछ़ि डोलुय ल'छ्‌जे लोवुय, सोवुय करान सामानय।
बरस डा'जथय म्वखतय ल'छ्‌जी, स्वख लोट्‌ रा'निम प्रावे हम।
वरि करि देगि त्‌ प्वन्‌सुन दानस, स्वन्‌ हियि लोव लाग बर हंगस।

• क्रूल २.- (वरि त्‌ ह्‌वचन वनवुन)

ह्वंजे, वरि रनेथय आ'नक्‌ दानस, ज़नक क्रोश सा'निस वर्गस च़ाव।
वरि करिथय वरि स्वंदरिये, करि स्वंदर्ये कोसमन क्राव।
गुलाब फ'लिमय गुलाब वारे, असि करि वरे लरे प्यठ।
बुटन्‌चि बुट्‌ च्रे'चि हंग्‌व'चि नाववय, क्रूल्‌ ह्‌वचि प्रेप्युन हाव'वय।
व'र करेथय वरि पद्मा'नी, करि पद्मा'नी कोसमन क्राव।
गुलाब फ'लिमय गुलाब थरे, असि करि वरे लरे प्यठ।

• क्रूल ३. (ज़ंगि यिनस वनवुन)ह्वंजे,

रुव्प्‌ल्‌ कां'क्‌न्य छ्‌निथय क्रूल्‌ थाजे, ओम ब्रारे माजे छि मां'ज़े राथ।
क्रूलय ज़ंगे क्या क्या पज़े, नून व'र तय मोहरा प्रास।
सुभद्रा माले क्या क्या पज़े, वसदीव राज़्‌न्य मोहरा प्रास।

क्रूल खारनस ज़ंगि कुस ओये, परमीश्वर तय पार्वत मा'ज।
सुभद्रा माली ज़ंगि कुस ओये, परमीश्वर तय पार्वत मा'ज।
व्वगने लरे क्रूल खोरूथय, लो'दये भवानि त् प्रावेहम।
सुभद्रा मा'ली क्रूल खोरूथय, लो'दये भगवानन त् प्रावेहम।
क्रूल खोरूथय क्रूलय ग'रिये, नस्यन कुन्दन दार क'रिये छिय।
सुभद्रा मा'ली क्रूल् ग'रिये, नस्यन कुन्दन दार क'रिये छिय।
व्वगने प्यठ् चिय मूलय या'री, क्रूलय ल'र्य ब'र् थय,।
वसदीव राज़्न्य मूलय या'री, कृष्ण् जुवन्यन ल'र्य ब'र् थय,।
क्राजि अ'न्य ब'रिथ क्रूल् मल'र्य, अज़ छम ल'र्य शोल् दिवान।
म्युल गव मां'ज़े मरेदि त् क्रूलस, मूलस ति मुचा यियेनय।

• क्रूल ४. (गछस वनवुन)

ह्वंज,चंदन्वि राज़धानि दा'न्तुव हंग छुय, राजो रंग छुय शोल् दिवान।
वसदीव राजुन दा'न्तुव हंग छुय, गो'बुर छुख बलराम जूवा'नुय।
कृष्ण भगवानस श्वन्गुन क्युत प्रंग छुय, राजो रंग छुय शोल् दिवान।
सद् गुलाल त् अछे पोशो, गछो को'डमय रंग् रव् कन।
वसदीव राज़्नि रुव्पये लछो, बलराम जुवनिस नेत्रस कार।
स्वनरन फुरमाश गहनय लछो, गछो को'डमय रंग् रव् कन।
शिवय नाथ्न्य रुपये लछो, सुय आव गण्निस नेतरस कार।
गामन फुरमाश खा'रय लछो, गछो को'डमय रंग् रव् कन।
य'ज़य मन्नि रुपये लछो, महाराज़नि मेखलि कार।

सूचन फुरमाश जोरय लछो, गछो को'डमय रंग् रव् कन।
पथ हिय थ'रिये तू ब्रोंठ रंग् च'रिये, शाम स्वन्दरे को'र मोन्यन गछ।
वसदीव राज़नि न्वशि तय कोरे, ठोकरस छि मंगान बे'हनस जाय।
ठोकरन तिम व'र्य पनने गरे, शामस्वन्दरे को'र मोन्यन गछ।
नवि लरि कनदरि हारे तू चरे, थरि फो'ल्य गुलाब नाना रं'ग्य पोश।
ये'थ्य लरि शूबनय स्वन् सूंद्य ठ'ठिये, यिहय ल'र शालमा'र ब'ठिस्य प्यठ।
व्यस्तू का'र्य छा'न्य ल'द्य स्वठकिव चीनी, प्वखतूकार ब्यनि को'र मोन्यन गछ।
चे'न्यन गछ्य तय तालवन वस छुय, रसू रसू कामि ल'जि कर'ने।

मां'ज़ि रा'च़ वनवुन (मेहंदी रात)

ह्यंजे, मां'ज़े रा'चूय सोम्बरिथ बा'चय, वा'चूय गंग जमना तू सरस्वत।
वसदीव राज़्न्य सो'म्बरिथ वा'चूय कृष्णूने मां'ज़े रा'चय किच।
तुलूमुलि अ'न्द्रय राग्यन्या वा'चूय, वा'चूय गंग जमना तू सरस्वत।
असि क'र मां'ज्य राथ बांधवन किच़ये, लक्षमी दिच असि नारा'णी।
वसदीव राज़न्यन बांधवन किचये, लक्षमी दिच असि नारा'णी।
समीर अ'न्द्रय मां'ज़ि हुन्द तर द्राव, त्यलि द्राव ये'लि आव लूयिनूय गाश।
राज़ायि आंगन मां'ज़ि हुन्द तर द्राव, स्यो'द चाव वसदीव राजुन प्यठ।
दिवकी माजे सोरुय शर द्राव, त्यलि द्राव ये'लि आव लूयिनूय गाश।
मां'ज़ि कुल खोरमय द्रध् सूत्य सगवान, हरि भगवानूय टोठ्योयो।
वसदीव राजूनि द्रध् सूत्य सगवान, बलराम जियो टोठ्योयो।
पाथछा बागस तुलूमुलि नागस, त्रागस मंज़ खो'त मां'ज़े पोश।

वसदीव राज़निस पादशाह बागस,
फो'ल्यसय गुल्य आफताब तू हिय।
बलराम ज़ुवनिस दिवगोनस लागस,
त्रागस मंज़ खो'त मां'ज़े पोश।
पाथछा बागस द्युतम़य वो'नये,
छ़ा'डिथ ओ'नमय मां'ज़ि पोश।
राज़ा आंगन द्युतमय वो'नये,
वसदीव राजुन मां'ज़े पोश।
वसदीव राज़्नि कर बुलि खानो,
क'मि बुहूर्य वान् छुख मां'ज़ म्वलवान।
व्वल् मालि बोहर्यो बेह सानि प्यंजे,
कर मालि मां'ज़ लंजे म्वल।
बे'ह मालि वसदीव राज़्नि प्यंजे,
अज़ सानि लंजि ब्यूठ बुलबुलतू काव।
बलरामजियो वा'च़्यो ह्वंजे,
कर मालि मां'ज़े लंजे म्वल।
शुपयन् बुहरा अ'थि ह्यथ बही,
बोहर्यो मां'ज़ि म्वल सही कर।
बोहर्यो मां'ज़ अन महाराज गंजे,
मां'ज़ तोल तार्चि़ डंजे सूत्य।
स्वन् सूंज़ि तारचि़ रुप् सुंद डंड् छुय,
मां'ज़ तोल ह्वंड छ्य प्रारान च़्यय।
बुहूर्य अ'न्य मां'ज़ तय ओब्र् तू साज़ो,
राज़् सूंद्यिस गो'बरस छ्य मां'ज़े राथ।
मां'ज़ ख'च़ स्वर्ग् तू मां'ज़ आयि पानी,
मां'ज़ि क'र मेहरबा'निये।
मां'ज़ि कित्य क्वंड अ'न्य अर्ज़दीवन सा'नी,
कथा थ'वनय त्रे'न भवनन।
वुर्ह ल'ज़ द'सिलव लरि लज् छानव,
चा'न्य दोह य'छ़िमो नारा'णी।
फुटल्यन मां'ज़ तय दान् दान् छानवय,
खान् माल्यन करवय मां'ज़े राथ।
फुटल्यन मां'ज़ तय डुल्यन फिरवय,
शुर्यन करवय मां'ज़े राथ।
लोहूर्च मां'ज़ तय असि वा'च़ डाले,
रंग मालि बालि थ'व्य आ'डरा'विथ।
वसदीव राज़न्यन वा'च़्य डाले,
सुभद्रा मालि था'व आ'डरा'विथ।
मा'न्ज़ि सूत्य सुरथ ब्ययि रेंठ् पावा,
भावा को'रुय माजि भवाने।

शीरीनि फल्यन तय कलाय कंदन, दोलच़ मंदन छ्य मां'ज़े राथ।
मा'न्ज़े क्वण्डस द्युतथय ज़ोलुय, ख्य'लि वोल मोल शैयि आशेनय।
सुभद्रा मा'ली द्युतथय ज़ोलुय, ख्य'लि वोल मोल शैयि आशेनै।
मन् ब'द्य मा'न्ज़ि ह्रंदि वथ व्वज़जी, कथ. कस ख्वदयस छ्य मान्ज़ि राथ।
लोहूरच मां'ज़ तय ख'च़ दरपरदन, छम सरकरदन मां'ज़े राथ।
लोहूरच मां'ज़ तय वति ल'ज़ बुर्ज़न, ये'ति क्यन म्यर्ज़न मां'ज़े राथ।
जूनि डींठ्य तारख जून बीठ सूथरस, पाथछा पो'त्रस छ्य मां'ज़े राथ।
लोहर्च मां'ज़ तय ख'च़ तापदानन, शाहि ज़ाफरानन मां'ज़े राथ।
कथ् चानि कशीरि ब्रंग कुटहारस, छह सरदारस तार बलंद।
वसदीव राज़्निस ब्रंग कुटहारस, बलराम जुवस सरदारस।
हिय गो'न्द लागस शुमल् दस्तारस, छह सरदारस तार बलंद।
तार चा'ञ बलंद च़ंद्रमस नीरे, ज़ेरे ज़ेरे वले हम ।
वसदीव राज़ने च़ंद्रम नेरे, बलराम जूव वलेहम।
ज़ोतवुन लाल प्यव मंज़ मारकन, क'शीरि ह्रंद्यन कारणन।
वसदीव राज़न्यन शबि चरागान, बलराम जुवन्यन बार'न्यन।*वखनय*।
दीवकी मा'जी मुर दारि च़ंद्रतार'कन, कशीरि ह्रंद्यन कार'णन।
व्वगने प्यठ च़े म्वखत् रज़ लभयो, प्रभलो अज़ छु रंभवुन दोह।
व्वगने प्यठ्ची बादाम थ'रिये, फ'लिये दानय दु लरी पोश।
दिवकी मा'जी बादाम थ'रिये, फ'लिये दानय दु लरी पोश।
व्वथ तय द्रध् मा'ज शमादान ज़ालतय, मा'न्ज़ि क्वण्ड खारतय देवान खान।

● मां'ज़ लागनस ह्वंज़े वनवुन (मेहंदी लगाने पर)- ह्वंजे,

ज़ाहम विलि तय रो'छमख वखतय, मां'ज़ लागय पाछाह तखतस प्यठ।
ज़ाहम वसदीव राज़्नि वखतय, टोठ छुख बलराम जुवूनुय।
कृष्णो सूज़नय पनने भक्तय, मां'ज़ लागय पाछाह तखतस प्यठ।
पार्वथ परमीश्वर रथस ख'सिथ, महाराज़स लागव अथस मां'ज़।
पार्वथ परमीश्वर आदन मीलिथ, महाराज़स लागव पादन मां'ज़।
मा'ज पार्य ल'जयो शीरीनि दहान कथ्न्य, राज् मां'ज़ लागयो वाजि अथ्न्य।
दोहस ख्ययथम वरि बत् म्यंडिये, शामस लागोय टे'न्डिन्य मां'ज़।
सुबहन ख्यतम द्वध् बत् म्यन्डिये, कालचन लागोय टे'न्डिन्य मां'ज़।
वसुदीव त् दीवकी कथन मीलिथ, वखनय। कृष्णजुवस लागव मर्मन मां'ज़।
स्वन् सूंज़ि ज़ंजीरि रुप् सूंद्य क'न्डिये, द्वदिये लागुस टे'न्डिन्य मां'ज़।
अर्ज़न राज़न्य रुप् सूंद्य ब'्डि वस, स्वभद्रा'य लागुस टे'न्डिन्य मां'ज़।
मां'ज़ लागनस ज़ंगि कुस ओये, मंगला दीवी त् नंदकीश्र।
मां'ज़े ज़ंगि क्या क्या पज़े, नून, व'र तय मोहरा प्रास।
तारकन मंज़बाग जून हिश प्यय खय, त्रे' छ'त्र मा'लिस ज़ाये खय।
सुभद्रा दीवी जून हिश पे'यि खय, वसदीव राज़स ज़ायेखय।*वखनय*।
कृष्ण् जुवनि नेत्र्ह वर्गस चायखय, त्रे' छ'त्र मा'लिस ज़ाये खय *वखनय*।
जूनि ह्न्दि चंद्रम् त् बे'नि ह्न्दि बायो, आय त् राय छु ज़ये वोनुय।
सुभद्रा ब्यनि ह्न्दि बलराम बायो, लूयन शो'कल् तय गाशेरो।
माजि गंगायि लो'दुय द्वछ़ि द्वछ़ि आयो, आय त् राय छुय ज़यवोनुय।

दिवगोनस लिवनस तॖ हुमस (दिवगोन के लिए लिपाई)

पंडितन व्यद व'न्य पननिस चाटस,
रातस को'र हम हुम कुय संज़।
ह्यंजे, जमना ज़लय तॖ गंगय म्यचे,
हुमस क्युतुय लिवेसे।
वसदीव राज़ने गंगय म्यचे,
दिवकी मा'जे लिवेसे।
गंगबलॖ ओनमय गंगवां नो'टुय,
उत्तम वो'टुय लिवेसे।
आकाशॖ व'छ़खय ओ'मरा वतिये,
श्री सरस्वतिये कानी लिव।
हरम्वखॖ पतकुय श्रूचॖ पोन्य तोरमय,
हुमस क्युतुय लिवनोवमय।
आमि द्वदॖ सूतिय कानी लिवयो
सा'रिय समिवो सीवाकार।
द्वधॖ के हरॖ सूत्य कानी लिविसे,
ओरॖ यियि ब्रह्मा खिर्य वथ रोस।
व्वशनारि थो'वयो पोशॖ बाग लिविथ,
दशरथ राज़ॖ खो'त श्रान करिथ।
दिवकी माजि था'व कानी लिविथ,
वसदीवराज़ॖ खो'त श्रान करिथ।
स्वर्गॖ खो'त साल्यग्राम अरनूनि वेरे,
धर्मॖच जाय लो'ग छ़ांडने।
ह्यंजे, स्वर्गॖ खो'तये चंदन टूपय,
रूपय वसदीव राज़'ने।
खोरन लवॖ दिव तपॖ के ज़ोरो,
ग्वरो वंदयो पादन रथ।
थारान द्रायस म्वखतॖकि शोरो,
फेरान वा'चॖस चोन ढेरॖ बल।
शिवय लूकॖ जाय छय परमीश्वरो,
ग्वरो वंदयो पादन रथ।
लवॖ दिव खोरन ब्ययि शिख शेरस,
नखॖ छुख ब्रह्माहस तॖ वे'शीनस।
दिवगोनस संज़ ह्यो'त धर्म यीत माजे,
तेल डून्य तय ग्यव श्रीफल।
खारुस तेल, मरेद तय डूनी,
ज़न्मॖच यूनी च़'जीयव।
खारुन तेल, मरेद तय बादाम,
आदन बाजी ल'सीनय।

खारुन तेल, मरेद तय श्रीफल, स्वफल लक्ष्मी वा'च़यो।
कलशस खारुस त्रे'शूल डूनी, ब्रह्मा वे'ष्ण त् महीश्वर।
यूर्य कुन मरेद तूर्य कुन ब्यूठखो, तारख ज़ितिश वार् रख् लेछ्यो।
ब्रहस्पत ग्वरो पूरकुन ब्यूठखो। तारख ज़ितिश वार् रख् लेछियो।
अर्श् व'थिमिति अर्ज़न दीवो। *वखनय।* फर्शस प्यठ कर कलशस जाय।
कलशिचि विज़ि र'थ्य वो'थ नाराण, कलश मंडल वाहरावोस।
कलशिचि विज़ि दय टोठ्योयो, पूज़ि ब्यूठूयो नारायण।
बडि आख बोलत् कृष्ण् ज़ुवुन लोलूय, शोलय दिववुन ट्यो'कुय लाग।
वसदीव राज़्न्य गुर्य गंड बागस, बडि ब्रह्मण् कर दातस ट्यो'क।
म्वखत् चव ढोलस, तखते रवानस, ट्यो'क कर बादशाह देवानस।
दातो करुस ताब्या दा'री, ग्वरो गंडुस ना'रीवन।
सदा शिवस मांगय मंगे, कन्यक ज़ंगे अनेसे।
मंज़ रोब् खानस वा'हरिथ डूनी, सन्य कोसम तय माद'ल्य पोश।
वसदीव राज़्नि वा'हरिथ डूनी, सन्य कोसम तय माद'ल्य पोश।
कलशस वो'हरमय बादाम सासा, दासस ति रुम् रेषुन आय।
वसदीव राजुन बादाम सासा, कृष्णस ति रुम रेषुन आय।
दिवगोनस ब्यूठुम ग्वर त् पानय, स्वन् सूंद्य बानय वाहरा'व्यूस।
ये'ति छुख महा राज़्न्यायि हुंद थानय, येतिकिस थानस दिवता जान।
यो'त यियि रा'ज़्ना भूती पानय, स्वन् सूंद्य बानय वाह रा'व्यूस।
कलशस पूज़ कर उत्तम नरो, हरी हर तय हल् धरो।

वसदीव राज़ो व्वत्यम नरो, कृष्ण जुव तय हल् धरो।
कलशस पूज़ कर दरबे तुल्यव, टा'न्पट कुलि वसदीव राज़ने।*वखनय*।
कलशस पूज़ कर पंपोश प'तरय, म्वखत् छ'त्रय वसदीव राज़ने।
कलशचि विज़ि व'छ आ'न्त्धार्य, कलशस पूज़ वारय कर ।
वसदीव राज़ो व'छ्य आ'न्त्धार्य, ब्रहस्पथ ग्वरव पूज़ा कर।*वखनय*।
कलशस पूज़ कर क्वंग तय स्यंदरे, यंद्राज़स रुच़ नवीनय।
कलशस पूज़ कर पोशव सूतिय, व्वशनारि ज़ामृत्य लशे हम।
कलशस पूज़ कर अर्ग त् पोशो, गवरी त् लक्ष्मी वाचेनय।

● शिव भ्वकच्-१ सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव। ह्वंजे,

कलशस पूज़ कर अर्ग तय पोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
पूरे खो'तखो सिर्ये वेशो, दूरे करयो नमस्कार ।
च़ूति छुख सारिन्य प्राणा वेशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
सूतायि ओसुय स्वन् सुंद केशो, खा'रिथ त् नियहम डंडक्वन।
रामचंद्र लक्ष्मण सूत्य तस डेंशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
कनिका र'छिय वनकिय रेशो, खा'रिथ त् नियहम डंडकवन।
युथ नज़ि हीमाल पर्वत निशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
वसदीव राज़्नि धर्म पोरूशो, जायि जायि लद्यनम देवान खान।
स्वठकुक द्योन तय म्वखतुक पोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
कोतर बचो करु बोल बोशो, कोतूर चा'न्य छम हमसस प्यठ।
द्वखतरि वुरूयो म्वखतुक केशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।

ग्वड् सूंत्य फो'लहम बेदमुशुक पोशो, गोशस र'टथम बटिस जाय।
मंघन त् रूगियन दिवन होशो। सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
चितरे फो'लहम विरिक्य'म्य पोशो, गोशस र'टथम जंगलन जाय।
सोंतस नवरेहस च़्ूति छुख खोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
आदन फो'लहम बादाम पोशो, गोशस र'ट्थम पर्बत्-वुड्र प्यठ जाय।
बर्ग चोन छो'त तय मेव् चोन खोशो। सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
प्यठय बान् फो'लहम च़ाति् चे़र् पोशो, सुलि फो'लहम त् चे़र प्योय नाव।
मे'व् चोन छुमो दिवताहन खोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
सूंतिय फो'लहम च़्ूति चूठ'च पोशो, गोशस र'टथम कुलिस प्यठ जाय।
बर्ग चोन सब्ज़ तय मे'व् चोन खोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
लंग् फो'लहम च़्ूति टंग् पोशो, गोशस र'टथम बागस मंज जाय।
बर्ग चोन सब्ज़ तय मे'व् चोन खोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
वहिक्य फो'लहम कोसम पोशो, गोशस र'टथम थरि प्यठ जाय।
च़्ूति छुख ठेकुर सा'बस खोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
ज़ीठी फो'लहम गुलाब पोशो, गोशस र'टथम थरि प्यठ जाय।
बर्ग चोन व्वजुल तय मुशुक चोन खोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
हारय फो'लहम च़्ूति पंपोशो, गोशस र'टथम सरस मंज़ जाय।
च़्ूति छुख राग्न्यायि भूतीश्वरस खोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
हा'री फो'लहम गा'री पोशो, गोशस र'टथम सरस मंज़ जाय।
च़्ूति छुख आ'ठम त् का'शन खोशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।

श्राव्न्य फो'लहम दतूर्य पोशो,
च्ऩति छुख सदा शिवस खोशो,
बाद्र प्यथ फो'लहम कपसे पोशो,
ये'रि लूख परिलूक् परदय पोशो,
आ'शिदि फो'लहम जाफ्र्य पोशो,
च्ऩति छुख ठोकुर सा'बस खोशो,
कार्तिक फो'लहम को'न्गय पोशो,
च्ऩति छुख ब्राह्मण ज़नमस खोशो,
सोपूर्य वति लो'गयो गोशो,
माजि शारदायि हुंद दर्शुन डेंशो,
वरमुलि वति लो'गयो गोशो,
ब्रह्मा जुवुन दर्शुन डेंशो,
नुनर वति लो'गयो गोशो,
बुथि शेरि वसान ल'जमो त्रेशो,
शुपयन वते लो'गयो गोशो,
कनिकन त् बालकन दिवान त्रेशो,
अनंत नाग् वते लो'गयो गोशो,
च़ाक् बल् मीजिय पितरन त्रेशो,
पहलगाम वति लो'गयो गोशो,
सदा शिवुन दर्शुन डेंशो,

गोशस र'टथम छ्व़्टस प्यठ जाय।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
गोशस र'टथम डारस मंज़ जाय।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
गोशस र'टथम बागस मंज़ जाय।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
गोशस र'टथम पोंपर जाय।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
शारदा बलय दिवया जान।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
कनिका माजि छ्म दिवया जान।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
गंगय बलय दिवया जान।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
दिगामि नागस दिवया जान।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव ।
डायि व्रूह्र्य आव मटन मलमास।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
अमर नाथस दिवया जान।
सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।

हब्क्दल् वते लो'गयो गोशो, गणपतयारस दिवया जान।
सुबुह वथित गणपत सा'ब डेंशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
ला'रियार वति किन्य लो'गयो गोशो, कमला नागस दिवया जान।
सतप्वखरे'न छिय सत ऋशो सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।
बिंदराबन वति लो'गयो गोशो, जमनायि प्यठ गोम रासमंडुल जान,
राधा कृष्णुन दर्शुन डेंशो, सो'रिव तप् रे'शव सदाशिव।

यज़मनबायि तरंग् गंडुन दिवत् गूल्यन वनवुन— ह्वंजे,

अनिगटि कन्यन सूत्य क'रिथ नालमतिये, श्री सरस्वतये यारबल वस
अनिगटि कन्यन सूत्य क'रिथ नालमतिये, दिवकी माता यारबलवस
यारबल् ख'च़खय श्राना क'रिथ,वखनय (भरथा) ध्याना स्वरिथ ब्रह्मा सुन्द।
दंडकवन ख'च़ खय ना'री ना'री, बजि ब्यनि हारी तरंगा गंड।
दंडकवन ख'च़खय ना'री ना'री, र्खमन मा'ली तरंगा गंड।
ह्वंजे,तरंगस चा'निस ताह गव थो'दये, वनतय माल्यन्यव लो'दये क्या।
आकाश व'छ्खय यंद्र् गर् चा़यखय, आयखय रू़च् रू़च् कामि करने।
दिवकी मा'जय हुरे बीठखय, मुरे ह्यो'तथय रतनय फल।
कृष्ण्नि ज़्यनय वर्गस चा़यखय, *वखनय।* आयखय रू़च् रू़च कामि करने।
थ्यक्व्नि फ्यरनय मुख क्युथ द्रोयय, स्वख् सूत्य यज़मन बा'यीये।
दीवकी माजे मुख क्युथ द्रोयय, स्वख् सूत्य यज़मन बा'यीये।
चिकनय फ्यरन थ्यकन्य वा'तियय, अ'ज़्य य'छ़ नाराज़ यज़मनबाय
टे'क्य पूचि़ टे'न्ड्य मा'न्ज़िनम छख तारान, यायमस छख करान लो'ल मत लाय।

टे'क्य पूचि़ चाने प्यठ किना'री,
दिवकी माजे प्यठ किना'री,
कृष्ण्निस दिवगोनस ग'न्डथय सरदा'री,
टे'क्य पूचि़ चाने अरतलि व'थ्र्,
दिवकी माजे अरतलि व'थ्र्,
पोशत् मा'जी पोशत् छुयय,
छायख मा'जी छायख छुये,
अवलय अन्यथम म्वखतय था'जी,
दिवकी मा'जी अन्यथम म्वखतय था'जी,
दिवत् गूल्य व'टिथय यिशर्नि कूनय,
दिवकी मा'ज व'टिथय यिशर्नि कूनय,
दिवत् गूल्य व'टिथय हंदे त् वरे,
दिवकी मा'ज व'टिथय हंदे त् वरे,
चांदरानिय व'टिथय हंदे त् वरे,

ब'डब्यन्य हा'री दिवगोन दिम।
म्वखत् छुस डुलन त् स्वन छुस शेख।
ब'डबे'ञ हा'री दिवगोन दिम।
म्यथ्र् आयिय गुल्यम्यूठ ह्यथ।
श'थ्र् प्ययनय खोरन तल।
ठठर दार दूरन त् ज़ा'ल्य जुमकन।
न्वश छख हरिचं़द्राज़नी।
शाबाश शारदा मा'जीये।
शाबाश शारदा मा'जीये।
गुल थरि जूने त् गाशेरस।
गुल थरि जूने त् गाशे रस।
गरे हरिचं़द्राज़'ने। *वखनय*।
गरे वसदीव राज़ने।
गरे पुष्करनाथने।

● दुर्यबतस

ह्यंजे, भिश्मक राज़्न्य दुर्यबत् शेरान,
दुर्यबत् नावे रज़ गय ड्यजिये,
तति द्रायि सुलि तय र'थ्य वे'मानस,
म्वक्त्चि रज् तय अ'त्र्ञ ह्यंज़ तोलय,
यिम दय दुरिबत् वाजे'नि आये,

वसदीव राज़्न्य वत् शेरान,
ब्रग आव कोतर ख्यजिये ह्यथ।
यो'त वा'त्य सा'निस थानस प्यठ।
यिम आयि लोलय त् बर मुचर्य तोख।
हिंदोस्तान्चि ह्यंज़ियाने।

दशरथ राज़्न्य श्यामसुंदर कूरी, वखनय रामच़ंद्र बोय ओय दुर्यबत् ह्यथ।
तेशस पुनरवसस प्यठ ज़ायिखय, कोरि हुंद आयिखय दुर्यबत् ह्यथ।
तेशस पुनरवसस प्यठ ज़ायिखय, बब त् मा'ज ओयय दुर्यबत् ह्यथ।
स्वन् स़ुंज़ि गाडि छय रुप् स़ुंद्य कं'डिये, बे'नि त् बोय ओये दुर्यबत् ह्यथ।
तेल फो'ल वो'वथय च़ंदन कुल ज़ोयय, बबत् मा'ज ओयय दुर्यबत् ह्यथ।
अ'दरिस तो'मलस मो'दरुय बासा, यिथये मालिन्य आसन त् क्या।
वसदीव राज़नि लायक गो'बरो, हायक् स़ूत्य रठ तूल्य तूली।

कनि श्रानस

ह्यंजे, वसदीव राज़्नि होगे वा'ली, रोगे छानन म'हनिव सोज़।
वसदीव राज़्नि च़ंदनय दारो, छानो पीरि हन वारय गर।
विश्वकर्मन च़ंदन पीर र्‌च़ गर्‌ये। आय कोरि ह्‌ंदिस कनिश्रानस कार।
स्वन् स़ुंज़ि पीरि रुप् स़ुंद्य संगिये, व्यथि मानरेनिये कनि श्रानस।
कन्ये श्रानस संज़ ह्योतू थय, मंज़ ह्योतू थय नारायण।
सुभद्रायि वुज़ ल्युव मूला द'तिये, लोल् पूतिस वा'च़ कनि श्रानस विज़।
पीरे तलय प्यियिये मरेद र्‌खय, ह्र्‌क् आयि बावज् ज़ाफल ह्यथ।
कूंजन च़्वन छय कन्यक् च़ोर्‌य, मोल त् ग्वर छुय गो'ड दिवान।
रुखमनि वुशनोवुय गंग् वोनिय, मद्‌मति च़ोनुय त् करुस कनिश्रान।
ब्रह्मणन वीदा वखनुय सोरुय, पूच़ वाहरुस द्वध् गो'ड्य दिस।
ज़्यनय काल् वुद वाच़्‌यो, द्यद छय तने द्वध मलान।
आमे द्वध स़ूत्य ग्‌रग्‌र करयो, ज़ामति द्वध् स़ूत्य तन मलयो।

तनि मल'यो गुको'श तू ओटुय, सूच़ ओय पशमीन पो'टुय ह्यथ।

कनि श्रान क'रिथ पलव लागनस (वस्त्र पहनने पर)—— ह्रंजे,

कनि श्रान क'रिथ अतलास ना'ली, वाल्य पज़न माता माल'की।
सूच़न अ'न्य सुविथ क्यमखाब द'तिये, रूतिये रूतिये प्रावेह्म।
व्लू मालि सूचो पख ज़ेरि ज़ेरे, वर्दनस ह्येरे प्रारान छिय।
सूच़न अ'न्य सुविथ किंखाबू जामय, सूच़न ति क्या पज़ि यनामय।
तनि क'म्य दिच़यो कंसन तू रामन। जामन छ्य पुति ज़ेबायी।
तनि क'म्य दिच़यो कंसास्वर मामन। जामन छ्य पुति ज़ेबायी।
पतू ब्रोंठू वुछनय वसदीव राज़न, मामन खोरखो क्वछे क्यथ।
सेरे (सेले) रसय तन नाव्या'मय, कुठि होवूमय अ'गनय क्वंड।
कनि श्रान क'रिथ ग्वरस निश चाखो, ज़ाखो यंद्र्य करनिके।
बलराम जुवो दिवकी ज़ाखो, तेशस तू पुनरवसस प्यठ।
वसदीव राज़ने ज़नमस आखो, ज़ाखो यंद्र्य करनिके।
सरू पंपोशन टूर्य गय ताज़य, कृष्ण महाराजय लशेनम।

● दिवगोन लडके का —ह्रंजे,

वसदीव राज़न्यन टूर्य गय ताज़य, कृष्णस दिवगोन तू लशेनम।*वखनय*।
वुफि आव कोतुर कुठि ब्यूठूखो, द'य ड्यून्ठूखो भागेवान।
मा'लिस तू ग्वरस निश ब्यूठूखो, द'य ड्यून्ठूखो भागेवान।
मा'लिस खोव्र्य ग्वरस द'छिनी, व्वन्य च़्य र'छनय नारायण।
वसदीव राज़न्य गुर्य गंड बागस, बडि ब्रह्मणू लाग दातस ट्यो'क।

म्वखत् चव डोलस तखते रवानस, ट्यो'क कर पाछाह देवानस।
बडि आख बोलत् कृष्णजुवुनि लोल्य, शोलय दिववुन ट्यो'कुय लाग।
ड्यक् प्रज़ोलुय ट्यो'क व्वज़ोलुय, म्वलुल ग'न्डिज़्यस का'न्कन पन।
दातो करुस ताब्यदा'री, ग्वरो गण्डुस ना'रीवन।
किश मिश रा'ठन वा'हरिथ डखिये, पक्षदार आ'ये ट्यो'क करने।
श्रीफल सू्त्य क'रिव आज़ि दर्शुन, सुफल लक्ष्मी वा'चे़नय।
वसदीव राज़्नि मनि क्रेंक् गो'बरो, स'न्य वाजि सू्त्य कर आच'मन।
द्वध् ग्यव् गुहि ग्रुमति नाबद् स्वम्बरिथ, अमृत सू्त्य कर आच़यमन।
स्वन् सुंद तर्पन द'छिनिस मर्मस, कर्मस ब्यूठुय नारायण।
नरायन जुवुन पोशि क्षुर बो'रमय, च़ंदनुव गो'रमय व्वमन हुर।
व्वमन हु'रिस ज्र्य छिय खानय, दानय दानय हुम सा'।
अ'गन् व'त्र अ'निमय ब'डि दुकानय, अ'गन् राज़् यो'त पानय आव।
वसदीव राज़्नि ब'डि दुकानय, गो'बुर छुख बलराम जुवोनुय।
कृष्णजुवन अ'नियो ग'छ़िथ पानय, अ'गन् राज़् यो'त पानय आव।
अ'गन् व'त्र अ'निमय बारे बारे, दारि दारि ग्यव हुम सारि म्यव् सान।
अ'गन् वत्र अ'निमय सरि ज़'न् क'दलय, अदलय महाराज सा'ब'ने।
ब्राह्मण त् य'ज़मन हज़ार बूली, अ'गन् वत्र र'टहस तूल्य तूली।
स्वर्ग् प्यठ् अ'निमय दिवता गा'रिथ, दिवगोन्नस किच़ च़'रहम अ'गन् व'त्र्य।
अपारि ओ'नमय गणपथ सा'ब गा'रिथ, विश्वामित्र ह्यथ च़ा'र्नि ब्यूठ।
पंडित त् ज़ितिश हज़ार बूली, दिवगोन्नस क्युत रो'टुख ग्यव तूल्य तूली।

वुनि २ विलि तय प'त्य आसमानय, सोरुय सामान ह्वथ प्रारान छिय।
कुल्यन लो'ग म्यव तय असि ओस वारे, कृष्ण्जुव् चानि पुछ़ि तारे गय।

• कोरि दिव गोनस (कन्या दिवगोन)

ह्वंजे, वसदीव राज़्न्य कज़ाख तीरी, पीरि प्यठ करयय कनि संस्कार।
उड़्न्य नालस किना'र्य म्वलुलये, करी़ कऱ्यय कनि संस्कार।
खास् कूर्य तास् बद्ल्ह वलय अंगन्य, व्वडि गंडय गोश पेश ना'ल्य च़ंदन ह्वर।
दा'न्तन सूतिय सुम कड्यय, रुम गंडा'यय ना'र्यवन् सूत्य
कंद्कल् जाफ्र्य जल्बं'द्य रुम गंडये, करी़ कऱ्यय कनि संस्कार।
सामान को'रमय गोजेवारे, ड्यजिहो'र गो'रमय व्यजिब्रारे।
माजि सो'म्बरोवुय पिली टोकुय, मा'ल्य गो'रुयय होकय स्वन।
मा'ल्य लोशवुय ज़ातुख नकाशि बा'ज़ी, माजि को'रुय टोक टोक शोख मंज़्ले।
सतन मो'हरन ड्यजहो'र कस कोरि क्युतये, यस कोरि गुम् ड'ल्य बुम् खंजरस
सतन मोहरन ड्यजहो'र ह्युतये बब् ग्वन्दरी। छाविहम स्वंदरी करय हो हो।
राज़वार ड्यजह'रिस ताज गोय थो'दये, लो'दये नारा'ञ तू छावे हम।
आयस थानस को'रमय साये, वुन्यक्यन पज़नय वायन वा'ल्य।
अर्कनदाज़ बरकन्दाज़ ग्वरन दाज़ पज़्नय, वज़नय रोजि तय पायली।
वाजन चान्यन जरहा चूनी, कूरी ज़ून ज़न ज़ोतान छ्ख।
अथि ह्वह शमशेर थाल वाय ज़ोरय, तमि सूत्य असरन वसि अंधकार।

• दिवगोन किस हुमस वनवुन (दिवगोन के हवन पर)- ह्वंजे,

ओम ब्रह्मादि दिवता आयि सोन यो'तये, नाराण ह्यो'तये आशेनय।

ब्रह्मा रक्त्वर्ण् जप् मालि व्यो'तये,	च़तुर भुज़ नाराण शंख च़क्र ह्यथ।
ईश्वर वृषभस ख'सिथ छु येतिये,	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
पूज़िथ ब'द्र् पीठ ओ'नमय रुतुये,	रूज़िथ कन थव मंत्रस कुन।
मन थव साविधान बेह् मंत्रय व्यो'तये,	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
आद्यासीमन्त करुन ह्यो'तये,	प'रिथ द्युतये ना'रीवन।
ग'न्डिथ हुम कर कमला व'तिये,	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
गूदान् सूती अग्न गव तो'तये,	दारि दारि ग्यव हुम सारि म्यव् सान।
तारि सुय भवनस कृपा व्यो'तये,	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
रे'शव वन् दण्ड वालुन ह्यो'तये,	ब्रह्मण्य द्युतये मंत्रा'विथ।
निश छख ब्रहस्पतस नीरिनय रुतये,	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
राज़् कुमार्य अर्घ ह्यह अथे,	स्वथे तरन्च बडा छय।
अभिशीख करन् सूत्य यश प्रावि रुतये,	गश गव असरन त् ब्यथि राक्षसन।
ख्वश गव दिवता बेठान् व'तिये,	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
बुदाह सादुन करुन ह्यो'तये,	आदन् ज़ायि हम ब'विनय जय।
नाद दिन् सूत्यन आयि पार्वतिये,	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
दिवच़व वस्त्र र'टिहय छे'तिये,	मा'ल्य माजि द्युतनय अभिषीक् ज़ल।
मां'ज़ि त् अ'लति अथ् चानि र्तिये।	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
सद्दूदर हम कर चांगि धूप व्यो'तये,	सूम गव सिर्यस सूत्यी ह्यथ।
भू मंडल्क्य ऋेष आयि सोन यो'तये,	नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
लक्षमी निर्नूदन करुन ह्यो'तये,	परुनुय द्युतुय नारा'णी।

स्मरण ब'विनय रुत ध्यान व्यो'तये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
ग'रि ओ'नमय ग'हनय फो'तये, प'रिथ ह्युतुय ब्रहमा'णी।
च़ा'रिथ तु गंडूनुय ह्यो'तमय रुतये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
माल्य सुंद ड्यजहो'र नीरिनय रुतये। सुय कूर्य पूशनय आदि अंत ताम्य।
तथ तल शूबिय म्वखतय फ्यो'तये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
ब्रहमण कन्या हूम कर क्वमा'री, सा'रिय शास्त्र पुराण ह्यथ।
वा'र्यविच दक्षणा ल'ज़मय तो'त्ये , नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
आ'ही बूज़िथ प्रावखय रुतये, प्रावखय भर्ता सुंदि अथ् स्वख।
कर्म रीखा कूर्य नीरिनय रूच़ये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
लालन तु रत्नन गो'रमय त्रो'टये, नालन अंदर ख्वश बोय छस।
थालस प्रेप्युन लो'दमय चो़'टये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
क्लशुक पोश ह्युत त'म्य लव हो'तये, प्रा'विथ नाराण संतुश्ट गव।
नमस्कार करिखी परन प्यखी रूतिये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
समिथ दिवता आय सोन यो'तये, न'मिथ करखी पादि बंदन।
न'मिथ प्रदक्षण चा़का'त्य व्यतिये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
सत ऋेश दिवता आयि सोन यो'तये, ह्यो'तुये क'रिनय को'मा'रिये।
दिवच़व वाखा वखनुय रुतये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
ब्रह्माहन च़तुरमुख् वीद वो'नुय रुतये, दिवता बूज़िथ प्रसन्न गय।
कर्म कांड वखनुख धर्मुक सो'थये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
साविधान आसिथ फल मंगि रूतिये, श्वभ फल दितिये नारा'णी।

मा'ल्य चा'न्य कन्यादान करुनु ह्यो'तये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
मा'ल्य ज़्यूनुय धन् तय माजि गोलुय रुतये, सफल सां'पनुख चोन कन्यादान।

● कन्यादान।

ह्यंजे, धर्मम्च बडा आ'शिनय र्‌च़ये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
ज़न्मस शुभ फल प्रा'विथय र्‌तिये, कर्मस चा'निस नमस्कार।
ज़न्म गोय वुद्यूतुय फल मंगि र्‌तिये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
धर्म राज़न कर्म् र्‌ख लीछिनय र्‌तिये, शुभ फल दितिये नारा'णी।
जन्मस मा'ल्य माजि आ'ह्या क'रहय र्‌छ्ये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
ज़न्मस सा'री आ'यिय यो'तये, कर्म्च खबर छन्‌ह कां'से केंह।
पूर्व् ज़न्म् फल लबान छिय ये'तिये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
पार्वथ परमीश्वर वसनय यो'तये, प्रजापति सूती ह्यथ।
प्रज़ायि रक्षपाल करन्‌य र्‌तिये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
लक्ष्मी त् नाराण व'थिये यो'तये, कर्मुक व्यचा़र करने आय।
कर्म्च कूर्य र्‌ख नीरिनय र्‌च़ये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
गंधर्व ग्यवने व'थिये यो'तये, र्‌त्य र्‌त्य शुभ फल वन्‌ने आय।
अछ़ रछ् नचा़न वछ़्ये यो'तये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
ज़न्म्च गंड् गंड नीरिनय र्‌च़ये। नवग्रह सहाये आ'शेनय।
ब्रह्मणव वीदा पो'रुये रुतये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।
मा'ल्यमाजि आ'ह्या क'रहय र्‌वये, गणपत त् वलभा सूतिय ह्यथ।
कर्म्क्य श्वभ् फल प्रावखय र्‌तिये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।

कन्या संस्कार को'रनय रुतये, न्यर्मल ब्वद चा'न्य सां'पिनय।

धर्मस ब्वद थाव ब्रोंठ कुन रू्च्ये। नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।

कन्या संस्कार। कन्यायि पार्वती तॖ रॖखमन ज़ा'निथ अस्तुति।

ह्वंजे, दछप्रज़ा पतॖनि तस वुमब्रारे, हारि छु कन्या संस्कार।

ग्वडन्य आव परमीश्वर तस वुम ब्रारे, शूबान त्रेन्यथॖर बसमी अंग।

ड्यकस प्यठ चॖद्रम तस वुमब्रारे, हारि छु कन्या संस्कार।

यान्य आव शशुपाल रूखि क्वमारे, तान्य शे'छ सूज़ॖन नाराणस।

कृष्णजू ब्रोंठॖ द्राव तस क्वमारे। हारि छु कन्या संस्कार।

पतॖ त'म्य ल्यूखनस रूखि क्वमारे, यो'त यियि शशुपाल म्यति म्वक लाव।

म्यति अज़ नेरिना शारिका सा'रे, हारे छु कन्या संस्कार।

यान्य सूज़ ब्रह्मुण रूखि क्वमारे, तान्य शे'छ वा'चॖस नाराणस।

बूज़िथ नाराण ब्रों'ठॖ द्राव ब्रारे, हारि छु कन्या संस्कार।

ग्वडन्य वोत नाराण रूखि क्वमारे, सूत्स ह्यथ दारुक रथॖ बानय।

बूज़िथ रुखमन व्यठान द्राये, हारि छु कन्या संस्कार।

अथॖ दा'रिथ वर मंगान शारिकाये, पादॖ पंकज ओस पीतांबर

रुमॖ प्यठॖ गुमॖ व'थ्य तस वुम ब्रारे, हारि छु कन्या संस्कार।

शारिकायि पूज़ा करनि बेछाये, दुपॖ दीफ अर्ग पोश चॖदन ह्यथ।

बो'ड वर दितम गछॖ बु द्वारिकाये, हारि छु कन्या संस्कार।

गरस कुन चॖरन ह्युत रूखि कुमारे, ताज वोत कर्ता रथस प्यठ।

शाल शशुपाल जरॖास्यंद गोस लारे, हारि छु कन्या संस्कार।

ब'डिथ नियन रूखमन सारे,	ग'न्डिथ त्रोवुन राज़् रुकमी।
सीना ह्यथ शशुपाल गोस लारे,	हारि छु कन्या संस्कार।
कृष्णजुव मथरायि दिच़मय व'न्या,	को'र कुबुज़ि कन्या संस्कार।
को'र हारि बजि कन्या संस्कार।	हारि छु कन्या संस्कार।
वसदीव जुवने दिच़्मय व'न्या,	बलरामस ह्यो'त वुछेयान।
कूर सा'न्य नेरिय ड्यक् प्र'न्या,	कृष्णजूव मथरायि टोठ्योव गोस्यन।
हारि छु कन्या संस्कार,	कोरि हारि छु कन्या संस्कार।

● प्रेप्युनस तु् अनकनस वननावुन (नैवेद्य पर)

१.ह्यंजे,ब'ड मा'ज लदि प्रे'प्युन थालस,	बासमथ प्वलाव छ'त्रहार।
हश् न्वशि अछ़ रछ़्य,	अ'गनस ख'च़य प्रा'प्युन ह्यथ।
२.बागिवानस गो'बुर ज़ाव ये'तिये,	थाव मालि प्यत्‌रन अनयकन।
३.वसदीव राज़्नि क'बील गो'बरो,	हा'बिलि प्यठ थाव अनयकन।
४.वसदीव राज़्नि व्यशवामित्रो,	प्यतरन थाव मालि अनयकन।
आकाश विगिने रथ् छय फेरान,	ब'खत्यन छिय मंगान भावना।
५.थज़े प्यठचे दुर्गा वारे,	सनि वास्यन त्राव अनयकन।
६.मा'ज पा'र्य ल'जियो कुकिले ह'टिस्य,	विज़ने चो'टिस्य प्रारान छे'य।
हावुस प्र'प्युन थावुस चो'टुय,	त्रावसी गोस् तु् बोज़सी वीद।
अग्न वुफरा'विथ अथिफो'ल ह्यिव मालि,	ख्ययिव मालि पादशाह बाग्च दछ
यियिव मालि ब्रह्मणो सानि छुव संगा,	न्यरमल गंगा वा'चा'वो।
पंडितन द'छिन ब्रह्मणन ति पज़े,	तवय रज़े स्वर्ग् मंडोल।

सराफ क'दलूक्य सराफ सा'रिय, सन् त्रुवाह रु'पयि ह्यचख चा़र्य चा़र्य।
कबीर जियो गंड मुच़र कुछे, बा'गूर द्रछे द्रछे द्यार।
अश्वमीद यज्ञन्यस क्या क्या पज़े तवय रज़े स्वर्ग् मंडोल।

• दक्षणायि पत् आ'ही त् आशीरवाद

ह्यंजे, खास् सामानस करु परवाना, द'छिनि विज़ि बलिदाना द्राख।
दान् विज़ि कां'सि क'रिज़ि न् अपमाना, तिय छुस पानस ग'नीमथ।
स्वन् सूंज़ि रिकिबे रुपयि द्यू द'छिने, व्वन्य च़े र'छिन्य नारायण।
द'छिन दितिथ मालि द'छिनि नरे, आय त् आरोग्य वा'चीनय।
ब्रह्मणन दितिथ मालि वस्त्र वास, आ'सेनय रुमय ऋेशुन आय।
ग्वरस पोंबूर ग्वर् माजि पो'टये, धर्मय नारायण जुव'ने।
ब्रह्मणन द्युतुथ मालि नर्मद् पो'टये, लालन त्रो'ट छुय शोल् दिवान।
ब्रह्मणन द्युतुथ मालि नर्मद् पो'टये, धर्मय नारायन जुव'ने।
ब्रह्मणन द्युतुथ् मालि बद्लिथ त्रामा, स्वर्गचि का'मा सां'पून्यो।
ब्रह्मणन दिच़्थ मालि रुपयि त् मोहरय, शोहरथ ग'यिय संसारस्य।
अज़ च़्य सा'न्पनुख पो'त्रय मोलुय, य'न्द्र दीवगोनुय प्रोवोथम।

दिवत् गूल्यवालनस (चावल के गोले के विसर्जन पर)

ह्यंजे, दिवत् गूल्य'न संज़ ह्योतूथय, मंज़ ह्योतूथय परमीश्वर।
दिवत् गूल्य'न थाल चो़नूथय, लाल ज़ोयय रंग मा'लीये।
न'मिथ तुल्यथय दिवत् गूल्य, स'मिथ त् वसवय यारय बल।
दिवत् गूले'न अलुन त् वलुन, फ्वलुन त् फ्रेच़र दियेनय।

दिवत् गूल्य क'डिथय बडि दरवाज़य, राज़य गणेश सूतिय ह्यथ।
दिवत् गूल्य'न ब्रोंठ ब्रोंठ शमा, पत् पत् ब्रह्मा वीद परान।
ज़ाजि पुलहोर छूनि अ'डिन्य-खोरन, राजरे'न्य सा'न्य व'छ़ यारय बल।
वसदीव राज़्न्य संग शाव'रिये, लुकृ लछ वो'थूये यारबल।
तरंग् ब'रिथ अर्ग् त् पूच़ ब'रिथ स्यंदरे, यंद्र्न्य न्वश व'छ़ चंद्रय यार।
राज़् सूंज़ि राजस्यनि म्वखत् हार हटि, रा'ञ व'छ़ पा'निस च़ट'ने।
गण्पतयार अ'न्द्र्च आगिवान कुजिये, बाग्यवान सा'न्य व'छ़ यारबल।
दिवत् गोल्यन नाबद मीशे, लूशे लूशे बा'गूरि ज़े।
व्यतसता'यी ब्वछि च़'जिमय, क्वछि लाल ग्युतथम त् ला'शेनम।
वसदीव राज़्नि दा'न्तवि डबे, अ'स्य वा'त्य पनने लबे तल।

स्वर्गवासी पित्रों तथा दादा दादी के लिए वनवुन।

(दिवतगूल्य यारबल लेने से पहले।) स्वर्गीय पुरुष या स्त्री का नामः-
वसदीव राज़ो कलमदान् सो'नयो, तोर कांसि वो'नुय नो गरि छ्य शा'द्य
दिवकी मा'लेय लोंगि हो'ल स'ञोयय, तति कांसि वो'नुय नो गरि छ्य शा'द्य
अ'सि को'र खांदरा त्वहि कुस वनिवो, तति कुस अनिवो मनना'विथ।
कावस अथि लदयो ट्यो'क त् ना'रिवन, हावस ओसुख त् वातन ना।
वुन्य वुन्य विलि तय प'त्य असमानस, सोर सामान ह्यथ प्रारान छिय ।

दो'यिम खण्ड (दूसरा भाग)– विवाह

• वा'न्ख पारून्य। (चोटी बनाने पर)

ह्यंजे, बाज़र् ओ'नमय फ'लिल् त् हिये, कूरे वार् वार् मला'यय।

लंदन ये'लि गयस चन्दन ह'ट ता'रमय, त'थ्य गरना'वमय कंगने हन
चंदनूचि कंगनि सूत्य कंगन्य वाल्ये, मलये चीव चंदन त् अ'तूरय।
कंगन्य अ'निमय छानय वानय, म्वखतय दानय वुरा'से।
वसदीव राज़नि छानय वानय, कूर छख दिवकी माजे ह्यूज़।
रूखमनि अ'निनय ग'छ़ित पानय, म्वखतय दानय वुरा'से।
कंगनि चानि छिय स्वन् संध बरिये, हारि ल्यूखुय कोरि व्यवाह कार।
चंदनूवि कंगने ज़ठ वाल'से, अठ पा'रा'यय पाटेव्य।
रुम छिय ज़ा'विल्य सुम स्य'ज़ द्राये, शारिका आ'ये वा'न्ख पारने।
वा'न्ख पार'ये का'र थाव थ'ज़ये। टूठयय ब्रा'र तय भवा'नी।
वा'न्ख पार'ये रुमनूय रुमनूय, कवय छिय गुमनूय ग'ल्यगछ़ान।
वा'न्ख पार'यय लबे लबे, द'छिने दारि त् डबे प्यठ।
वा'न्ख पार'ये फ'लिल् त् हीये, यूर्य हय यिये चोन अर्ज़न दीव।
भिशमक राजुन फ'ललि त् हीये, वसदीव राजुन अर्ज़न दीव ।
वा'न्ख पार'ये द'छिनि दारे, हारय ब्रारे स्यदय वा'न्ख पार'ये
वां'ख पारयय मीनिथ गज़य, म्वखतय रज़य वुरा'से।
निचि २ ज़ा'ल्य वा'न्क् प्रा'ट्य पन् पारये। तारयय लोहूरुक बुह्री साज़।

वसदीव राज़ुन पत् पत् सार्यय, रोग्न्य कुल्यचि त्(दो'स्मुत माज)द्वदकी् हर।
बडि दोह् लूकि दोह् वा'रिव चा'ञ गारये, तार्यय लोहूरुक बुहरी साज़।
वा'न्कन चान्यन लछ् ब'द्य फे'तिये, वा'रिव ह्ययतिये आशेनय।
स्वन् स्ंज़ि कंगने रुव्प् स्ंद्य ब'रिये, प'रिये वा'न्क्य पारा'ये।
वसदीव राज़ने कूर्य स्वन्दरिये, प'ठिनय ड्यक् तय ग'छिनय वार।
ना'लि् दिमय खा'ल्यमाल ब्वडि दिमय ज़रिये, प'रिये वा'न्क्य पारा'ये।
लाल् स्ंज़ि चोटि छुय म्वखतुव दोवुय, सदा सोवुय आशेहं। [1]संशोधित

● तरंगस वनवुन (तरंग को)

हंजे, स्वमन कपसा ववनय आये, सुभद्रायि ह्ंज़े यछ़ाये।
वसदीव राज़न्यन डारन द्राये, चूर दिनि द्राये ग्रीस्य बाये।
शबनम लवि सूत्य ख'सिथ आये, सुभद्रायि ह्ंज़े यछ़ाये।
डालि वोतुय तोस् बालि व्यछ़नोवुय, मालि करय तरंग् सीरि करय पूच़।
र'थ्य वो'थ तोस् त् अ'थ्य व्यछ़नोवुय, त'थ्य करनोव मे तरंग् त् पूच़।
येति ग'यस वोर्व्य वान अ'थ्य ह्यथ प्रेचि़ हन्न, तति ओ'नुम त्वर्दार तरंग् त् पूच़।
वोर्व्य ओ'नुय त्वर्दार,दो'ब्य ओ'नुय मायिदार, भखतावार कूरी गंड तरंग् त्. पूच़।
मा'ज भवा'ञ आयि म'ज़य भव्स'रिये, महारे'नि क्युत ज़'रिये तरंगा ह्यथ।
मुहरा छ़लनस वार् वार् छे'लिज्यस, ओ'ब्र मायि क'र्यज़्यस अन्द् वंद तान्य।
दो'ब्य ओ'नुय तरंगा गाह लो'गुय त्रावने, ताह को'रुय माजि भवा'ने।
छुय कल्पुशस मो'हरय दोवुय, सदा सोवुय आशे हम।
मोहरा गंड्व्ज़ वार् वार् ग'न्डिज़्यस, बं'द्य कल् ग'न्डिज़्यस अंदवंद ताञ।

क्न्द्र् कल् जाफ़्र्य ज़्यल ब'न्द्य रुम् ग'न्डि्ज्यस, ब'द्य कल् ग'न्डिज़्यस अंदवंद ताञ।
तार् दार वुड्ने बडि वानय छय, कूरे जान छय छावे हम।
अद् व'ल्न्य पूचि़ हन वोव्र्य वान छय, कूरे जान छय छावे हम।
तरंगस चा'निस ताह गव थो'दये, गों'डये भवा'नि त् ड्यक्ब'ड आस।

● वर्दनस वनवुन (वस्त्रों पर वनवुन)

ह्यंजे, वर्दनस चानिस स्वन् बूत् का'री, हा'री छावुन पज़ेनय।
नाराण ज़ूव्न्य स्वन् बूत का'री, कूर छख वसदीव राज़'नी।
बोय चोन कृष्णजू बब दशरथ्य, हा'री छावुन पज़ेनय।
वर्दनस चा'निस स्वन् स्ंद्य टे'चिये, व्वथि ड्यक् ब'जिये लग्नस खस।
गहनस चा'निस निचि निचि ह्न्रय, कुसुय कूर्य ब्यूठ्य स्वन्र्य वान।
डायि महर् ड्यज़्हो'र गो'रुय बब्ग्वंदरी,छाविहम स्वन्दरी करय हो हो।
पिटार् क'डिथ गहनय गंड्ये, सितार बलन्द नेरे हम।

(बरात आने पर) महाराज़स वनवुन, लग्न संस्कार । ह्यंजे-

वुशक् द्रायि ह्यलि तय दानि कर पूरे, दूर्युक येनिवोल कर वाते।
वन के ककवय त् सर के प'छिनय, अ'छ हो लोसम त् कर वातख।
वुछान वुछान लोसम ल्ये, साह्यब ज़ाद् सोन यिये कर।
खन्बल् सोदागार व'थ्य नावे, म्वखतय दावे म्वल करने।
पूरे कने न'ब्य को'र व्वदय, दूरे स्वन् सुंद बो'धय आव।
ज़नक राज़नि न'ब्य को'र व्वदय, दूरे स्वन् सुंद बो'धय आव।
पूरे कने खो'तखो सियों, पच्छमय कुनुय ज़्च्ये त्राव।

- पुष्करनाथ रैणा

वसदीव राज़्नि खो'तखो सिर्यो,
गंधर्व लूख आव वायन बाजे,
शक्तिपात् दृष्टि वरु कर प्रसादा,
ज़ोनुन त् मोनुन ज़गत्चि माजे,
ओर् कनि जटा योर् मुकटा,
ओर् कन् त'रकि योर् कनवाजे।
सर्वमंगल मेलि सूत्य चानि वरनय,
त्रभवन भरनय आव धन् दाजे।
सिरी भगवान आव तीज़् सूत्य भरनय,
रचि़ रचि़ ज़ूव् द्रायि मंज़् तीज़् ताजे।
च़ंदन त् क्वंग गुश क्वंग्चे काजे,
कृष्ण् वेश्ण् नाव खन म नचे वाजे,
डारूकि ह्यंदव्यंद बाग्च म्यथिये,
नाव् पचि र'थ्य तय नाव् पचि वारय,
शांद दिमय शांदगों'ड, मखमल तकिये,
व्यथ् बल् अ'न्द्रय आव माहराज़य,
बंगा'ल्य नावन हा'न्ज़ छिय ग्यवान,
हा'न्ज़व को'रयो द्रुब् वायोनुय,
शाह आव स्वंदरे त् लूकन गय ठठिये,
कोह् तल् सिर्ये द्राखो नो'नये,

दशरथ राज़्न्यन ज़्चय त्राव।
त्रे'न भवनन हुंद राजे आव।
साद् शाहज़ादा आंगन च़ाव
त्रे'न भवनन हुंद राजे आव।
ओर् वासुक योर् च़ंदन हार,
त्रे'न भवनन हुंद राजे आव।
नत् क्या बनि सानि करनय सूत्य।
त्रे'न भवनन हुंद राजे आव।
यंद्राज़स मुकट जरनय आव,
त्रे'न भवनन हुंद राजे आव।
ओमकार रूपस छि द्वार पूज़ा,
त्रे'न भवनन हुंद राजे आव।।
व्यथिये नाव हय प्रारान छिय।
नाव् पचि क'दलन तारय दिथ।
स'खियो सा'ल कर ड'ख्य नावन।
परंदन स्वन् दरवाज़य ह्यथ।
देवान सुंद यन्यवोल हय आव।
हावयो होवस्त्युक जाव्योनुय।
महाराज़ शालमा'र ब'ठिये आव।
ब्रह्मा को'नये सोज़ोयो।

- पुष्करनाथ रैणा

कन् वाजन आव म्वखत् अ'लरावान, रुम रुम गुम् शेहलावान आव।
स्वन् सूंज़ि नावे रु'वप् सुंद हम छुय, नम रठ गणपथ सा'बस कुन।
स्वन् सूंदि तोतो म्वखत् जरय पखन्य, यि हय आव दक्षनुक जानावार।
नीलम् क्रेंख लोगुम स्वन् सूंज़ि वाजे, त्रे'न भवनन हुंद राजे आव।
विश्वामित्र बबस त् नूर महल माजे, दूरबीनि कंदहा'र्य राजे आव।
समंदरस सो'थ ह्युत चंदन लते, गणपथ सा'बनि वते आव।
समंदरस सो'थ ह्युत क्रूम् अवता'री, दशरथ राज़्न्य सा'रिय आय।
अ'ड्य आयि व्वखल्यत् अड्य आयि नावन, हावसगीर आयि ख्रावन क्यथ।
अ'सि क'र राज़न सूत्यन दूस्ती, पूस्तीन नरि अ'लरावान आय।
हबय क'दलस म्वखत् दरवाजय, सानि कोरि स्वन् महाराज़य आव।
कन् कड कन्वाज्य लाय असमानस, ख्रम् दिव रूम् किस मा'दा'नस।
डाय सास लूख प्'कि अथ मा'दानस, खो'त आसमानस गरदि गुबार।
तति द्राव सुलि तय यो'त वोत च़ीरी, यिहय ओस नीरे पोश छावान।
तति द्राव सुलि तय यो'त वोत शामन, वति ओस जामन ताह करान।
तति द्राव सुलि तय वति ब्यूठ कथन्य, यति छिस मालय अथन्य क्यथ।
शब रोज़ तारुख दोहय छुख खसान, वनता घर् कति आसान छुय।
दशरथ राज़नि वुछमख गुरिस खसान, हशि ड्यूंठनक ज़न सिरियि खसान,
स'दर् खो'त ल'द्र् फो'ल कोरि हुंद लोनय, यंद्राजुन ये'निवोल हय आव।
कोरि हारि लशेनम पननुय मोलुय, हटिस क्युत ओ'ननस म्वखतय हार।
कनन ह्युतनस ड्यजहो'र,व्वडि ह्युतनस सोलय, यंद्राजुन ये'निवोल हय आव।

- पुष्करनाथ रैणा

क्यमखाब वथरय दोरे दोरे, प्यठय बान्चे कोरि हय आव।
क्यमखाब वथरय दोरे दोरे, कोरि आव कृष्ण जुवने।
वथरोवमय ज़नकय राज़्नि दोरे, कोरि आव कृष्ण जुवने।
स्वन् डबि अ'न्दर्च खास म्वखत् जोरे, प्यठय बान्चे कोरि हय आव।
अपारि फो'लखो दानिवल प'त्रो, सानि वारि फो'लखो म्वखत् छत्रो।
ह'स्यतिस ख'सिथ मद्पोन्य चवान, ख्यवान आहम नागर्य पन।
राजे बब् सुंज़ि राज् को'मारी ताज् रोज़ राज् यन्यवोल हय आव ।
ह'स्यतिस चा'निस स्वन् अंबा'री, प्रछ़्तोस कमि बाज़ा'री आख।
ज़नक राज़्न्यि रथ सवा'री गोबुर छुख दशरथ राज़ोनुय।
राम चंद्रन संज़ को'र रथ सवा'री, प्रछ़्तोस कमि बाज़ा'री आख।
महाराज़ आव तय चाव बजि दोरे, म्वखतुव छ'त्र छुस लोरे प्यठ।
रोशनाम बट् आयि पोशि व्यमानन, छुख दामानन मोहरय दोव।
राज़् पोत्र् शोरवानि शूबनय खोरन, गाह चोन दारयन तू दरवाज़न।
राज़ पोत्र् चाख मालि बजि दोरे, न्यछि [नख] प्यठ स्वन् सुंद पा'ज़्य ह्यथ।
राज़ पोत्र् चाख मालि बडि दरवाज़य राज़य गणेश सूतिय ह्यथ।
लालो तोरमख बालव मंज़िये, लालो क'रमय कशीरि जाय।
लाल् छु यिवान बाल् छु तरान, माल् छु करान गुलाबन।
शेंख शब्द बूज़मय व्यथि अपारे, गो'न्द प्रज़नोवमय व्यजब्रारे।
दूरि आव लाल् तय गं'ज़रितोस मालय, प्रछ़्तोस कमि शहारय आख।
वासदीव राज़्नि हां'कलि ठस गव, ह्यस् रोज़ दुनियादार हय आव।

ह्यंजे वनवुन हियमाल — *पुष्करनाथ रैणा*

बागस सा'निस गुल फ'ल्य ताज़य, सानि कोरि म्वखत् माहराज़य आव।
तिल् पा'ज़ारस म्वखत् जरा'यो, यथ गर् वथ क'म्य हा'वयो।
यपारि बाल्ची गिल् कोत्रिये, अपारि बालुक लाल् हय आव।
कोरि क्वमारी पतिमे सरने, लोल चोन वोतुम बरने तल।
अछ़ आंगन छुय भूज़न साने, आख कर्म लाने गोख ज़ोरावार।
महाराज़् आव तय च़ाव बजि बरने, पाठ् पूथ्य वा'ल्यतोस परने किच़।
च़ाख मालि ज़नक राज़्नि बरने, गो'बुर छुख वसदीव राज़ोनुय।
कश्यप रेशिनी कूर छय वरनी, पाठ् पूथ्य वा'लितोस परने किच़।
सो'न्य च़ाव आंगन स्वन् सूंज़् वतय, सो'निस म्वकल्योव अतयगत।
सो'न्य च़ाव आंगन वथ्र्य तोस प्यंजे, लंजि सान ज़ाफल बदलो'व्यतोस।
सो'न्य, सो'न्य मीलिवो मंज पुशिवारे, संज़ लो'ग हारे त् बुलबुलस।
सो'न्य च़ाव आंगन जा'गीर गामन, जामन वुछतोख ज़ेबा'यी।
सो'न्यमुल् बायो सो'न्य सो'न्य कवये, सो'न्य सा'न्य स्वन्वाजि म्वखत क्रेंख
विश्वामित्रस बबस तय नूरमाल माजे, कोब्ल्य कंद्यहा'र्य राजे आव।
मो'लुल क्रेंख लोग मे स्वन् सूंज़ि वाजे, त्रे'न भवनन हुंद राजे आव।
सालस छि आमृत्य राज़् च़्वपा'री, ह'स्य गुर्य त् रथ सवा'रिये।
आख च़ाख आंगन ल'गन्कि हीतय, भूतन दिच़्थ मालि रत्यछफ।
आंगनस सा'निस दछिदार ड'खिये, प'क्षदार सो'न्य सानि आंगन च़ाय।
पल्दार पोंबरि छव मालि नखन्य, तान्य रूज़िव दछि डखिन्य तल।
वुठ छिव चवान दिद्र्य होकय, बुथि छव् ननान ओ'मदय चाल।

- पुष्करनाथ रैणा

गनपथ रायिने जन पथ रेशो,
त्वहि डींशिथ लो'ग भाग्यन जय।
पाछाह गो'बुर त् वज़ीर कूरी,
त्वहि द्वन जूरी बराबद।
पादशाह कूरी खो'तये टारे,
वज़ीर वोतये दारे तल।
हा'र ख'च़ पंजरस ओर् कुस वाल्यस,
ओर् यियि तोत् तय बोलनाव्यस।
लोहूर्य तोत् तय कश्मीर हा'री,
तोह्य द्वन कति गय पा'री ज़ान।
गो'न्द चोन हथ तीर् सथचूनि ला'गिथ,
वां'कलि डबक् आव टिक् ला'गिथ,
अशकरि जिगरो लशकरि साल छुय,
कश कड तीरे त् कमानस।
यियिव मालि द'सिलव दियिव द्वसि ह'टिये,
सानि छि फ'लिल् न'ट्य ब'र्यब'र्य,
ज़नक राज़्नि पशमीन प'टिये,
ताकचन थ'विमव ताह क'र्य क'र्य।
शाह आव स्वंदरि त् लूकन गय ठ'ठिये,
सानि छि फ'लिल् न'ट्य ब'र्य ब'र्य।
सतरंजि छो'चि तय का'लीन ज़ीठिय,
बागस बीठिय सोदागार।
सतरंजि वथरिमय क्वल् डंजि रादस,
शीरीनि साल को'र फरहादस।
ज़नक राज़्न्य का'लीन ज़ीठिय,
दशरथ राज़्न्य सोदागार।
कनगूछ व्वपल हाख वोलमय नीरे वन,
वथरय वीरे वारस तल।
र'छमख बबि तय छिहम टा'ठ्य,
वथरय किशमिश रा'ठन तल।
छिहमय बबस तय माजि हूंज़ आदन,
वथरय बादाम कुलिन्य तल।
छिहमय ब्यन्यन बायन हूंज़ वज़ीर,
वथरय ख'जूर कुलिन्य तल।
श्रो'न्य गोय रो'न्यन बे'यि रो'प् ज़्वंगलन,
वथरय पादशाह बंगलन मंज़।
तल् सतरंज् तय प्यठ् डूरि खासा,
सबि वथरावय अ'तलासा।
रंगरव्यव हे'तियय प'टि वाहरा'नी,
कहि किर्यमिज तय गुलि अना'र्य।

वस पत् सबि बल बत् शेरनावय, बासमति प्वलाव शेहलावय।

बतस वनवुन (बरातियों के भोजन करने पर वनवुन) ह्वंजे,

असि र'छ कूरा तफ क'र्य क'रिये, बत् टा'क्य ब'रिज्यस ब'र्य बरिये।
असि क्या तो'हि क्युत रो'नमुत आसे, हांजून्यव दो'ग दित्य स्वखदासे।
खासन क्युत रो'न बासमति ब्योलये, मित्रन किच़ र'ञ छ'त्रय हार।
गोरि ह्रंदि ओ'न मे' द्रध् च़ड् वोरुय, सोरुय दामा च'त'मो।
बासमति प्लाव ख्यह च़ा'र्य च़ा'री, असि क'र क्वंग् तरका'रीये।
मिठ् प्वलावस क्वंग चलावस, बासमति प्वलाव शेहलावस।
नीरि वोल व्वपलहाख च़ीर्य लोग पाकस, बत्‌हन खेयिवु मालि हाकस सूत्य।
वर्‌मुलि ओ'नमय कर् डा'ल्य डाली, वाज़न ध्युतमय च़ा'र्य च़ा'री।
ख्ययिव मालि राज़ो आ'ल् सुपा'री, असि क'र क्वंग् तरका'रीये।
असि वोत सोरुय जा'गीर मुफ्तुय, शुफ्तस वुछ्तव स्वाद क्या छुस।
असि मालि रो'नवा सरतलि बानन, तोहि ल्यलबानन ज़ियाफ़्त।
वाज़व दम को'र प्वलाव देगे, गुलाब थरि ह्रंग्य वा'रिव्य आय।
असि र'न्य त्वहि किच़ न'व तरकारी, मीथ पालक तय च़ेर् बादाम।
मा'ज पार्य ल'जियो जामय गेरन, खोबा'न्य च़ेरन स्वाद क्या छुय।
थालस बत तय प्यालन दाल छय, साल छुय ला'लि ह्रंदि मालेने।
वां'कय लंजन म्वखत् वुरा'यय, क्रे'न्जन बासमथ फिरा'ये।
डारुक म्वंग तय डल्‌की नदरी, दिदरी बब छुय सब होरान।
कटव को'र अरज़ा विशण् भगवानस, त'म्य वो'न चम्बानाथस कुन।

छो'ट् प्यठ् लीस् खो'त धर्म् सभाये। चम्बानाथ्नि आग्न्याये।
सरिज राज़दानन चामन क'ड क्राये, सिरिज मो'ट्य दो'पनस छ़ाये थव।
मल्खाह अ'न्द्रय कृननय आये। चम्बानाथ्नि आग्न्याये।
हरगुपालस वकील सरदारस, राक्षसस क'ति प्यिय दिवता ब्वद।
कठ म्वकला'विन बजि बलाये। चम्बानाथ्नि आग्न्याये।
त'म्य को'र ऋश कनिकन हुंद व्वपाये, चम्बानाथ्नि आग्न्याये।
हाखा दाला न'द्र्य मुशकाला, रे'शन हुंद साला गनीमथ।
अ'स्य हसा' करहोय वतन गुलका'री, अ'स्य हस' द्रो'जरन मा'रिये।
त्यलि किस वुछ्ज्यस न् दुम दवालस, अ'ज़िकिस वुछ्ज्यस हालस कुन।
बुज़े मनूने व'लिये ज़ादो, क'लियस वुछ्तोस स्वाद क्युथ छुस।
युस आ'स्य त्यलि अ'स्य करान व'हरवा'द्य सालस, ये'ति मसनंद को'र लालस क्युत।
यीमिया, कीमिया, मूतिया बागस, पानिचि जो'यि तय ब्ययि सबज़ार।
चूनि लरि महीन् जो'र शाह गिलकारन, ये'ति मसनंद को'र लालस क्युत।
दिदरि छ्य बोलान प्रातः कालस, ये'ति मसनंद को'र लालस क्युत।
बबि र'छिम्च्य कूरे हा'री, सबि वथरावय खास् क्यमखाब।
च्य हय यिवन् तय च्य हय आदन, च्य छख बाग्च बादाम पोश।
च्य हय बबस तय माजि हूंज़ वज़ीर, वथरय खजूर कुलिन्य तल।
अथ् छ्लुन घ्रुतमय अमृत वोनिय, तुज करन्य दिच़मय चंदन लूश।
ये'ति प्यठ् थावमय तुलमुल वा'लिथ, तति रोजुस अथ् दा'रिथ त् क्या।
य'ज़मन छु कन्यक प्रीति पालान, माहराज़् छुय अथ् दारान।

वसदीवराज़् छु कन्यक प्रयति पालान, अर्ज़न दीव छुस अथ् दारान।
कनिदान को'रुथ मालि नारायनो, भूमिदान रो'टुथ ब्रह्मणो।
युस करि माग् श्रान न्यथ पूज़ि साल्यग्राम, सुय करि सतवुहुर कन्यादान।

● व्यूग - खांदरस प्यठ

ह्यंजे, व्यूग लेखयो सिर्यि प्रकाशो, नकाश आव व्यूग लेखने।
व्यूग लेखोयो समि समि जाये, शाये हरिचंद्राज़्ने।
वीगिस चा'निस शुराह गरय, मां'ज़े मरेदय बर'यो।
व्यूग लेखयो जानवार क'रिथ, पान् भगवान लेखने आव।
व्यूग लेखयो शिवनाथो, नकाश आव व्यूग लेखने।
व्यूग लेखयो श्री बाल कृष्णो, माल् ह्यथ छसयो प्रारान।
व्यूग लेखयो लाल् अमीरो, मूरथ छय श्री बालकृष्णनी।
अछ् रछ़्व ल्यूख कछ़्कर व्यूग्य, राजरानि माजि थो'व वीगिस प्रास।
वीगिस चा'निस कस्यम पोश् थरे,वखनय गरे ल्यूख हरिचंद्रराज़ने।
ओर् आव नाराण असि लोग शेरे, नेरुस नरि पान आलवसे।
ओर् ओयय साहिब दौलथ, योरय नेरुस आलथ ह्यथ।
दियिवमालि टिक् ड्यकस ट्यो'क लागोस, अद् वसि रामस निश सीता।
ह्यहर सूंज़ पोंब्र् भवानि म्वखस, कूरी स्वखस वा'च़हम।
वीगिस चा'निस चंदन ड'खिये, ईशरस निश वसि राजकुमार्य।
वीगिस खा'रमख मा'ज पार्वतिये, वार् रोज़ भगवानस सूतिय।
सती सरस दिच़थय डालय, रत्न् चां'गिज आलवसे।

रत्न् चा'न्गिज आलविसिय मीनावतीये, सतिये वोतुय वेवाह काल।
व्यूग ओस प्रारान वीगिस ख'तिये, सतिये वोतुय वेवाह काल।
रत्न चा'न्गिजि आलविसि मीनावतिये, स्वन्सुंदिस थालस रुव्य् सुंद च़ोंग।
शेरि प्येठि आलवुस नेरनम ह्यतिये, स'तिये वोतुय व्यवाह काल।
अथ दिव नवीदस प्रास दिस स'तिये, सतिये वोतुय वेवाह काल।

दार् पूज़ायि प्यठ वनवुन

ह्नंजे, ग्वड् आव ब्रह्मा कलशे विज़े, अद् आव नाराण दार् पूज़े।
गनपत सा'बूनि य'म्बूज़ल दसतो, खस्तो कर्यो दारय पूज़।
महाराज़ आव तय चाव बजि बरने, पाठ् पूथ्य वा'ल्तोस परने किच़।
महाराज़ आव तय बर थव व'थिये, लतिये सेना प'तिये ओय।
सिरी आव सतन ह'स्त्यन ख'सिथ, वसिथ करुस मालि दारय पूज़।
दार् पूज़ कर मालि होव्र्यकिस हंगस, अथ राज़् हंगस नमस्कार।
पोशि पूज़ कर मालि दारि तय हंगस, आ'लि तय रुंगस छय दारय पूज़।
दार पूज़ करुस मालि सूत्य अलाल खानस, बुम् कमानस छु स्यंदरे ट्यो'क।
दार् पूज़ कर मालि रे'श कुमारे, पोशि पूज़ कर मालि साल्यग्रामस।
यज़मन सुंद्ये लोहूर्य तोतो, होव्र्य हंगस पूज़ा कर।
ज़नक राज़न्य रेश कुमारे, स्वंदरी करयय दारय पूज़।
अर्जन दीव व्वदन्य बलराम ग्वंदरी, स्वंदरी करयय दारय पूज़।
आकाश् व'छ्यो अमृत धारय, वारय करयो दारय पूज़।
वैकुन्ठ मंज़ द्राव चंदन दारय, वारय क'र्यज़्यस दारय पूज़।

हीमाल छ्कान लाल ब्रोंठ् तय पतिये, वार् वार् करयो दारय पूज़।
चानि सतसंग् सूत्य गंगा धारय, दारस कर्म् क्रूल खार वार'ये।
रंग् रंग् बर हंग द्राव गंग आरय, वारय करयो दारय पूज़।
हर् दृष्टि दारस बन्योव हरद्वारय, दास् भाव् दासस बन्योव कैलास।
क्रूल खोर लब् गय नब् चे तारय, वारय करयो दारय पूज़।
भीद् रसिति शिव् वीद्कि ओमकारय, शुकदीव त् व्यास छुय वीद वखनान।
गुणवान् योन्यस छय स्वन् तारय, वारय क'रिज़े दारय पूज़।
नवद्वार मो'च़रिथ धारणायि धारय, जटादार सोनुय संकट कास।
पादन तल बो इंद्रे'य मारय, वारय करयो दारय पूज़।
असि दरकारय कति छह हारय, मोहर् त् द्वारय ठेलि बर्य बर्य।
कल् प्येठ्य छक्होय लूभ् रसिति शूभिदारय, वारय करयो दारय पूज़।
वुज़ सोन वैकुंठ बन्योव वार् कारय, कूटी मंज़् द्राव कूटी तिर्थ।
चन्दनुक स्वभाव द्राव दिवदारय, वारय क'रिज़े दारय पूज़।
ल'गनस वेल् वोत विघन् निवारय, अ'गनस प्यट छ्यि प्रारान दीव।
गुणवान सोन खस हेरि वार वारय, वारय करयो दारय पूज़।
कृष्ण परमात्मा छुख निराकारय, प्राण रूप् ना'डियन छुख फेरन।
व्यशयन धारवुन छुखा नवद्वारय, वारय करयो दारय पूज़।
अन मालि पुशो बबरे लोवुय, सोव खसि हेरि तय वथरावोस।
ज़नक राज़्न्य बबरे लोवुय, वखनय दशरथ राज़नि वथरोवुय।
कूरी दिमयय यंब्रज़ल न्योवुय, सोव खसि हेरि तय वथरावोस।

हेरि छ्य स्यंदुर तय हेर दा'न्ताव्य, हेरि छु खसान दीवादि दीव।
ज़नक राज़नि हेर दां'ता'व्य, वखनय दशरथ राजुन दीवादि दीव।
स्वठख् हेरि खो'तख् मालि पठ्क् दिथ छ़ये, छ़ांडान ईश्वर मायाये।
धर्म् हेरि खो'तख् मालि मरम् दिथ छ़ाये, छ़ांडान कर्म लीखाये आख।
खो'तखो हेरि तय ग्युंदथम स्यंदरे, खा'रमय न्यंदरे वुज़ना'विथ।
कोरि कुमा'री न्यंदरे वुज़तय, नाराण पूज़े प्रारान छुय।
दछ प्रज़ापतनि कोरे हा'री, त्रि'भवन ओय वोम ब्रा'रीये।
महाराज़ चोन आव गरुड सवा'री, शाम रंग नील् सबजा'रीये।
डे'कि छुस यंद्रुन चंद्रम का'री, त्रि'भवन ओय वोम ब्रा'रीये।
गर् चाव महाराज़ बृशभा सवा'री, जाम् छिस बस्माका'रीये।
जे'टि छस गंगा त्रिशूलधा'री, त्रि'भवन ओय वोम ब्रा'रीये।
आयिय वा'रिवि्कि ज़िठ'च २ सा'री, ह'स्य गुर्य रथ सवा'री ह्यथ।
दिवताह्व क'रह्य मंज़िम या'री, त्रि'भवन ओय वोम ब्रा'रीये।
क'मी कूर्य तोरुय लान्युन पतन्य, वनतय ना'ग्यार्जुन हय ओय।
बबन पन्न्य गो'रयय स्वनुरुव्य् मन तय, माजि पननि थोवनय संबला'विथ।
तिय बूज़ पनन्यव शेहलेख तन तय। वनतय ना'ग्यार्जुन हय ओय।
ज़नक राजुन किशमिश मन तय, दा'रिथ ह्युतनय प्वलावस।
ना'ल्य छख स'न्यमाल् पशमीन तन तय, वनतय ना'ग्यार्जुन हय ओय।
सुलि फल्य गुलिटूर्य आयि क्या करने, यं'ब्रज़लि सो'म्बुलपोश वरने आव।
स्वन् दस्तारस म्वखत् जरा'यो, यथ गर् वथ क'म्य हा'वयो।

दशरथ राज़् सोन क्या आव करने, कोरि क्वमारि आव लोल बरने।
नत् आव ल'गनुक वीदा परने, यं'ब्रज़लि सो'म्बुलपोश वरने आव।
यति प्यठ् गछ्हा माजि शारिकाये, शारिका डींठ्म वीद परान।
र्‌खमनि आमुत कृष्णजू वरने, यं'ब्रज़लि सो'म्बुलपोश वरने आव।
ओर् आव लाल् त् गंज़रितोस मालय, प्रछ़ितोस कमि शहारय आख।
ते'लि कोन् आयोख यिमन्य कोचन, ये'लि असि म्वखत् ओस पूच़ि लोंचन।
त्यलि कोन् आयोख यथ बाज़ारस, यलि असि स्वन ओस दिवदारस।
कूरी र'छमख द्रद् तय दानय, हर भगवान हय प्रारान छुय।
म्वखत् माल् ना'ल्य छख त् स्वठ्क् हेरि ख'तिये, सतिये वोतुय व्यहवाह काल।
वशिष्ठ महाराज वीद परन द्रोये, ब्रह्मा वे'ष्ण त् ईश्वर द्राव।
दीवी क'रिनय पोश् फ'तिये। सतिये वोतुय वेवाह काल।
का'लास् कोहकी यिमय सूरमतिये, व्वलास् गं'ड्य गंड्य आंगन चा़य।
व'थिये आकाश किन् पाताल ख'तिये। सतिये वोतुय वेवाह काल।
माहराज़् ओये ताक्‌दारि प'तिये, गुरयन छ़िस गोंग्र तय शुरयन गं'जगाह।
अ'स्य गय हुशियार शेंक् शब्द् सूतिये, सतिये वोतुय वेवाह काल।
वेल् वोत जल वुछ मा'ज पार्वतिये, लोल महाराज़् हय आंगन चा़व।
यियिव मालि ब्रहमणो ख'सिव सानि हेरे, ला'गिव मालि ट्यो'क,अर्ग,पोश शेरे।
ओर् आयि सतऋश योर् द्रायि पांडव, खस मंडल छुय वाहराविथ।
ओर् आयि दशरथ राज़्न्य पंडित, ज़नक राज़्नि छु मंडल वाहराविथ।
हमसायि न्यचव्यव वथ छय व्य'ज़्य, अ'स्य ल'ग्य चाने सोहबच़्य।

- पुष्करनाथ रैणा

हेहरस तु ब्रह्मणस निश ब्यूठूखो, खस मंडल छुय वाहरा'विथ।
सो'न्य मुलु गो'बरो सो'न्य चा'न्य क्वुये, सो'न्य चोन स'न्यवाजि म'निये क्रेंख।
यीत्य नबु तारख त्यूत सोन क्रोनुय, ज़ेरि अकि लोन चोन ज़ोरावार।

● लगन मंडप

ह्यंजे, दिदरि छि बोलान प्रातःकालस, ये'ति मसनंद को'र लालस क्युत।
ब्रंग कुटहारुच वुलग वालनावस, पोंपरुक क्वंग छुस इस्तेमाल।
मिठु प्वलावुस क्वंग चलावस, ये'ति मसनंद को'र लालस क्युत।
अंगतर संगतर मूतिया बागस, पानिचि जोयि तय बे'यि सबज़ार।
चूनि ल'रि महीन जो'र शाहि गिलकारस, ये'ति मसनंद को'र लालस क्युत।
बोनि बागस मंज़बाग गंडनावस, लबि लबि वथरस सबज़ारस।
म्वखतुक छ'तुर चाव स्वठकुविस द्वारस, ये'ति मसनंद को'र लालस क्युत।
स्वर्गा पोरुक वाजू मंगनावस, रंगरंगु न्यामचु मंगनावस।
रुखमनि आमुत छु कृष्णजू सालस, ये'ति मसनंद को'र लालस क्युत।

● कोरि ल'गनस प्यठ वनवुन

ह्यंजे, स्वर्गा पोरुक ठां'ठुर मंगनावस, डाइ सेर थाला गरनावस।
खस ल'गनु मंडलस ब्यह सरस्वतिये, स'तिये वोतुय व्यवाह काल।
कूरी र'छमख द्वदु तय दानय, हर भगवान हय प्रारान छुय।
म्वखतुमालु ना'ल्य छख तु स्वठकु हेरि ख'तिये, स'तिये वोतुय वेवाह काल।
कश्यप रेशिन्य व्यमान व'थिये, रे'षन सूत्य आयि ब'ड्य दीवता।
व'थिये आकाश किनु पाताल ख'तिये। लतिये वोतुय व्यवाह काल।

का'लास् कोह की यिमय सूरमतिये, व्लास् गं'ड्यरआंगन चाय।
ना'ल्य छख म्वखत्माल् ब्रोंठ तय प'तिये, स'तिये वोतुय व्यवाह काल।
माहराज़् चोन ओय ताक् दारि प'तिये, गुरयन छिस गोंद्य तय भ्रुरयन गंजगाह।
स्वठक् हेरि म्वखत् माल् अलरान ख'तिये। ल'तिय वोतुय व्यवाह काल।
वीगिस खा'रमख मा'ज पार्वतिये, शीवस सूत्य रोज़ बराबर।
त्वहि द्वन मिलवन गय नाबद् सूत्यये, स'तिये वोतुय व्यवाह काल।
वशिष्ठ महाराज वीद परन द्रोये, ब्रह्मा वेष्ण तू ईश्वर द्राव।
दीवी क'रिनय पोश् फ'तिये। सतिये वोतुय व्यवाह काल।
चाजि अ'नी कूंशहन माजि थाक्य अ'तिये, चंदन लते खोरन लाग।
मां'ज़ि तू अलति सूत्य अथ् चा'न्य रतिये, स'तिये वोतुय व्यवाह काल।
ल'गनस ख'चखय मा'ज पार्वतिये। अ'गनस कुन रोज़ अथ् दा'रिथ।
ल'गनक्य रत्य फल त्वहि द्वन कितिये, सतिये वोतुय व्यवाह काल।
गूदान् सूती अग्न गव तों'तये, स्वफल सपदुय चोन कन्यदान।
सुय तार बविनय कृपावतिये। लतिये वोतुय व्यवाह काल।
अं'द्य अं'द्य दिवता बिहित छिय ततिये, लायबोय गंग्व्यस मंगनोव हय
लायि बा'य लायि छचि ब्रूंठ्य तय पतिये, लतिये वोतुय व्यवाह काल।
दीवी वस्त्र दारिथ छतिये, मा'ल्य माजि द्युतये अभिशीक् ज़ल।
मां'ज़ि तू अलिति सूत्य अथ् चा'न्य रतिये, स'तिये वोतुय व्यवाह काल।
ग'रिथ ओ'नमय गहनय फो'तये, प'रिथ द्युतये ब्रह्मा'णी।
गं'डिथ हुम कर कमलाव'तिये। लतिये वोतुय व्यवाह काल।

ड्यजहोर चोन ओ'न स्वनूर्य ह्यतिये, ड्यजहरिस चा'निस छु गरता जान।
तथ तल शूभनय म्वखतय फ्यतिये, लतिये वोतुय व्यवाह काल।
पारम डून्य रठ मा'ज पारवतिये, कारण बूज्य बूज्य हलम दार।
हेह्नरस मुरि फिर नीरिनय ह्यतिये, सतिये वोतुय व्यवाह काल।
नावा करुस मालि श्री सरस्वतिये, भावा करुस मालि छय लक्षमी।
न्वशि कनि वा'चूय साक्षात स'तिये, स'तिये वोतुय व्यवाह काल।
आकाशि ब्रा'री कूंश्य छून खोरन, प'द्य त्राव ह्यहर् सूंज़न म'हरन प्यठ।
ल'गून छिय करान नव लरि ताकस, बोलाकि ग्राकस तू नसतूवाजे।
ल'गून छिय करान द'छिने दारे, हारे ब्रारे स्यदे स्यो'द।
महारा‌ज़् चोन आव गरुडा सवा'री, चूति बोलिसूय वन हा'रिये।
जंगलूक्य ज़ानवार आयि सा'रिय, चूति बोलू सूय वनहा'रिये।
यसू ब्यनि र'छ्थन नखू तू क्वछे, स्वय ब्यनि ख'चूय गंगे व्यस।
लायि बायि लायो लायि छख द्रछे, जमना ब्यनि गछि वा'रिवूय।
डों'ड बरिथ दरबे बुर्ज़ू व'लिथ काये, भगवानय कर्म लीखाये आव।

● **मनन माल गंडनस प्यठ वनवुन (मंदन माल)- वुसुर ह्रांजे,** स्वर्गय ख'चखय माहनंद पुशिनी, पोशे माल तू वुसरी ह्यथ।
सुलि व्वथि पुशिनी विलि खसि बालस, लालस किच़ वाल मनन माल।
पुशिनी ख'चखय मानसरि बालस, तति छिय फल्यमित्य नाना रं'ग्य पोश,
अ'ड्य लद जन्थरि अ'ड्य लद नालस, लालस किच़ वाल मनन माल,
हियमा'ल्य फो'जखय व्वगून्यन बालन, पुश्य वा'जनख पोशि मालन सूत्य।

ग'हन् क'म्य गो'रये पन्न्य बब् लालन, बेम् पन्न्य बीठिय स्वर्न्य वान।
माम छुय दपान बुय क्वछि वालन, पुश्य वा'जनख पोशि मालन सूत्य।
सुलि व्वथु पुशो विलि खसु बालस, लालस किच़ वाल मनन माल।
दशरथ राज़नि गुलाब दस्तो, वसतो गंडयो मनन माल।
दशरथ राज़्नि यंब्रज़लि कोज़ो, थदि रोज़ गंडयो मनन माल।
मनन माल ग'न्डयो स्वभद्राये, अर्ज़न दीवनि भा'र्याये।
मनन माल ग'न्डयो रूखि सो'मने, तमि कोंछ नाराणस आय।
मनन माल गंडयो केसरी दस्तारस, बडि कुठि वथरय सबज़ारस।
मनन माल ग'न्डयो मे' तू पित्य वाजे, लो'कचे माजे लोल बो'रयो।
मनन माल ग'न्डयो ल्वकचे हशे, येशि ज़ामति पुति लशेहम।
मननमालि चाने निचि निचि बालय, कंद् फ'ल्य रटु दंद् मालन तल।
मनन मालि चाने स्वन् सूंज़् ट्यकय, डे'कय बोड्य नेरे हम।
मनन मालि चाने स्वन् सूंद्य बादाम, आदन बाजे लशे हम।
मनन मालि चाने स्वन् सूंज़् च्र'चे, कुक्लि कोतर बचे ज़ाव।
मनन माले स्वख व्रा'यो, रूखि आप्रावियो नाबद् हन।
मनन मालि चाने निचि निचि चूने, **जूनि वो'लुय कुन पा'थ्रर तू प्रास।**
अरमायि धर्मायि राज़् पो'त्राये, मनन मालि द'छिन्य द्युव बोज़ बाये।
वुछमय नू ज़ातकस वुछमय नू ला'निस, कूरी ला'निस नमस्कार।

● **शवम्वकृच़- शक्तिनाथ् गंडयो मननूय माल। ह्यंजे,**

भक्तिवत्सल मोनुख म्यान्य मननूय, शक्तिनाथ् गंडयो मननूय माल।
बूज्य बूज्य श्रवनूय युस करि मननूय, निध्यासन ज्ञान द्रफ्य ज़ाल।
साक्षात कार छुख शिव रूप् ननन्य, शक्तिनाथ् गंडयो मननूय माल।
आधिकार द्युतमुत छुथ सथज़ननूय, मंज़ छुय अंद ह्यथ माया ज़ाल।
न्यर ग्वन् लगयो यिथिनूय ग्वननूय, शक्तिनाथ् गंडयो मननूय माल।
मीना हीमाल परबतस छि वननूय, चक्रीश्वर छुय त्रृज़गथ पाल।
सा'र्य दीव च़'करस फीर्य प्रदिक्षणस्य, शक्तिनाथ् गंडयो मननूय माल।
यूगू अ'गन् व्वन्य छुस ज्ञान् अन रननूय, यूगीश्वर छुय मुर्ख सुंद साल,
अन यछ़ करतम अनुग्रह पननुय, शक्तिनाथ् गंडयो मननूय माल।
हारून्य दोह तय पोहने रा'चूय, कोरि ह्यंद्य बा'चूय बराबर।
ल'ग्न छिय करान कानी अं'दरय, स्वंदरी रूफ चोन सिरियस प्रव।
ज़नक राज़ून्य सथ पोर मंदोरि, वखनय क'म्य छा'न्य ग'रनय दारि तय बर।
ल'गून छिय करान देवान खान् अंद्री, स्वंदरी रूफ चोन सिर्यस प्रव।
अमला कमला निर्मल दा'री, तोह्य बूज़िव कन दा'रिथ क्याह।
अ'स्य मालि वो'नवो गून्यान सोरुय, तों'ह्य छुव न् बोज़न वोलुय कांह।
तोह्यि छिव् न् ग'र्याल अ'स्य क्या बोज़व, ल'गनस क'च़ गरि रोज़'व।
माजि शारिकायि ह्यंज़े डेडितल रोज़तो, त'त्यथ्य बोज़ता गर्याल ठस।
तति यिव बूज़िथ ये'ति लो'ग सोज़ो, ल'गनस क'च़ गरि रोज़'व।
ग'र्या'ल्य ग'र वा'य स्वनसूंदिस थालस, असि ज़ाय लालस राज़्कुमार

दारे'न शा'म्यान् बरन सोज़ा'नी, नारान वास बरने आव।
अंगव खोत् छ्य पोंब्र ज़ीठ्य, ल'गनस ब्यूठ्य चिंतामन।
व्यमन ह'रिस चंदन दन छुय, वनतय कम ऋषि दान ह्यनि आय।
ल'ग्न छिय करान देवान खानस, करि भगवानस नमस्कार।
रुज़िथ गोंड'मय दर्बि डेंटोनुय, बूज़िथ ईश्वर सोनुय आव।
यंद्र् संदिस बागस नद पकवनी, धर्म किन्य ह्यच़्न मा'ल्य मुछा'नी।

कन्यादान

ह्यंजे, तासुक वर्दन गुलाब तर छुय, हर छुय बिहित दर्शनस।
का'शी न'गरुक विशंबर छुय, हटि वासुक जे'टि गंगा।
निशि छुय पार्वती तसुंदुय वर छुय, हर छुय बिहित दर्शनस।
ज़नक राजुन स्वयंवर छुय, धनुश तुलने राम तो'त आव।
अयोध्या न'गरुक श्यामस्वंदर छुय, हर छुय बिहित दर्शनस।
स्वमन कुमार मा'ल्य क्वछि ह्यच़्य, तिछ्य मोहर छि नेछनावान।
कूर छि कुठि तय पोस्तक छि परान, कूर छि मा'लिस नेछनावान।
थालजि ठिन्य ठिन्य बोराकि वादा, राधायि कृष्णजू दान ह्यनि आव।
ज़नक राज़् सोन कन्यक प्रीति पालान, रामचंद्र छुस अथ् दारान।
पीरि प्यठ दुर्गा था'वमय ना'विथ, निन ब्रह्मण् प्रे'ति पा'लिथ क्याह।
राग्यन्यायि निश था'वमय वा'लिथ, त'तिथ्य रोज़ अथ् दा'रिथ क्याह।
खिर्हनि खंड्हनि प्रेप्युन हा'विथ, निन ब्रहमण् प्रे'ति पा'लिथ क्याह।
द्रध् ग्यव खीरखंड् प्रेपिन हा'विथ, निन ब्रह्मणन् प्रेयि त् पा'लथ क्याह।

ब्रग द'र्य कोतुर चा़क'ट्य फेरान, **निनि क्वठि प्यठ् अथ्वास क'रिथ।**
ध्युतुथ मालि गुर,गाव,बुतराथ दानस, तमि खोत् थो'द छुय कन्यादान।
असि दिच़ माग् मा'स् कांग्र शिशरस, ईश्वरस पोशे बा'री लाग।
युस करि माग् श्रान न्यथ पूज़ि साल्यगराम, सुय करि सत् वुहुर कन्यादान।
युस फ्ल सन्यवारि त् कन्या दानस, सुय फ्ल छु गूपियन वनवनस।

• नील वटस प्यठ वनवुन

ह्रांजे, नीलय वटस्य खोर थोवुथय, ग्वर ज़ोनूथय परमीश्वर।
नाराण जुवन्य गथ वा'चूयय, सथ दिय अ'गनस चा़का'टी।
सतव मोहरव प्ये'ठ्य पकना'वहख, पन्ने गुथरय फिरना'व हख।
बब् सुन्द नाव छुय जाना जिगरय, ह्यहरन नाव क्याह को'रूये।
कोरि कुमारि मामजू ढखि छुय, नख् छुय चो'तुर भुज़ नारायण।
गंग्व्यस ज़ंगि आयि ह्यथ गंगवोनी, लायि बोय सोन छुय जयवोनुय।
स्वन् सुंज् लायि छ्ख लाये बायो। आयि दरि बायि कर लाये हुम।
दातव क'रयय मं'ज़िम या'री, सात्च राज़् क्वमा'रिये।
स्वर्गय ख'च़खय म्वखतय मा'ली, **म्वल कोल'रुय सौदागा'रिये।**
म्वल क'रिथ नियनख बट् पेशका'री, सातचि राज़् क्वमा'रिये।
पां'च् व'रिशि पा'र्यमय वां'क् पता'ली, शि व'रिशि ओय मं'ज़िमयोर।
सत् व'रिशि व'रनख कृष्ण् अवता'री, सात्च राज़् को'मारिये।
पो'ज़ अपुज़ वो'नुय मंज़िम या'री, तस हय ख'त्य पोशे बा'रिये।
त्वहि द्रन म्युल गव म्वकलेय सा'रिय, सात्च राज़् क्वमा'रिये।

स्वर्ग् खच़् अछ् रछ् विगनि छि तोशान, लान्यो चे'य नो पोशान छिय।
आ'ल् माल् करान म्वखतस ब'रमो, कर्मो चे'य नो पोशान छिय।
चरक्दार जूरी त्वरक् छा'न्य ग'रखय, कर्मलान्य नियखय ज़ोर क'रिथ,
ह्वरि तोतन कथ् क'रि ब्वन् बूज़् हारे, तारचि़ सूत्य तोल म्वखतय हार।
हा'र ख'चा पंजरस तोर् कुस वाल्यस, ओर् यियि तोत् तू बोलनाव्यस,
हा'री बीठखय नीलिस द्रमनस, तोतस थ'विज़्यम न्यमनस जाय।
लोहूरकि तोत् तू कश्मीर हा'री, त्वहि द्वन कतिं गय पा'री ज़ान।
हा'र छ्य दपान यहय म्या'न्य बूली, शब्द बूज़नय पोशनूलिये। शब्दप्रकाश
सुलि व्वथ पुशो प्रभात ओवुय, ग्वड् फो'ज यंब्रज़ल तू अद् न्योवुय।
सत् व'रिशि ओयय मंज़िम योरुय, पोज़ अपुज़ तसूंदे म्वख् द्रोयय।
ब्रह्माहन कर्मलीखा मिलना'व्य, ग्वड् फो'ज यंब्रज़ल तू अद् न्योवुय।
दिमयय स्वन तू रुव्फ कूर्य क्वमा'री, पा'ट्य गो'र अनयय पोट करने।
गंडयय हेरि ब्व'न म्वख क्युथ द्रोवुय, ग्वड् फो'ज यंब्रज़ल अद् न्योवुय
दिमयय वरदन कूर्य क्वमा'री, कास् वुदुल तय खास् ज़रबाब।
वो'लमय हेरि ब्वन म्वख क्युथ द्रोवुय, ग्वड् फो'ज यंब्रज़ल तू अद् न्योवुय।

• अथ्वासस प्यठ वनवुन (हाथ मिलाना)

ह्वंजे,दिमयय यिमय रत्न तू ब्ययि दाजे, फेरी कूर्य वाजि अथवास क'रिथ।
यिछ़ कूर्य र'छिनख पनने माजे, त्युथ नय ह्वेकि कांह र'छिथ्य।
च्यनि कूर्य दिच़नय शे'यत्रह नाजे- ना'डी फेरी कूर्य वाजि अथवास क'रिथ।
अथ्वास करान अथ् रठ चीरय, कथ् करि सीरय बाजस सूत्य।

अथ्वास करान यिनय अथ् डलिये, कथ् करि लोहूर्य तोतस सूत्य।
वुनि छख ल्वकूट तय गिंद कूर्य हारन, फेरि कूर्य नबचन तारन सूत्य।
यान्य कोरि पा'रोव दारि मंज़ोलुय, तान्य कोरि कोतुर को'नये आव।
ज़नक राजुन दारि मंज़ोलुय, सुभद्रायि ह्यो'तुय अलरोनुये।
दीवकी ह्यो'तनस बबि द्रुध द्युनये, तान्य कोरि कोतुर को'नये आव।

• दय बतस प्यठ वनवुन (दव्य भात)

ह्यंजे, हाथी पोर्च चा'न्द्य अनना'वमय, त'थ्य गरनोवमय दयभत् थाल।
स्वन् सुंदिस थालस रो'प् सुंद्य खूरी, ऊर्य हय वातिय दयभत्हान।
वुरबल् व'नितव ल्वकटिस वाज़स, खारि महाराज़स दयभत थाल,
ब्वन् कनि क'र्यतोस वाज़स आलव, राज़स खारे दयबत थाल।
दयबत् खोरमय चरकी थालस, स्यद् गुलालस त् मद् मत्ये।
स्वन् सुंद्यस थालस रो'प् सुंद्य खूरी, कूरी खाररयय दयभत् थाल।
कनवाजन छिय दुक् २ फ'लिये, अड्क'ल्य सा'न्य ख्यय बत्फ़'ल्य डाय।
गोरि ह्रंदि ओ'नमय द्रध् चड वोरुय, सोरुय दाना खेज़े हम।
दशरथ राज़ने ला'ली लालो, स्वन् सुंद दंद् खिलालय छुय।
अथ् छ्लुन द्युतमय अमृत वोनिय, तुज करन्य दिच़मय चंदन लूश।
द्रसि प्येठ्य क'रथम पोशि लंजि पिलवन, त्रेशि कनि द्युतमय अमश्त चो'न।

• पोशि पूज़ायि प्यठ वनवुन - ह्यंजे,

असूवन्य कोसम व्वजूल्य नील्य छे'तिये, म्यह ह्येत्य पूज़ि पोश लागा'निये।
ओम पर श्रुक्य पर श्री गणीशाये, पोशि पूज़ाये वेल् हय वोत।

गणपथ यार् गछ्रू हा लोल् तय माये, पूज़ा कर् भावनायि सान।
गणपथ सा'ब वो'र माजि वल्लभाये, पोशि पूज़ाये वेल् हय वोत।
गो'डन्य गछ्रूहा माजि शारिकाये, प्रदिक्षन दिमस भावनायि सूत्य।
वामदेव वो'रनम माजि शारिकाये, पोशि पूज़ाये वेल् हय वोत।
तुलमुल वसूहा बजि भावनाये, द्रुध हय भावस यछ़ाये सूत्य।
भूतीश्वर वो'रनम माजि रा'ज्ञाये, पोशि पूज़ाये वेल् हय वोत।
ज़ीठयार अं'दरूचि माजि जेश्ठाये, पूज़ा करोस भावनायि सूत्य।
जेठ ल'द्र् वो'रनम माजि ज़िश्ठाये, पोशि पूज़ाये वेल् हय वोत।

म्वखत् कनि तारख छिस तापदानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।

आकाशि पोशि वर्शन हनि हनि छुस, रथबान् कनि छुस सिरी दिवता,
सायबान् बन्योमुत छुस आसमानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
ड्यकस प्यठ चंद्रम प्रज़लान लाल छुस वाव् लुकपाल छुस करान ग'जगाह।
ब्रह्मा तू वेश्ण छिस सूत्य जा'न्पानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
चि़त्रगुप्त ताह छुस करान सामानस, यंद्राज़् मोरछल बरदार छुस।
धर्मराज़् थोवमुत प्यठ धर्मदानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
सतूरे'ष सथ ज़ल ह्यथ मंज़ बानस, अ'तूर तय कोफूर छ्कान छिस।
सतवय ग्रह्य छिस ह्यथ विमानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
गंगा सागर ह्यथ छस गंगा, वुद् ज़ालान छस द्वीपमाला।
लक्षमी मीठ्य छस दिवान दामानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
नाबद आप्रान महाविद्या छस, करान जमना छस वावजि वाव।

द्रध् मा'ज सरस्वती सूत्य छस पानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
जंगि थाल अनवून्य पान् छस स्यदा, व्यूग लेखन छस कर्मलीखा।
आत्म् रूप् बसवुन छु मनकिस थानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
वासुक तृ शीशनाग छ'त्र बरदार छिस, रत्नन हुंद म्वखत् हार छुस नाल्य।
गट् च़'ज तृ गाश आव सा'र्यसूय जहानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
कबीर जीत् वरुन खर्च बरदार छिस, सोर स्वर्गूद्वारय सूत्य सूत्य ह्यथ।
रथ छिख गंडिमित्य मंज़ मा'दानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
डे'कस प्यठ च़ंदन ट्यो'क छुस तीज़वानस, बुथिस छुस करोर सिरियुक तीज़।
छस दया गुल्य गंडिथ तस दयावानस, छमय ईशानस पोशि पूज़ा।
अर्घ कर मनस तय पोश कर प्राणस, कृष्ण् पूज़ायि लाग सनिदानस।
ज़ालिय पाफ गालिय अज्ञानस, सय छि भगवानस पोशि पूज़ा।

● महारे'नि सखरनस प्यठ वनवुन - (डोली)- ह्यंजे,

ल'गन् प्यठ् वा'जनख नूनय क'न्यये, व्वथि ड्यक् प्रे'नियेनेरे हम।
ल'गन् प्यठ् वा'जमख दानय दा'जी, पो'त्रय मा'जी नेरे हम।
भाव कर भवानि सीवा कर ज़ा'मय, धर्मूच का'मय प्रावेहम।
लाल् छुय ल्वति ल्वति कंद् फ'ल्य चापान, बोज़ मालि न्वश छय साज़ करान।
दियिव मालि संयवो'र डे'कस ट्यो'क लागोस, अद् वसि रामस निशि सीता।
दारि किन्य दिच़मय रुमाल दा'रिथ, स्वन् मंज़् नियथन हिय च़ा'रिथ।
यूत्य तारख त्यूत सोन क्रोनुय, कोरि हुंद लोन गव ज़ोरावार।
वुछमय न् ज़ातकस वुछमय न् क्रा'निस, कोरे ला'निस नमस्कार।

ग'र्यया'ल्य ग'र वा'य स्वन् सुंदिस थालस, असि ज़ायि लालस राज़् कुमार्य।
पा'न्च् व'र्यशि पा'र्यमय वा'न्क् पता'ली, शि व'र्यशि ओय कूर्य म'न्ज़िम योर।
सत् व'रिशि व'रनखय कृष्ण अवता'री, सात्च राज़् क्वमा'रिये।
थन् ये'लि पे'यहम राज़् कवमारी, रन् प्यव क'रमय छम सद् प्याय।
स्वन्यन दीचि त् प्यतरन थालय, सात्च राज़् क्वमा'रिये।
त्रुय ये'लि वोतुय राज़् क्वमा'री, शे'यि मनि शे'शत्र् ग'रमय क्राय।
दंद् गूज्य बा'गरमय सा'र्य मसा'ली, सात्च राज़् क्वमा'रिये।
मास्नेथ्रस कर् कनि सिव म्य खा'ली, खास् खास् वाज़् तथ रनने आय।
प्रास् क्यन द्यारन गरय कन् वा'ली, सात्च राज़् क्वमा'रिये।
कूर ज़्यन् मा'लिस क्येह छुन् नफा, कूर छय माजि ह्यंज़ रफाकत।
अरदाहन व'रियन दितमय क'छि्ये, आ'खूर द्रायख प'छि्ये बाय।

● खलतस- महाराज़स (दुल्हे के लिए।) ह्यंजे—

बह्मणन व्यद व'न्य पननिस दातस, रातस को'रुख यनिवाल्युक संज़।
कलमदानस दवात त'चय, क'चय गुमाशत् छिय लूख लेखान।
कलमुक मीलि फ्यो'र प्यवयि वर्कस, राज़् ब्यूठ स्वकस लूख लेखने।
असली पंजर् त् बां'सूव्य थम छिय, वनतो कम छिय म'जलूसे।
धर्म्च गीता दिच्थो दानस, गछ़ भगवानस खलत मंगने।
खलत छ़ांडनि द्राव हा'किम निशीन, ब्रह्मा विष्ण त् महीश्वर।
तालवन वस तय ताकचन ब्वखच्वार, राजरानि माजि ज़ाव कृष्णावतार।
वसदीव राज़न्यन ताकचन ब्वखच्वार, कुशल्यायि माजि ज़ाव रामावतार।

खलता ओ'नमय आ'दी आ'दी, जाम् चा'न्य जानाबा'दिये।
खलता ओ'नमय सरि ज़ा'न् क'दलय, अदलय माहराज सा'बने।
ज़ा'विल्यन जामन मुकुश ज़न तय, वन तय क्युथ छुस म्वख नेरान।
मामजुवन अ'नियो जाम् जूर्य पा'रिथ, कामदीव शान् रोज़ दा'रिथ क्या।
तनि क'म्य गंजियो कृष्णन त् रामन, जामन वुछियो ज़ेबा'यी।
तीज़ स'सति नीलकंठ् सिरियि भगवानो, रुव्प् तनि गंडयो स्वन् जामो।
थन् ये'लि प्योहम गो'बर् लाल् बानो, सथ द्रध् माजि छय द्रध दिवान।
अख दिनय तिम सथ ब्ययि दिमय पानो, रुव्प् तनि गंडयो स्वन् जामो।
वसिथ तुलमुल जग करच़ामो, ब्रग आयि वेरि चानि तीर् त्रावान।
तीर् सो'म्बर्नि आयि दिवता पानो, रुव्प् तनि गंडयो स्वन् जामो।
महाराज सा'बुन वोत सलाह सामानो, रंग् कुठि करयो प्रंग वथरुन।
सूज़नय गुर गो'न्द खलते शाहानो, रुव्प् तनि गंडयो स्वन् जामो।
ट्यो'क यलि लोगमय सिरियि भगवानो, बुहरी क'दल् अनेमय स्यंद्रा जान।
बुंब् कमानस ट्यो'क शूभानो, रुव्प् तनि गंडयो स्वन् जामो।
तोतो क'न्य त'ल्य व'न्यज़्यम हारे, ज़ा'म सूत्य का'म छ्य आदि अंत ताम्य
ज़ा'म शूभि ज़ा'म ब्रांद रु'वनि दामानो, रुव्प् तनि गंडयो स्वन् जामो

त्रे'यिम खण्ड -तीसरा भाग मेखला

• अ'गन क्वंडस

ह्यंजे, असि क'र म्यचि़ का'म प्रूछि़थ ग्वरस, तिय आव परमीश्वरस ख्वश।

गंग्बल् खोरमय गंगवोन्य नावन, हावस् खारय अ'गनय क्वंड।
म्यचि़ तय पा'निस खो'त खंबीर्य, गंभीर को'रमय अ'गनय क्वंड।
पुष्कर नाथस मांगय मंगे, कन्या जंगे अनेसे।
अ'गनय क्वंडस ज़ंगि कुस ओये, मंगला दीवी तू नंदकीश्वर।
ब्रहस्पथ ग्वरव जंगि कुस ओयो, परमीश्वर तय पार्वत मा'ज।
ह्यंजे, अ'गनय क्वंडस क्या क्या पज़े, नून व'र तय मोहरा प्रास।
क्यसरि कनि क्वंग तय पानि कनि अम्रे'थ, सों'ब्रिथ खोरमय अ'गनय क्वंड।
अ'गनय क्वंडस स्वन सूंज़ू सेरे, ज़ेरि २ खोरमय अ'गनय क्वंडस।
अ'गनय क्वंड खोरथो राजा बायो, ताज् तारुख ज़ंगे ओय।
अ'गनय क्वंडस न्यछतुर सोवुय, भवा'नी आयि पोशि लोवुय ह्यथ।
अ'गनय क्वंड खोरथो शुक्लय प'छी। श्वभ् वारे तू न्यछतूरस प्यठ।
अ'गनय क्वंडस कू'न क'म्य खोरुय, अपारि तो'रयो नारायण।
वलभायि हूंदि गणेशन खोरुय, अपारि तो'रयो नारायण।
अ'गनय क्वंडस स्वठकिव चीनी, स्वन् गज़ू खा'र्यनय मीनि मीनिय।
वसदीव राज़्न्य स्वठकिव चीनी, ब्रहस्पतन खा'र्यनय मीन्य मीनिय।
अ'गनय क्वंडस स्वठकिव बर छिय, हर छुय बिहिथ दर्शनस।

अ'गनय क्वंडस कूंजे हेर छ्य, ज़ुर छुख वसदीव राज़ोनुय।
अ'गनय क्वंडस सो'न्द्रुम त्यंगुला, मंगला ज़ंगे अने से।
ब्रहस्पत ग्वरन सोंद्रुय त्यंगुला, सुभद्रा ज़ंगे अनेसे।
ब्रह्मा जिवस मांगय मंगे, कन्यक ज़ंगे अनेसे।
वसदीव राज़स मांगय मंगे वखनय कन्यक ज़ंगे अनेसे।
अ'ग्न सो'न्द्रावुस चंदन लूशे, ज़िने त्रशे लागेसे।
वसदीव राज़्न्य चंदन लूशे, ज़िने त्रशे लागेसे।
अगन स'न्द्रावुस च़ंदन गणय, वनय वालुस तुलसी काठ।
वसदीव राज़्नि च़ंदन गणय, वनय वालुस तुलसी काठ।

● तरंगस, नार्यवनस वनवुन——— ह्वंजे—

अनि गटि कन्यन सूत्य क'रिथ नाल् मतिये, श्री सरस्वतये यार बल वस।
अनिगटि कन्यन सूत्य क'रिथ नाल् मतिये, दिवकी माता यार बल वस।
यार बल् ख'च़खय श्राना क'रिथ, ध्याना स्वरिथ भर्था सुन्द।
दंडक वन ख'च़खय ना'री ना'री, बडि ब्यनि हारी तरंगा गंड।
दंडकवन ख'च़ खय ना'री ना'री, रूखमन मा'ली तरंगा गंड।
अवलय अनिथय ना'र्यवन था'जी, शाबाश शारदा मा'जीये।
हीमाल पर्वत् करिथय अटय, कूर छख लोटय रा'निये।
दिवकी मा'जी करिथय अटय, कूर छख दीवक राज़नी।
कृष्णजुवनि ज़्यनय च़'जिय गटय, कूर छख लोटय रा'निये।

ना'र्यवनस प्यठ वनवुन (मौली पर)

ह्रांजे, दंडक वन्च ऋषि बा'यीये, दिव् रा'यिस मंग ना'रीवन।
चंदन लति हंगस गंड हंग् तुमारय, बा'ल्य अछ् दा'र्य खार ना'रीवन।
वसदीव राज़्नि आ'तन मा'ली, दा'न्तन सूतिय तार नारीवन।
वसदीव राज़्नि वान्यन्य कूरी, कान्यन प्यठ खार ना'रीवन।
शाबश तस माजि यस माजि ज़ायख, आयख त् खा'रिथ नारीवन।
भिश्मक राज़्न्य गाट्ज कूरी, पाटिव खा'रिथ ना'रीवन।
ना'र्यवन खा'रिथ य'ज्ञन्कि बीज़्य, दिवता पूज़े आमृत्य छिय।
दीवक राज़्न्य प्वखतय कूरी, म्वखतुक खोरुथ ना'रीवन।
दीवक राज़्न्य कोरि क्वमारी, हारी खा'रिथय ना'रीवन।
भीश्मक राज़्न्य असव्न्य कूरी, **प्रसनय खा'रिथ ना'रीवरन।**
दोहस मंज़्य कोह बाल छ़ंडिथय, तवय गंडिथय नारीवन।
कृष्ण्नि मेखले ग'न्डथय सरदा'री, बडबिन हा'री नारीवन हाव।
भीश्म राज़्न्य दायक कूरय, ना'र्यवनन छायख छुय।
भीश्मक राज़्न्य लायक कूरी, रुखमन मा'जी छायख छुय।
हथ वन छ़ो'न्डथय, लछ तप को'रथय, हा'सिल को'रथय अकनंदुन।
आकाश व'छ़खय यंद्र् गर् चायखय, आयखय रूच् रूच् कामि करने।
दिवकी मा'जय हुरे बीठखय, मुरे ह्यो'तथय रतनय फल।
कृष्ण्नि ज़्यनय वर्गस चायखय, आयखय रूच् रूच् कामि करने।
थ्यकूव्न फ्यरनय म्वख क्युथ द्रोयय, स्वख् सूत्य यज़मन बा'यीये।

- *पुष्करनाथ रैणा*

दीवकी माजे म्वख क्युथ द्रोयय, स्वख् सूत्य यज़मन बा'यीये।
चिकनय फ्यरन थ्यकनूय वा'तियय, अ'ज़्य य'छ़ नाराण्य यज़मन बाय।
टे'क्य पूचि़ टे'न्ड्य मां'ज़ नम छख तारन, यायमस छख करान लो'लू मत लाय।
टे'क्य पूचि़ " चाने प्यठ किना'री, ब'ड ब्यन्य हा'री नार्यवन हाव।
दिवकी माजे प्यठ किना'री, म्वखत् छुस डल त् स्वन छुस शोख।
टे'क्य पूचि़ चाने अरतलि व'थूर, म्यथूर आयिय गुल्यम्यूठ ह्यथ।
दिवकी माजे अरतलि व'थूर, श'थूर प्ययनय खोरन तल।
पोशत् मा'जी पोशत् छुयय, ठठर दूरन त् ज़ा'ल्य जुमकन।
छायख मा'जी छायख छुये, न्वश छख हरिचंद्राज़नी।
मा'ल्य ल्यूखुय ज़ातुख नकशे बा'ज़ी, माजि को'रुय टोख२ शोख् मंज़ले।
कृष्ण महाराज्न्य नकशे बा'ज़ी, दिवकी रो'छनम शोख् मंज़ली।

● संस्कारन हुंज़ वखनय।

विनायक चो़रम त् आथवार द'रमय, को'रमय बरख्वर दारूय नाव।
१. आ'ठन रे'तन क्रेठ क्या बो'रमय, नविमे रे'तय ज़ाव ल्यलबान।
थन् ये'लि प्योहम रन प्यव क'रमय। को'रमय बरख्वर दारूय नाव।
थन् ये'लि प्योहम चूति ज़्यन् कालय, रन प्यव क'रमय छम सदप्याव।
सो'न्यन दीच़् त् पितरयन थालय, को'रमय बरख्वर दारूय नाव।
२. त्रुयिस त्रे'ह त्रख तेल क्या को'रमय, शे'यि त्रे'कि श'स्त्र ग'रूम क्राय।
दन्द गूज सा'र्य मसालूक्य क'रमय, को'रमय बरख्वर दारूय नाव।
३. स्वंदरे सोगुन धन क्या गोलमय, स्वंदरे ना'वमय फ'लिलू सूत्य तन।

ना'ल्य कित्य रंग्र वस्त्र क'रिमय, को'रमय बरख्वर दार्य नाव।

४. दहन दो'हन द'ह हं'ड्य मा'र्यमय, क'हि दोह्य को'रमय काहनेथ्र।

ज़ितशन तू पंडितन को'रमय सालय, को'रमय बरख्वर दार्य नाव।

५. बहिमे दोह् लीखिमय रंग मंडली, आकाश् नकाश व्यूग लेखनि आय।

याजव कनि बा'गरिमय बुसरख थालय को'रमय बरख्वर दार्य नाव।

६. बाहिम दोह लो'दमय मातामाल्य, क्वछि ह्यव्न्य ल्यूखहय इस्तेमाल।,

तति प्यठ् यो'त लज्य रथ सवारी, को'रमय बरख्वरदार्य नाव।

स्र्वग् प्यठ् वाज़य रनने आमय, वास् स'स्य मोहनिव बा'ग्रने द्राय।

स्वन्यन दीचि तू पितरच्यन थालय, को'रमय बरख्वर दार्य नाव।

७. मासनेथ्रस सिवमय कर् कनि खा'ली, वास स'स्य मोहनिव बा'गर्ने द्राय।

प्रास क्यन द्यारन कनवा'ल्य गरिमय, को'रमय बरख्वर दार्य नाव।

८. शिशरस क्युतुय सामान को'रमय, मोज् कंटोप तू फंब् कुर्तन्य,

त'थ्य प्यठ इसराफ शिशर मो'न्ड ग्वरमय, को'रमय बरख्वर दार्य नाव,

६. शि मा'सिस को'रमय अनप्रेशोनुय, मनस द्वधस को'रमय खिर।

खोस, रिकिब तय गिलास गो'रमय, को'रमय बरख्वर दार्य नाव।

१०.व'हरवा'दिस्य साल क्या को'रमय, बंधन तू बांधवन को'रमय साल,

न'रे'न किच़ स्वन् स्ंज़ गुनस् जूर्य ग'रमय, को'रमय बरख्वर दार्यनाव।

महाराज़स मस कासनस प्यठ वनवुन (दुल्हे के मुंडन पर)

ह्यंजे, मस कासनस संज़ ह्योतू थो, मंज़ ह्योतूथो परमीश्वर।

कृष्णनि विज़े संज़ ह्योतूथो, मंज़ ह्योतूथो परमीश्वर।

कृष्णनि ज़ेनय स्युन रो'न व्यनय, कृष्णस कासव ज़्यनय मस।
ज़्र् कासयो दीवी आंगन, गरि करयो मीखलि संज़।
माल्य गो'र्स्यो स्वन् सुंद खूरुय, ग्वरन को'र्स्यो चूडाकार।
वसदीवन गो'र्स्यो स्वन् सुंद खूरुय, ब्रहस्पतन को'र्स्यो चूडाकार।
स्वन् सुंदिस खूरिस इशमसंड दस्तय, अस्त् २ मालि करुस चूडाकार
स्वन् सुंदिस खूरिस इशमसंड दस्तय, ब्रहस्पत मालि करुस चूडाकार
व्यसतय कारो खूर रठ वारय, दाग् प्यठ् वालयो फंब् दस्तार।
व्यसतय का'र्यगरो अस्त् अस्त् करसू, छ़ा'गिस वुरसू म्वखतय हार।
वसदीव राज़निस टा'न्पट कुलिस, दर्बे तुलि सूत्य क'रूसो।
ज़्र् कास'यो कर् मुठ सिवयो, हंग् छ़ोग थवयो भवानि बल।
नाराण जुवस मांगय मंगे, कन्या ज़ंगे अनेसे।
ज़्र् कासनस क्या क्या पज़े, नून व'र तय मोहरय प्रास।
ना'विद दपान क्याह क़र् तो'मलस, म्य गछ़्यम शुमल् त् जोरे शाल।
व्यस्त्कार दपान क्या कर् वरि हनि, लरि हनि छ़्नहा चूरिम पोर।
व्यस्त्कार दपान क्या कर् दान्यस, मे' गछ़्यम कानिहामि जा'गीरा।
व्यस्त्कार दपान क्या कर् नून् हनि, लरि हनि छ़्नहा जूनय डब।
यिय चूय मंगहम तिय बो दिमयो, बालकृष्णस टूठेनम नारायण।
दिवकी माजि दो'पयो तिय बो दिमयो, महाराज़स टूठेनम नारायण।
ह्यंजे, का'समय ज़्र् तय रो'छमय छ़ोगुय, भवानि भोगुय लो'दूयो।
ज़्र् का'सिथ द्राख ओ'बर् तल् सियों, गो'बुर छुख वसदीव राज़ुनय

लूंग्य, खूर, तय दा'र दिव धर्मस, ब्राह्मण ज़नमस नमस्कार।
ग्वरस निशि आख इसलाह क'रिथ, वस यारबल खस श्रान क'रिथ।
ना'विदस निशि आख इस्लाह क'रिथ, कृष्ण खोतूमो श्रान क'रिथ।
सर् पंपोशस टूर्य गय ताज़य, ज़ुर (पोता पोती) महाराज़य लश्रेनम।
वसदीव राज़्न्य टूर्य गय ताज़य, कृष्णस मेखल त् लश्रेनम।
तनि क'म्य दिच़्यो कंसन त् रामन, जामन छ्य पुत्य ज़ेबाई।
तनि क'म्य दिच़्यो रामन त् मामन, क्वंग् जामन छ्य ज़ेबा'यी।
पत् ब्रोंठ् वुछनय वसदीव राज़न, मामन खोरखो क्वछे क्यथ।
यारबल् ख'सिथ ग्वरस निश च़ाखो, ज़ाखो यंद्र्य करनिके।
यारबल् ख'सिथ पदम पोश प्रोवथो, ना'वथो गंगय ज़लय तन।
वुफि आव कोतुर कुठि ब्यूठुखो, दयन ड्यूंठखो भागेवान।
मा'लिस त् ग्वरस निश ब्यूठखो, असि ड्यूंठखो भागेवान।
मा'लिस खोव्र्य ग्वरस द'छिनी, व्वन्य च़्य र'छनय नारायण।

विद्यारंभस,आट्य पनस, श्रान पटस, प्यठ वनवुन।

ह्यंजे, वसदीव राज़्न्य होगे वाल्यो, रोगे छानस म'हनिव सोज़।
मोहनिव सूज्यतव विश्वकर्मा छानस, कृष्णस क्युत अनि पोरुत जान।
कृष्ण गोम च़ाटहाल अथि ह्यथ दूजी, मोजी ज़ूजी आलवस।
कृष्ण गोम च़ाटहाल म'ठ्रस दूज मिलवा'र, पत् गयस ब्यनि तूलर दूज मिलर ह्यथ।
ह्यचि हुंद पोरुत म्यचि़ सूत्य ब'रिज़े, ओं'गजि सूत्य करयो **ओमा ओम**।
स्वन् सूंदि दुर्दल रुव्प् सूंदि कलमो, गोडन्युक अछुर छुय ओमाओम।

वसदीव राज़्नि स्वन् सूंदि कलमो,
बलराम जुवनि स्वन् सूंदि कलमो,
ओमा ओम स्वयंस **तेविसते** परिज़े,
विद्यारंभस कुनुय पा'थ्र्,
ब्रह्मा जुवस मांगय मंगे,
क्वंग् तय स्यंदरे व'थियो ब्रा'टिय,
कृष्ण महाराजस व'थिमो ब्रा'टी,
दय सूंदि धर्मय इंद्र् सूंदि ध्यानय,
कृष्णस योनि वो'थ इंद्र् सूंदि थानय,
नमिथ तू गों'डहय दर्भि डेंटोनुय ,
कृष्ण महाराजस दर्भ डेंटोनुय,
लोलय पूतिस मृगाज़ल ना'ली,
कृष्ण महाराजस मृगाज़ल ना'ली,
वसदीवा राज़स ज़ाफल ज़ण्डो,
दातो करुस ताब्यादा'री,
वसदीव राज़्न्य गुर्य गंड बागस,
म्वखत् चव ढोलस, तखते रवानस,
चाटो करुस ताब्या दा'री,
वसदीव करुस ताब्या दा'री,.
डेक् प्रज़ोलुय ट्यो'क व्वज़ोलये,

कृष्णजुवन ल्यूखनम ओमाओम।
दोयिम अछर छुय **सोयम स**।
ध्याना स्वरिज़े श्री रामुन।
नून व'र तय मोहरय प्रास।
कन्यक ज़ंगे अनेसे।
ब्रह्मणन पिलनोवुस आ'टीपन।
ब्रहस्पतन पिलवुस आ'टीपन।
ब्रहमणन पिलनोवुस श्रानय पट।
ब्रहस्पत् लागुस श्रानय पट।
समिथ दिवता सोनुय आय।
यछ़िथ तू शिवजी सोनुय आव।
माल्य छुननस किन् ब्रह्मा'णी।
माल्य छुननस किन् ब्रहमा'णी।
छ़ा'गिस छुनहय ब्रह्मय गंड।
ग्वरो करुस शेरस ट्यो'क।
बडि बह्मण् कर दातस ट्यो'क।
ट्यो'क कर बादशाह देवानस।
ग्वरो गंडुस ना'रीवन।
ब्रहस्पत् गंडुस ना'रीवन।।
म्वलुल गंड्यज़्यस कां'कन बंद।

खोरन लव् दिव ज़प्के ज़ोरय, ग्वरो वंदयो पादन रथ।
लव् दिव खोरन ब्यियि शिख शेरस, नख् छुख ग्वरस तु् पंडितन।
अवल्कि कवलो लव् दिव खोरन, ग्वरन सूत्य कर श्रुक्य मानमान।
स्वन् सुंद तर्पन द'छिनिस मर्मस, कर्मस ब्यूठुय नारायण।
वसदीव राज़नि मनि क्रेंक् गो'बरो, स'न्य वाजि सूत्य कर आच़मन।
गुहि, ग्यव् द्वध् ग्रुमति नाबद सों'ब्रिथ, अमृत सूत्य कर आच़मन।
कृष्ण महाराज़्ञ सुभद्रा ब्यनिये, समिधन थ'निये मलेसे।
वसदीव राज़ने लाल तय दूरो, अथन समिध् मूरय छ्य।

● वचुन— ह्वंजे

यिम् शे'छि लदहा महारोदरस तय, गछ़तय महनिव दोरावतस।
ब्रह्म् लूककिस ब्रह्मा जियस तय, तस पज़िहे यो'त वातनस।
मेखलि पज़िहस तन दिनस तय, गछ़तय महनिव दोरावतस।
गनपत यारकिस गणपत सा'बस तय, तस पज़िहे यो'त वातनस।
मेखलि पज़िहस संज़ ह्वनस तय, गछ़तय महनिव दोरावतस।
कैलास प्यठ किस शिवनाथस तय, तस पज़िहे यो'त वातनस।
हुम् प्यठ पज़िहस वीद बोज़नस तय, गछ़तय महनिव दोरावतस।
यंद्र् लूक किस यंद्राज़स तय, तस पज़िहे यो'त वातनस।
नाना रंग पोश त'म्य डालि सूज्यनस तय, गछ़तय महनिव दोरावतस।
गगन् प्यठ दिवता भूमि प'क्य सा'रिय, कृष्णस वा'च़ मीखलि वारीये।
यियिव मालि ब्रह्मणव खसिव सानि हेरे, ला'गिव ट्यो'क, पोश,अर्घ शेरे।

स्वर् रूज़िज़ि योनिच ग'र युथन् फेरे, ला'गिव ट्यो'क, पोश,अर्घ शेरे।
ख'सिव मालि वसदीव राज़नि हेरे, कृष्णस वोत मेखलि संस्कार।
रोहणी छि प्रारान चंद्रम नेरे, ला'गिव मालि ट्यो'क, पोश,अर्घ शेरे।
यियिव मालि ब्रह्मणव गछ़िव मालि जमा, क'रिव मालि हुमुक समाचार।
त्रिहकारण महारे'श आयि यो'त सातस, दोहस बोज़नि चो'तुर वीद।
ब्रह्माजी आव अ'ज़्यकिस सातस, वेष्ण तू शिवजी सूतिय ह्यथ।
सावित्री ह्यथ नेरि सायं कालस, दोहस बोज़नि चो'तुर वीद।
रव लो'ग भुवनस छ्व आव कोंगस, संज़ लो'ग मेखल तारनस।
रव लो'ग आकाश प्यठ क्यन दीवन, दीवियन गछ़्हा ज़ारपारस।
यिनम तू परनम सामवीदस। संज़ लो'ग मेखल तारनस।
अगनुक दूह खो'त गगनूचि रा'शी, का'शी अं'द्रिक ब्रहमण आय।
रूखमनि लशेन कृष्णजू आ'शी, का'शी अं'द्रिक ब्रहमण आय।
यज़मन बायि करिनम दहम तय का'शी, बालकृष्ण लशेनम।
रूत्य फल ख'तिम अवतार कृष्णून्य रा'शी, का'शी अंद्रूक्य ब्रहमण आय।

• योन्यस प्यठ वनवुन (जनेऊ पर)

ह्यंजे, स्वमन कपसा ववनय आये, कृष्ण महाराजनि यछ़ाये।
वसदीव राज़न्यन डारन द्राये, चूर दिनि द्राये ग्रीस्य बाये।
शबनम लवि सूत्य ख'सिथ आये, कृष्ण महाराजनि यछ़ाये।
रातस मंज़ स्वय तुलनय आये। कृष्ण महराराजनि यछ़ाये।
वसदीव राज़ने ज़िछि ज़िछि कपसे, दपिसे करसे योने ह्न।

र'थ्य वो'थ तोस् तू अ'थ्य व्यछ़ नोवुय, त'थ्य करनोव मे योने हन।
दिवचि़ व्यछ़्नुय, कनिके को'तये, योने लो'दये नारा'नी।
शारिका भगवती सूथ्रर को'तुय, योने लो'दये नारा'नी।
दिवकी व्यछ़्नुय तू स्वभद्रायि को'तये, योने लो'दये नाराणी।
अगन् क्वंड् मंजू लक्षमी द्राये, त्रे'ह लड् आये जन्म ह्यथ।
सुमीर अ'न्द्रय गायत्रेय द्राये, लोलू पूतिस ह्यथ आये।
परबतू अ'न्द्रय शारिका द्राये, कृष्ण महाराजस गायत्रेय ह्यथ।
अरदाहव नख्यव को'रनम सहाये, लोलू पूतिस ह्यथ आये।
वसदीव राज़नि म्यति डेंछाये, सासूबज़ च्वन्जू तय दाये ह्यथ।
तुलूमुलि अ'न्द्रय राज्ञा द्राये, कृष्ण महाराजस ह्यथ आये।
भीश्मक राज़नि म्यति डेंछाये, त्रिकूटी दिवता तू दीवी ह्यथ।
रूखमन माता पानय आये, लोलू पूतिस गायत्रे'य ह्यथ ।
दीनदयालूनि म्यति डेंछाये, गणपत तू वल्लभा सूतिय ह्यथ।
यारबल प्यठ असि वितस्ता आये, ये'छ़ि महाराज़स गायत्रेय ह्यथ।
समिथ तू विगिन्यव गछि कुठि यूर ओल, मा'ल्य छ़ुन ज़'ल्ययेनि ना'ल्य गोंबरस।
थदि कुठि क'तिजव यूरुय ओलुय मा'ल्य छ़ुन ज़'ल्ययेनि ना'ल्य गोंबरस।
ग्वड्न्य सूंती ज़ंग आयि रूच़्ये, रुंग फो'ल ज़म्बख बागसूय।
ब्रह्मा जुवस मांगय मंगे, कन्या ज़ंगे अनेसे।
योनि छुननस कुनुय पा'थ्रर, नून व'र तू मोहरा प्रास।
गायत्रे'य ज़ंगे क्या क्या पज़े, दानि तो'मुल तय बुदिक्या प्रास।

- *पुष्करनाथ रैणा*

ब्राह्मण दपान क्या कर् तोंमलस, म्य गछ्यम शमल् त् जोरे शाल।
ब्राह्मण दपान क्या कर् नून् हनि, लरि हनि छ्रनहा जूनय डब।
ब्राह्मण दपान क्या कर् वरि हनि, लरि हनि छ्रनहा चूरिम पोर।
ब्राह्मण दपान क्या कर् दान्यस, मे' गछ्यम कानि हामि जागीरा।
यिय च् मंगख तिय ब दिमयो, कृष्णस टूठेनम नारायण।
दिवकी दपन तिय ब् दिमयो, महाराज़स टूठिनम नारायण।

• योनि त्रा'विथ वनवुन (जनेऊ पर) —ह्रांजे-

त्रे'ह लर् ग्वर् सूंज़् त्रे'ह लर् बब् सूंज़्, शु-लो'र योने प्रोवूथो।
त्रे'ह ब्यनिह लजियो चे'य व्यपहारस, योनि लर् तारय प्रावेथो।
ट्यकिस योन्यस का'कून्य बंदस, मा'जी वंदिसे चंदन तन।
कनि फो'ट पो'ज़ तय वनि कुल ज़ोये, अनि गाश ओये त् लशेनय।
योन्यस चा'निस स्वन् सूंज़् टे'चे, यि कस ड्यकय बजे ज़ाव।
योन्यस चा'निस स्वन् सूंज़् चूने, कुकिले कोतर बच्चे ज़ाव।
योन्यस चा'निस स्वन् सूंज़् त्र'चे, कुकिले कोतर बच्चे ज़ाव।

• वचुन- ब्रह्मण जन्मस —— ह्रांजे—

योन्यस चा'निस म्वखत् त् रुन्ये, यि कस राजे स्यने ज़ाव।
यि ज़ाव वसदीव राज़ने रने, ब्यनि ज़ाव कमसासुरने।
कृष्ण महराजो ल'जियो ब्यने, यि कस राजे स्यने ज़ाव।
यिहे ज़ाव बुद्ध अवतारनि रने, बेयि ज़ाव परमीश्वरने।
महाराज़ लालो ल'जियो ब्यन्ये, यि कस राजे स्यने ज़ाव।

च़स गव असरन,ब'र्ग द्राव बोन्यन, ब्रह्मणव गथ क'र योन्यस प्यठ।
ब'र्ग द्रायि वसदीव राज़न्यन बोन्यन, ब्रहस्पतन गथ क'र योन्यस प्य'ठ।
लछि ब'ज़ जीव ज़ा'च़ व्वलॅगिथ आहम, च़ाहम ब्रह्मण ज़नमस मंज़।
वहिक् जून पछ् चो'दृश दोह ज़ाखो, त्यलि ज़ाव पार्वती गणेशजी।
गगरस ख'सिथ प्रकरमस द्राखो, च़ाखो ब्रह्मण ज़नमस मंज़।
चि़त्र् जून् प'छ नवम दोह ज़ाखो, कुशल्या माजे थन् प्योखो।
राक्षसन त् दा'तन गालि्न आखो, च़ाखो ब्रह्मण ज़नमस मंज़।
बा'द्रप्यत् गट्पछि आ'ठम ज़ाखो, दिवकी माताये थन् प्योखो।
राधायि सूत्य रास खेलनि आखो, च़ाखो ब्रह्मण ज़नमस मंज़।
राधा मातायि लतायि ज़ाखो, ज़न्मस आख रूच् कामि करने।
ज़नमस यिथ च़्य कर्म् बो'ड द्राखो, च़ाखो ब्रह्मण ज़नमस मंज़।

● **ब्यख्यायि,** अभीदि, आज़िदर्शुनस, अग्नव'त्रि वनवुन। **ह्यंजे,**

हाथी पोर्च चा'न्द्य तारना'वमय, ब्यक्षायि थाल गरनोवुमय।
विलायत् ज़रकस स्वन तारनोवमय, ब्यक्षायि थाल गरनोवुमय।
ग्वरन को'डनख कन्तल ह्यछविथ, ब्यछिविथ थवुस पुति खोरन तल।
दो'हस फ्यूरहम आमन त् खासन, मासे ति गोख अ'बीदे।
अथन छ्न्यमय स्वन् सूंज् वाजे, माजे गोहम अभीदे।
दोहस फ्यूरहम ज़ून् डबन, बबन ति गोहम अभीदे।
आ'वित्यन जामन कजिमय गे'ज़े, ब्यने ति गोहम अभीदे।
ट्यकिस मंज़बाग छ्योे चिव्य, जिवन ति गोहम अभीदे।

ज़ाहम ईश्वर ज़ूवनि ग्वफे, प्वफे ति गोहम अभीदे।
दोहस फ्यूरहम चाकय वारचन, काकन ति गोहम अभीदे।
दोहस फ्यूरहम जा'गीर गामन, मामन ति गोहम अभीदे।
नाम् लगय कामदीव् खसु सानि हेरे, मामजुव् ब्यनथरस मोहरा त्राव।
माजि हूंज़् व्यस् तय बब् सूंद्य यार्य, मोहर् त् द्यार छिय फिरवान।
अभीदि व'छ्यो रुव्पयि तय मोहरय, शोहरथ गय संसारस स्वय।
अभीदि व'छ्यो रुव्पयि तय मोहरय, ग्वरस थव पुति खोरन तल।
किशमिश रा'ठन वा'हरिथ ड'खिये, पक्षदार आयो अभीद ह्यथ।
किशमिश रा'ठन वा'हरिथ ड'खिये, पक्षदार आयो ट्यो'क करने।
बडि आयि बोल् त् कृष्जुवनि लोलय, शोलय दिववुन ट्यो'कुय लाग।
अ'स्य आयि तति प्यठ् महाराज़नि लोलय, शोलय दिवुन ट्यो'कुय लाग।
दातव क'र्यूस ताब्यादा'री, ग्वरो गंडुस ना'रीवन।
श्रीफल सूत्य क'रिव आज़ि दर्शुन, सुफल लक्षमी वा'तेनव।
कृष्ण महाराजो करु आज़ि दर्शुन, स्वफल लक्षमी वा'तेनव।
ब्रह्मणस निश बेह ध्यान थव वारय, संध्योपासन त् श्रानय व्यद।
अथ् खोर छलिथ बुथ चूय छलखो, अद् चूय करखो प्राणायाम।
वरदय लालो बुथ चूय छलखो, अद् चूय करखो प्राणायाम।
संध्योपासन तय श्रान् व्यद परिज़े, गरि गरि क'रिज़े प्राणायाम।
ग्वरन वो'नयो कन् तल शब्दा, रबदा द्रोयो रामुन ह्युव।
ब्रहस्पतन वोनयो कन्तल् शब्दा, रब्दा द्रोयो बब् सुंद ह्युव।

चंद्र् तारको ब्रह्मा जुवो , मंत्र बडा होवूथो।
शाबाश ब्रह्मा जीनि च़ाटो, पननि गाटय ल्'येनय।
अग्नव'त्र अनिमय ताशवानय, अग्न् राज़् यो'त पानय आव।
वसदीव राज़नि ताशेवानय, गो'बुर छुख बलराम जियुनुय।
कृष्ण जुवन अ'नियो अग्नव'त्र पानय, अग्नराज़् यो'त पानय आव।
अग्नव'त्र अनियो सरि ज़ा'न् कदलय, अदलय महाराज सा'बने।
अग्नव'त्र अ'निमय बारे बारे, दारिदारि ग्यव हुम सारि म्यव् सान।
पंडित त् ज़ितिश हज़ार बूली, हुमस क्युत रो'टुख ग्यव तूल्यतूली।
ब्राह्मण त् ज़ितिश हज़ार बूली, अग्नव'त्र र'टहस तूल्यतूली।
स्वर्ग् प्यठ् अनिमय दिवता च़ा'रिथ, हुमस किच़ च़ा'रहम अग्नव'त्र।
अपारि ओ'नमय गणपथ सा'ब गा'रिथ, विश्वामित्र ह्यथ च़ारनि ब्यूठ।
अग्न क्वंडस द'छुन दार गव, भारगव राम ब्यूठ हुम करने।

हुमस वनवुन

ह्वंजे, हुमस ब्यूठहम राज़य शोन्त्य, दशरथ राजुन ब्रोंथुय गोम।
मंड्ल्य बादाम ज़ूरि प्यट द्'फ छुय, रूफ छुय नाराण जुव'नुय।
हुमस प्यठ ब्यूठहम पूरि दारि म्वखय, अमि स्वख् बरहम वा'न्से सास।
वसदीव राज़् ब्यूठ पूरि दा'रि म्वखय, अमि स्वख् बरहम वा'न्से सास।
अ'गनय क्वडस ग्यव तेल नख् छुय, म्वख् छुय चो'तुरभ्वज़ नारायण।
वसदीव राजुन ग्यव तेल नख् छुय, म्वख् छुय चो'तुरभ्वज़ नारायण।
कैलास दंड् सूत्य अग्न छुख खेलवान, बलवान आस्हम तीज़् स्वो'स्तुय।

वसदीव राज़्नि दंड् सूत्य खेलवान, कृष्णजू आसूहम तीज़् स्वोस्तुय।
सतन व'रियन को'रमय गूरगूरय, हुमस प्यठ छुख दूरन शाह।
च़्यय हो यिव़्न् च़्यय हो आदन, च़्यय हो बागुक बादाम पोश।
च़्यय छुख दिवकी माजि हुंद आदन, च़्यय छुख शारिकायि पादन तल।
बलराम दिवान भंडार साधन, च़्यय हो बागुक बादाम पोश।
च़्यय हो शैवय नाथुन आदन, चे'य पथ गा'लिन मोहर् त् द्यार।
चे़ ग'लिनय मो'हर् द्यार असि छा लादन, च़्यय हो बागुक बादाम पोश।
नाराण जुवुन पोशि क्षुर बो'रमय, चंदनुव गो'रमय व्वमन हुर।
व्वमन हुरिस जूय छिय खानय, दानय दानय हुम सा'।
शुरा कून अग्न मनन व्वमन हो'र बो'रथा, अर्था बूज्य बूज्य हुम करान।
यिय को'र वलबायि गणेश राज़स अर्ज़ा, चानि दोह् चा'न्य भखूत्य निराहार।
रूखमनि ल'स्यनम कृष्णजुव भर्था, अर्था बूज्य बूज्य हुम करान।
वसदीव राज़्नि टाठे गो'बरो, अ'छन छुनहस न्यत्रय पट।
च़्यय छुख मा'लिस त् ग्वरस निशे, च़्यय छुख परान चो़'तुर वीद।
च़्य दीव् गायत्रय व'छ्य आकाशे, अन्न दिव बश्शभस स्वन डेंशो।
स्वन् सुंद योने पा'रावतस, त्रो'ग्न्य मेखल तारनस।
यंद्राज़् सूंदिस ऐरावतस, त्रो'ग्न्य मेखल तारनस।
चे़र् त् बादाम लदयो थालस, लालस हुम तय अरणि रुथ।
सा'रिय दिवता आमूत्य छि सालस, कृष्णस बोज़नि चो़'तुर वीद।
गायत्रय छ्न्यहम वसदीवनिस लालस, लालस हुम तय अरणिरुथ।

चे़र् त् बादाम लदयो ल्वंगनी, असवि्न म्वख् छुम हुम करान।
कृष्ण महाराजस वल्न्य धूती, टूप्य दिथ छुहमो हुम करान।
हुमस क्युत खोर मे म्यव् फो'त दो'बये, खो'ब दिथ छिहमो हुम करान।
वसदीव राज़नि वज़ीर गो'बरो, अकि अकि ख'ज़ूर हुम स'।
वसदीव राज़्नि आदन गो'बरो, अकि अकि बादाम हुम स'।

● हुमस वचुन——ह्यंजे, ह्यंजे-

श्रो'न्य गो'य रो'ज़न ब्ययि रुव्य् ज़ो'न्गलन, हुम करय पाछाह बं'गलन प्यठ।
श्रो'न्य गोय रो'न्यन त् बाज़ोबंधन्य, ख्रूम् दिथ छिहमो हुम करान।
कृष्ण महाराजस पाज़ेब खोरन, हुम करय शे'हजन बोन्यन तल।
वसदीव राज़्नि यारबाश गो'बरो, हुम करय आरवल बागन मंज़।
वसदीव राज़्नि टा'न्पट कुल्यो, हुम करय चंदन कुलिन्य तल।
रो'छ मख ख्वनि त् छुहमो टोठ्य, हुम करय किशमिश रा'ठन मंज़।
वसदीव राज़्नि दौलतमंदो, हुम करय गुलाब बागन मंज़।
लाल् छुन् नेरान शामस स'लस, हुम करस शालमार् पोशन मंज़।
ये'ति प्यठ् गोहम पोंपर सालस, हुम करय क्वंग पोश डोरुचन मंज़।
वसदीवराज़स सूंत्य फ'ल्य गुलाब, हुम करय चूंठ्य पोशि वारुचन मंज़।
स्यद्धि दातो छुख व्यघ्न हरतारो, हुम करय शारिकायि पादन तल।
वसदीवराज़स लंग ल'न्ड ज़ीठ्य, हुम करय टंग् पोशि बागन मंज़।
वसदीवराज़स लंदन जा'गीर, हुम करय चंदन वनन्य मंज़।
वसदीव राज़नि टा'न्पट गो'बरो, हुम करय टा'न्पट कुलिन्य तल।

मंद्यन्यन सिरियस वख़्त ये'लि डलियो   अग़्न ह्यियियो प्रज़लोनुय।
वसदीवराज़ो वख़्त यलि डलियो,   कृष्णजू ह्यियिय प्रज़लोनुय।
हुम् प्यठ् गुम् आयि जय गुपालस,   रुमरुम् करसय रुमालि वाव।
अडकलि गो'बरो ब्वछि मो ल'जियो,   क्वछि क्यथ छहमो हुम करान।
ब्वछि विज़ि दिमहय किशमिश चा़ला,   माजि रानि को'रुय कृष्णलालय नाव।
ब्वछि विज़ि दिमहाय द्वध् पेर् थाला,   दिवकी को'रुय कृष्णलालय नाव।
हुमस प्यठ वा'तिय सा'र्य मेव्ह डाले,   बा'ली गो'बुर छुम हुम करान।
यंद्रन सूज़ असि सा'र्य मेव्ह डाले,   बा'लिय कृष्ण छुम हुम करान।
गुलाल नाव् सू़त्य हावस सू़त्य ज़ुविज़े,   अग्न् प्रवि सू़त्य प्रज़्लिज़े।
च़ो'वुह पक्षाक दुसतथ शा'न्च़्य,   ब्रा'न्च़ रुस प्रोवुथ ब्रह्मय तीज़।
ब्रहस्पथ ग्वरन परिनय शा'न्च़्य,   कृष्णजुव् प्रोवुथ ब्रह्मय तीज़।
नाराण जुवस निश गय शरणे,   तसुंदे म्वख् बोज़ माले वीद।
बूज़िथ सा'र्य पाफ ल'ग्य असि हरने,   शास्त्रुक संवाद ल'गि करने।
दछप्रजापतनिस ज़प यज्ञन्यस तय,   दिवता आयि पोशि दस्तय ह्यथ।
आवाहन को'रुख ब्रह्म लूकस तय,   ब्रह्मा वेश्नन सदाशिव ह्यथ आव।
सत् रे'श ये'ति बीठ्य वीद परनस तय,   दिवता आयि पोशि दस्तय ह्यथ।
वसदीव राज़स धर्म पुरुशस तय,   पूज़ा करनि बीठ्य ब्रह्मदीवस।
पूज़ायि ला'गिनस पंपोश दस्तय,   दिवता आयि पोशि दस्तय ह्यथ।
बलरामजुवस कर्म पुरुशस तय,   पूज़ा करान छुम सत् ऋक्षन।
पूज़ायि ला'गिनस व्यन् पोशि दस्तय,   दिवता आयि पोशि दस्तय ह्यथ।

हांजे वनवुन हियमाल   - पुष्करनाथ रैणा

● वारिदानस वनवुन ------ह्यंजे,

शंकराचार (लम् चे)म्यचे तय गंगय वाने, स्वभद्राये को'र वारेदान।
म्यचि़ तय पा'निस खो'त खंबीर्य, गंबीर खोर असि वारे दान
असि को'र वारिदान सुभद्राये, अर्ज़नदीवनि भा'र्याये।
हर् म्वख चे बजि गंगाये, स्वन् सूज़ि गंगजे रुप् सुंद ठान।
गंग् वानि सूत्य म्य'च़ आ'डरन आये, अर्ज़नदीवनि भा'र्याये।
वसदीव राज़नि टाठे गो'बरो, वारि दानस अनयो काठय हन।
स्वर्ग द्वार् अ'न्दरय क्रा'ज मास् आये, स्वनसुंद वारि फो'त व्वडि प्यठ ह्यथ।
स्वभ'द्रा सा'न्य तस रटने द्राये, अर्ज़न दीवनि भा'र्याये।
वैकुंठ प्यठ् यो'त कामदीन आये, विज़ने चा़ये द्वध ह्यनि तस।
अमि द्वध् सूत्य बत् रननय आये, अर्ज़न दीवनि भा'र्याये।
छत्रहार ल'जयो अन्नपूर्णाये, वारि दानस स्वय रन्ने आये।
शारिका भगवती बा'गर्नि द्राये, अर्ज़न दीवनि भा'र्याये।
र'थ्य व्वथ वारि दान अ'थ्य रो'ट दिवते, सिवके नाराण जुवने।
वारे दानस शे'यत्र्ह चा़रे, हारि वा'ज रनने छ'त्रय हार।
वारे दानस शे'यत्र्ह गग छिय, ब्यनिये लग छय बोय लशेनय।
वारे दानस कुनुय पा'थ्र, नून व'र तय मोहरा प्रास।
सदाशिवस मांगय मंगे, कन्यक ज़ंगे अनेसे।
क्राजि अ'न्य ब'रिथ माजि था'व द'छिनी, प्वफि ह्यच़ अ'छन लागनी।
वारे दानस स'न्दरिसि त्यंगुला, मंगला ज़ंगे अनेसे।

- पुष्करनाथ रैणा

वारे दानस स'न्द्रसि च़ंदन लूशे, ज़िने त्रशे लागेसे।
वारे दानस स'न्द्रसि च़ंदन गनय, वनय वालिसी त्वलसी काठ।
स्वन् सूंज़् वारि गय मिहीन् सूत्य बारे, र'निमय इसतेमा'लिये लिस्ट।
हारि रनि बत् वारि द्रदय सूती, आयि दरि बायि कर अन्नय हुम।
वारि बत् रो'नमय खज़ूर लशे, हुतय शीशय क'रीज़्यस।
स्वभ'द्रायि रो'नयो खजूर लशे, ब्रहस्पत ग्वरो था'व्यज़े'स हुत शीश।
व्वडि टे'क्य पूछ़ तय हलि द्यार द'जिये, व्वथि ड्यक् ब'जिये कें़छ़ा ख्याव।
उगरसीन राज़्न्य कूर्य ड्यक् ब'जिये, कांदुर ओय च़्वचि प'जिये ह्यथ।
वसदीव राज़्न्य खोलि द्यार् द'जिये, व्वथि ड्यक् ब'जिये कें़छ़ा ख्याव।
दीवक राज़न्य कूर्य ड्यक् ब'जिये, कांदुर ओय च़्वचि प'जिये ह्यथ।
च़्वचि ख'न्ड दिच़नय त् ट्यठ् चे़र् प'जिये, व्वथि ड्यक् ब'जिये कें़छ़ा ख्याव।
ब्रहस्पत ग्वरो मटन गछ़िज़े, अथस क्यथ वा'लिज़े टे'क्य कच़्लुय।
असि दीवीयि छि सामवीद ग्यवान, तोह्य ब्रह्मन कोन् शां'च़ परान।
ब्रहस्पत ग्वरो हां'कय टाठ्यो, शेंकय शब्द ति बूज़ुय नो।
तोह्यि छे'व चंद्रह ग'र अ'स्य क्या बोज़व, मंडलस क'च़ गरि रोज़'व'।
बोज़ मालि ब्रह्मणो रोज़ कन दा'रिथ, मंडुल त्रा'व्यज़्यम व्यस्ता'रिथ।
मंडल्चि जायि व्यस्तार् लिववो, अवतार कृष्णय ज़ुवा'ने।
मंडल लेखयो स्वमि स्वमि जाये, शाये श्री भगवान'ने।
मंडल लेखयो नाना रंगय, ज़ंगे ओयो परमीश्वर।
मंडल लेखनस कुनुय पा'थ़्र, नून व'र तय मोहरा प्रास।

नाराण जुवस मांगय मंगे, कन्यक ज़ंगे अनेसे।
मंडलस चा'निस शुराह गरय, मा'न्ज़ि मरेद् बरा'यो।
मंडलस चा'निस लछ्ब'घ्य गरय, क्वंग् स्यंदरे बरा'यो।
मंडल लेखयो पंपोश क'रिथ, पान् भगवान ओय लेखने।
मंडल लेखयो सिरिय् प्रकाशो, नकाश ओ'नुय लेख'ने।
मेखल लेखयो लाल अंबरो, मूरथ छ्य बाल कृष्ण'नी।
मंडल लेखयो क्वंग तय स्यंदरे, यंद्राज़स रुच़ बुवेनय।
मंडल ल्यूखमय ल्यो'दुर तय छो'तुय, नाराण ह्यो'तये आशेनय।
मंडलस चा'निस करे'म पोशि थरे, गरि ल्यूखुय हरिच़ंद्राज़'ने।
अर्श् वो'थ अर्ज़नदीव मंडुल लो'ग लेखने, फर्श् प्यठ ब्रह्मा वुछने आव।
वुछतय ब्रहस्पत ग्वर्न्य अथय, मंडुल कथय करान छुस।
शाबाश ब्रहस्पत ग्वरनिस मानस, मंडुल खोरुन थानस प्यठ।
मंडलस चा'निस गुल गय रोशन, वुनि वुनि पोशन फुलया छ्य।
वसदीव राज़न्य गुल गय रोशन, ल'स्यनस त् क'र्यनस पो'त्रय कार।
दिवकी माले दिल गव रोशन, वुनि वुनि पोशन फुलया जान।
वैकुंठ् अ'न्द्रय मंडुल छु खसान, ब्रह्मा छु वसान वुछ'ने।

• शिव भ्वकच़- राम लक्षमण वनवा'सी गव।

ह्यंजे, राम त् लक्षमण बार्न्य आ'सीये, ख'सिथ त् बीठिय डंडक वन।
बिहित त् खे'यहम व्यपल हाक् खा'सी, राम लक्षमण वनवा'सी गव।
रावुन आयोव ब्रह्मुण ला'गिथ, सीता माता धर्मस दिम।

ज़ोनुख रामजू वनय वा'सिय, राम लक्षमण वनवा'सी गव।
क्रा'जी मा'सी बान् किथ्य आ'सी, अकिय कोंदे पयनय आय।
अ'ड्य द्रायि ख'ड्य फुट्य अड्य स्वन् खा'सिय, राम लक्षमण ।
तिम द'य सतवय बा'र्न्य आ'सिय, तिमन्य ओसुय सतऋष नाव।
संदब्रारि पत् कनि आसान आ'सिय, राम लक्षमण वनवा'सी गव।
तिम द'य पा'न्च़वय बार्न्य आ'सिय, तिमन्य ओसुय पांडव नाव।
पांडव राज़्न्य संतान आ'सिय, राम लक्षमण वनवा'सी गव।
तिम द'य त्रे'नवय बार्न्य आ'सिय, तिमन्य ओसुय त्रकारण नाव।
वे'शनलूक्, ब्रह्मलूक्, का'लास् वा'सी, राम लक्षमण वनवा'सी गव।
त्यलिकिय बट् क्या धर्मी आ'सिय, का'श्य दोह् करान निराहार।
बा'श्य दोह् ख्यवान ब्रन् सूर खा'सी। राम लक्षमण वनवा'सी गव।
अ'ज़्यकी बट् क्या पा'पी आ'सिय, का'श्य दोह ख्यवान गारि फलहार।
बा'श दोह ख्यवान न्यनि बत् खा'सिय, राम लक्षमण वनवा'सी गव।
त्यलिकिय बट् क्या धर्मी आ'सिय, सत् वुहुर आ'स्य करान कन्या दान।
तिमन्य स्वर्ग्य बर व'थ्य आसिय, राम लक्षमण वनवा'सी गव।
अ'ज़्यकिय बट् क्या पापी आ'सिय, सत् वर्यशन कोरचन अथ् दारान।
तिमन्य नरक्य बर व'थ्य आ'सिय, राम लक्षमण वनवा'सी गव।

शिव भ्वकच् -गछ़तय रामजुव बोज़िना म्योन। **ह्यंजे,**

ओम पूज़ि किच् माल् कस्यम पोशन तय, गछ़तय रामजू बोज़िना म्योन।
दशरथ राज़न तफ़ को'रनम तय, म्यानि मरि गो'छ़ युन अवतार।

त'थ्य गरि ज़न्म ह्यो'त रामच़्द्रन तय, गछ़तय रामजू बोज़िना म्योन।
अश्वमीध यज्ञ को'र दशरथ राज़न तय, तमि मंज़् ख'तिस खिर बान् ज़्ह।
स्वनव त्रेयव ख्यव बा'गरिथ ज़न तय, गछ़तय रामजू बोज़िना म्योन।
स्वनव त्रेयव ख्यव बा'गरिथ ज़न तय, कोश्ल्यायि निशे रामजू ज़ाव।
भरत राज़् ज़ामय कैकयी जन तय, गछ़तय रामजू बोज़िना म्योन।
शत्रुघ्न ज़ामय सुमित्रायि ज़न तय, सुमित्रायि निशे लक्षमणजू ज़ाव।
थन् ये'लि प्यय तिम च़ोर बार्न्य तय, गछ़तय रामजू बोज़िना म्योन।
गोरन ज़ातुख ये'लि गो'न्डनख तय, ज़ातकन तिहुंज़न र्त्य र्त्य गुण।
रामच़्द्रन व'रनम सूता ज़न तय, गछ़तय रामजू बोज़िना म्योन।
बायो वलिथम बुर्ज़् कायो, बायो खो'तखो दंडक वन।
को'शल्या दपान कस ह्यक् भा'विथ, रामजुवस कुस अनि मनना'विथ।
असवूनि कोसम ला'ग्यतोस शेरे, द'प्तोस सानि वति फेरे ना।
कृष्ण खो'त वन तय तोर् कुस वाल्यस, योर् ख'सि ब्रह्मा त् मन् नाव्यस।
च़ो'दाह व'रिये गोदाव'रिये, हरिये वोलुय मन् ना'विथ क्या।

● **शिव भ्वकच (शिव भक्ति पद) राम त् कृष्ण अवता'री आव।**

ह्वंजे- हुमस प्यठ आमृत्य दिवता सा'रिय, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
गर्भस यलि आव राम अवता'री, ख्वश गय दिवता सा'रिये।
ज़ोनुख त्र्भवनुक आदेका'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
राम ज़नमस आव पान् अवता'री, ख्वश गय दिवता सा'रिये।
अंजूल्य ग'न्ड्य ग'न्ड्य व'थिय सा'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।

दिवकी गर्भस आव अवता'री, मुकट तय अलंका'रीये।
गगन्क्य दिवता आयि भूमि प्यठ सा'रिय, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
कृष्ण् पक्षि येलि ज़ाव कृष्ण् अवता'री, आ'ठम ब्वदवार रुहणी साथ।
गंधर्व आयि मृदंग ह्यथ सा'रिय, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
थन् यलि प्योहम पान् अवता'री, च़ो'तुर भ्वज़ वे'श्ण् रूप दा'रीये।
त'म्य खेल क'रनस जमनायि पा'रिय, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
देवकी क्वछि ह्यो'त पान् अवता'री, च़ो'तुर भुज़ नारायण होवनस पान।
कथ् करिनस निम जमनायि पा'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
ग'च़ चानि दारि बर व'थ्य गय सा'रिय वसदीव ह्यथ अवता'रिये।
तति बीठ निद्रा वश गय सा'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
वसदीव द्वार् द्राव ह्यथ अवता'री, मीघव सासव को'रुख वर्शुन।
छ'त्र् कनि शीशनाग फन दा'रिथ सा'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
मद ओस जमनायि यमनायि बा'री, वसदीव ह्यथ अवता'रीये।
जमनायि तार द्युत बडि व्यस्ता'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
वसदीव च़ाव नंद गोरिनि दा'री, असव्निस मनस कोरुन संदार।
तति आ'स माया वश गय सा'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
वसदीवन कन्यख ता'र जमनायि पा'री, देवकी दो'पुन च़् हलम दार।
बाकि सूत्य रा'छ हुशयार गय सा'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।
कंसस रा'छदर नादस गय लारे, दिवकी अ्'ठिम गर्भ ज़ाव।
मन गोस चंचल मन कति प्रा'री, राम त् कृष्ण अवता'री आव।

- पुष्करनाथ रैणा

खोरव तुज़्न कन्यक त'म्य अहंका'री,
आकाशि दिच़नस तमि वा'णी।
शो'थुर चोन बलवान जमनायि पा'री,
राम त्र् कृष्ण अवता'री आव।
यंद्रस अहंकार वा'लिन सा'री,
वाम भाग किसि प्यठ पर्वत ह्यथ।
तति प्यठ्र् नाव द्रास गुवर्धन दा'री,
राम त्र् कृष्ण अवता'री आव।
का'लीनाग यमनायि व्यह्र् रूप धा'री,
कामधीन च्यथ गय रामशरने।
सास्र् फन्र् सूत्य तस मुरलीधा'री
राम त्र् कृष्ण अवता'री आव।
दिवकी द्वख दूर क'रिन सा'री,
जसदायि नंदस ह्युतनय ज्ञान।
कंसस क'र्न नरक्र् उदारी,
राम त्र् कृष्ण अवता'री आव।
रावनन लूक्र् लज़ि वीह कम दा'री,
शशि, रव आज्ञा का'रीये।
हलमत्र् व्यथ कर ला'न्कि पा'री,
राम त्र् कृष्ण अवता'री आव।
वन्र् आ'स ज़नकस कुन्य कुमारी,
वरने जग ओस सा'रिये।
हनुमान ओसुय बाल ब्रह्मचा'री,
राम त्र् कृष्ण अवता'री आव।

● शिव भ्वकच़- त'र्सि नाराणस गछ़ शरणे।

ह्यंजे, वाहन गरुड पीतांबरस,
त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
वसदीव राज़निस धर्मस त्र् दानस,
दिवकी ह्रंदिस पा'च़्र रत्नस।
कृष्णन ज़न्म ह्यो'त मथरायि थानस,
त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
नंद गूपालस भागे वानस,
कृष्णजूव रो'छनम नखस प्यठ।
जसदायि द्वध ह्युत पान्र् भगवानस,
त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
गुल्यगं'डिथ वो'नहय पान्र् भगवानस,
छुख स्वा'मी त्र् छिय चा'नी दास।
दितनख वस्त्र गय तिम पानस,
त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।

- *पुष्करनाथ रैणा*

कृष्णजुवन खेल क'र का'ली नागस, चरण् कमलव सूत्य म्यूननस पान।
ना'गिनि शरणें आयि पान् भगवानस, त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
गणीश राज़न जाय र'ट मामल थानस, क्व'ठि छस वल्लबा अथि पंपोश।
ग्वडनिच पूज़ा र'टनम पानस, त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
सदा शिवन जाय र'ट कैलास थानस, जे'टि छस गंगा हटि वासुक।
अ'निन व्यमा व'र्न पानस, त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
ब्रह्माहन जाय र'ट मंज़ मा'दानस, नख् छुस विष्णो म्वख् मनीश्वर।
अ'निथ गायत्रेय व'रनम पानस, त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
तुलसी जाय र'ट व्वतम थानस, पूज़ि ख'च़ पननिस नाराणस।
तिय आव लेखन् भागवत पुराणस, त'्सि नाराणस गछ़ शरणे।
मा'ज्य राज्ञन्या छम तुलमुलि थानस, खिर खंड नाबद छुस प्रयान।
अ'निथ भूतीश्वर व'र्न पानस, त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
मा'ज शारिका कश्मीर थानस, तल् छुस पर्वत प्यठ् आकाश।
हुमा को'रवो तसंदिस थानस, त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
त्रिकूटी दिवता कश्मीर थानस नाना रंग पोशव पूज़ा क'रहख।
तिमय वातनावन कृष्णनिस थानस, त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
राम राम क'रिज़े भवसर् त'रिज़े, र्खमनि पूज़ा न्यथ क'रिज़े।
र्खमन टा'ठिस भवसर् तारे'स, त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
कति वीर अर्ज़नस सास् ब्वज़दा'री, भार्गव राम रूप दा'रीये।
क्षत्रेय *हीन दण्ड* भूमि युन अवतारी, राम त् कृष्ण अवता'री आव।

मन कर अर्पन श्री भगवानस,
टोठिय छुय न् अद् कांह चे़ गम।
सोरुय अर्पन कर नाराणस,
त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।
गरि गरि शरण गछ़ हरि नाराणस,
क्या छु तस पर् यस टोठि श्रीराम।
भखतिस छु अर्पन करान पानस,
त'स्य नाराणस गछ़ शरणे।

● **शिव भ्वकच़- च़्य परमधामय भविनय जय---- ह्यंजे,**

च़्य परमधामय भविनय जय।
नारायण वे'ष्ण् रूप भगवानय,
न्यराकार छुख निरामय।
गाविंद परमानंद रूप रामय,
च़्य परमधामय भ'विनय जय।
वामन वसदीव सहस्र नामय,
रावन गालन्च आ'स प्रय।
पथकालि ईश्वरस राज मंजामय,
च़्य परमधामय भ'विनय जय।
ज़नकराज़नि गरि ज़न्म धार्यामय,
वन् वन् फेरान व'न्य दितिमय।
हनि हनि तनि प्ूरिम बुज़्र जामय,
च़्य परमधामय भ'विनय जय।
मनि मंज़ वनि आम अंतरयामय,
कैकी वासना फीरिथ ग'य।
तव पत् ईशरन राज लज़ामय,
च़्य परमधामय भ'विनय जय।
वनवास को'रुन मनि तस आमय,
लक्षमण सूत्य ह्यथ त् नीरिथ गय।
सामान त्रा'व्य ये'लि प्ूर्य बुज़्र जामय।
च़्य परमधामय भ'विनय जय।
पत् पत् द्राव शहर निरामय।
कम कम वीद कम कम न्यरनय।
जंगलन मंज़ सत्संग बोज़ामय,
च़्य परमधामय भ'विनय जय।
श्रूच्य वीद बूज़िथ कन श्रोच़ामय,
लारनस तस पत् विनथ क'रमय।
वन् मंज़ राक्षस द्र्ून्ठ्य आयामय,
च़्य परमधामय भ'विनय जय।
लक्षमणजुव पत् तूर्य सोज़ामय,

- पुष्करनाथ रैणा

राவुन आम ब'डि क्रूधू कामय, लंकायि नियनस त् होवनम भय।
ज़ा'जनस त् गा'जनस ला'जनस धामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
दम दिय दिय त'म्य भ्रम दिचामय, कर्मस क्या कर् बूज़नम नय।
धर्मस प्यठ मन दृढ थाव्यामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
राक्षस अ'न्द्य अ'न्द्य रा'छ रोज़ामय, सूत्य क्या आसुम कीवल दय।
न्यथ सुबुह शाम रामराम ज़प्यामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
गद गद वा'नियव य'च़ वज़ामय, क्या सना बोज़ना चोनुय पय।
हलमत आव ओ'ननम पैगामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
दो'पनम यो'त वाति पान् श्रीरामय, दूरिर्क्य दोह व्वन्य पूरय गय।
त'म्य स्ंदि वनन् सूत्य ब्ययि ज़ुव चायामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
आख ये'लि लंकायि प्यठ् बोज़ामय, गोलुथन रावुन को'रथस ख्यय।
सूत्य नियथस त् गम गोस् द्रामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
गर् वा'त्य गरिक्य ब्रोंठ् द्रायामय, सा'रिस्य न'गरस ग'य शो'हरथ।
भरत राज़् नीरिथ आव नंद गामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
दोह पां'श् गय क्या पाफ खचामय, क्या ज़ान् कमि दोह क्या व्वनमय।
पर् पा'वथस बर् क'रथस खामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
संताप त्रा'विथ स्वख प्राव्यामय, क्या कर् मर् मर् छुम मरनय।
पनिन्यव त् पर्द्यव दिच़हम पामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।
लक्षमणज़ुव ब्ययि म'च़्रनि आमय, वनस निनुक बोज़ाम पय।
त्रा'विथ गोम गोम मंद्यन शामय, ़च्य परमधामय भ'विनय जय।

जंगलन मंज़ फ'रयाद दिचामय, व्याद क्या आ'स्म पय दर पय।
नाद कां'सि बूज़िम न् पाद व्वलस्यामय, च्य परमधामय भ'विनय जय।
बाक् बाक दिय दिय चाख ग'यामय, ज़ोनुम न् ब्यियि व्वन्य जिंदगी छम।
ज्ञान विज्ञान विचार आयामय, च्य परमधामय भ'विनय जय।
रात दोह ईश्वरस यिय मंजामय, ही दयि आ'स्यनम चा'नी प्रय।
चाख गा'म जिगरस आख न'न्य द्रामय, च्य परमधामय भ'विनय जय।
वाल्मीक्य ऋोश तोर बूज़िथ त् द्रामय, गर् नियनस त् गयम धर्म्च प्रय।
ज़ान हा'वनम अद् मान प्राव्यामय, च्य परम धामय भ'विनय जय।
दोह् अकि ब्रहस्पत व्वदयस आमय, अर्द रातुक ओस समय।
गोस् द्राम सोरुय लव क्वश ज़ायामय, च्य परम धामय भ'विनय जय।
द्वख म'शरा'विथ स्वख प्राव्यामय, ये'मि विज़ि यिम ज़् बार्न्य थन् प्यय।
भयि त्रा'विथ वार् पा'ठी यछ़ामय, च्य परम धामय भ'विनय जय।
वुनिक्यन पादन तल नियामय, पान् छुख आसवुन जित्यंदे'य।
आवार् क'रथस शहर् त् गामय, च्य परम धामय भ'विनय जय।
युथ सा'न्पनिथ तोति दिच़थम पामय, शुर्य ला'ज़ राज़् कोन् मशान छय।
दितिथम तीर ब्रोंठ् थ'र किन्य द्रामय, च्य परम धामय भ'विनय जय।
कव् ज़ान् ईशरन क्या लेछामय, चोनुय दूरचर कर ब् ज़रहा।
व्वन्य वस् भूमि तल भूमि गछ़ि त्रामय, च्य परम धामय भ'विनय जय।
प्रकाश हावतम साले'ग्रामय, दीवी दारन व'न्य दितिमय।
नाव चोन स्वरहा हर सुबह शामय, च्य परमधामय भ'विनय जय।

• साफस(दस्तारस) वनवुन

ह्यंजे, स्वमन कपसा ववनय आये, कृष्ण महाराजनि यछ़ाये।
वसदीव राज़न्यन डारन द्राये। चूर दिनि द्राये ग्रीस्य बाये।
शबनम लवि सूत्य ख'सिथ आये, कृष्णमहाराजनि यछ़ाये।
रातस मंज़ स्वय तुलनय आये। कृष्ण महाराजनि यछ़ाये।
डालि वोतुय तोस् त् बालि व्यछ़ नोवुय, बालि करना'व्र्य दस्तारहन।
वसदीव राज़ने ज़िछि ज़िछि कपसे, दपसिय क'रसय दस्तारहन।
र'थ्य वो'थ तोस् त् अ'थ्य व्यछ़नोवुय, स'य करनोवमय दस्तारहन।
मामनि व्यछ़नुय तोस् फो'तय, माजि को'तुय कलाबोत तार।
अदवलि टोपेहन बदवल जमाले, प'ल्युन दस्तार को'रमय मलिख यारे।
वोव्र्य ओ'नुय त्वर्दार दो'ब्य ओ'नुय मायिदार भक्तावार गो'बरो गंड दस्तार
मोहरा छलव्न्य वार् वार् छ'लिज़्यस, ओ'ब्र् मायि क'र्यज़्यस अंदवंद तान्य
मा'ज भवा'न्य आयि मंज़ भवसरिये, महाराज़स क्युत ज़'रिये दस्तार ह्यथ
मा'ज भवा'न्य आयि अं'दिये अं'दिये, महाराज़स किच़ बाला बंधिये ह्यथ।
दो'ब्य ओ'नुय दस्तार गाह लो'ग त्रावने, ताह को'रुय माजि भवाने।
दस्तार गंडनस संज़ ह्योतूयो, मंज़ ह्योतूयो परमीश्वर।
लाल्नि टोपि छु म्वखतुव दोवुय, सदा सोवुय आशेनय।
दस्तार गो'न्ड हय द'छिने दारे, हारे ब्रारे स्यदय स्यो'द।
दस्तार गो'न्डयो जूनय डबे, कुनुय पा'थ्र्र वला'से।
नाराण जुवस मांगय मंगे, कन्यक ज़ंगे अनेसे।

\- *पुष्करनाथ रैणा*

दस्तार ज़ंगे क्या क्या पज़े, छत्रहार तू कंद रो'पय।
कृष्ण महाराजस क्या क्या पज़े, नून व'र तू मोहरा प्रास।
चीरि क'म्य गंजियो अगस्त म्यत्री, प्यतरी गो'न्ढयो खिरकि दस्तार।
दस्तारस ओय द'छिन्य पो'छुय, ये'छ़िथ लो'दुय माजि भवाने।
दस्तारस छय स्वनू सूंज़ू ट्यकय, ड्यकय बो'डुय नेरेहम।

● व्यूग- मेखलि विज़ि (रंगोली)

ह्यंजे, व्यूग लेखयो समि समि जाये, शाये श्री भगवान'ने।
व्यूग लेखयो सतय रंगे, ज़ंगे ओयो परमीश्वर।
वीगिस चा'निस गुल गय रोशन, वुनि वुनि पोशन फुलया जान।
वसदीव राज़न्यन गुल गय रोशन, ल'स्यनस तू क'रिनस पो'त्रय कार।
दिवकी माजे गुल गय रोशन, वुनि वुनि पोशन फुलया जान।
व्यूग छुय प्रारान रोगे खसो, लसहम तू वसहम यारयबल।
छुन पुति ख्वाविहन दुशमन ज़ेर छुय, शेर छुय राजे राम ब'द्रा'नुय।
बरू नेरवुनुय कर स्यदि दाता, राज़ा गणेश सूतिय ह्यथ।
कोंतुल्य गुर्य तय खस ज़ा'पानस, जुर छुख दीवक राज़'नुय।
वस यारबल तय खस नीलू गुरिस्य, मामन वोलखो क्व'छे क्यथ।
द'छिने योने खोवूर्य माले, बाल गोपाल वसियारय बल।
त्रे'ह ओम क'रिथ त्रे'ह ओम वाख छुय, रुद्रओम, भ'द्रओम, श्रानय व्यद।
यारबल वो'थहम तोशान तोशान, नेतूर् खा'त्रय रोशान छुम।
कृष्णजू वो'थमय तोशान तोशान, वसदीव बबस रोशान छुम।

अथि फो'ल, कलशि लव,कलशि डून, क्षमा पोश।

मा'ज पा'र्य ल'जियो मां'ज़े पखन्य, सा'द् फुटजि छे'य नखन् प्यठ।
अग्न स्वकला'विथ अथिफो'ल ह्ययिव मालि, ख्ययिव मालि पादशाह बाग्च दछ।
यारबल खसिथ कलशिलव ह्यतमो, नारा'ण्य लो'दयो लछगो'न आय।
कलशिचि लवि सूत्य सा'र्य पाफ वसनय, अग्न्चि प्रव् सूत्य प्रज़लिज़े।
कलशिचि लवि सूत्य सा'र्य पाफ वसनय, स्यो'द रोज़ सारिन्य दर्शनस।
अरशे व'थ्यिमिति लक्षमी नाराणो, फरशे प्यठकुय बादाम तुल।
वसदीव्ने जाना वारो, अग्नस ह्ययिव मालि क्षमा पोश।
यियिव मालि ब्रह्मणो सानि छुव संगा, न्यरमल गंगा वा'चा'वो।
अश्वमीद यज्ञन्यस क्या क्या पज़े तवय रज़े स्वर्ग् मंडोल।

● ब्रह्मणन दक्षणा

ह्यंजे, पंडितन द'छिन ब्रह्मणन ति पज़े, तवय रज़े स्वर्ग् मंडोल।
सराफ क'दलिय सराफ सा'रिय, सन्दार रुव्पयि ह्यचख चा़र्य चा़र्य।
कबीर जियो गंड मुच़र कुछे, बा'गर द्वछ़े द्वछ़े द्यार।
खास् सामानस करु परवाना, द'छिनि विज़ि बलदानव द्राख।
दान् विज़ि कां'सि क'रिज़ि न् अपमाना, तिय छुस पानस गनीमत।
स्वन् सूंज़ि रिकिबे रुव्पयि छु द'छिने, व्वन्य चे़ र'छिनय नारायण।

● आ'ही त् आशीरवाद

ह्यंजे, द'छिन दितिथ मालि द'छिनि नरे, आय त् आरोग्य वा'चीनय।
ब्रह्मणन दितिथ मालि वस्त्र वास, आ'सेनय रुमय रे'शुन आय।

ग्वरस पोंब्र ग्वर् माजि पो'टये, धर्मय नारायन जुव'ने।
ब्रह्मणन ग्युतुथ मालि नर्मद् पो'टये, लालन त्रो'ट छुय शोल् दिवान।
ब्रह्मणन ग्युतुथ मालि नर्मद् पो'टये, धर्मय नारायन जुव'ने।
ब्रह्मण्रन ग्युतुथ् मालि बद्लिथ त्रामा, स्वर्ग्चि का'मा सां'प्न्यो।
ब्रह्मणन दिच्र्थ मालि रुपयि त् मोहरय, शोहरथ ग'यिय संसारस्य।
प्यंजे कूनस व्यस्तार् लिवयो, अवतार कृष्ण जुव'ने।
बता को'रुथ मालि माजन प्रिछ़िथ, दरबा'र्य बाजन ज़ियाफथ।
बता कोरुथ मालि डेंबन अंदर, बेमन क'र्थ मालि ज़ियाफथ
बता कोरुथ मालि ब्यन्यन प्रिछ़िथ, स्वजन क'र्थ मालि ज़ियाफथ।
बत् विज़ि भवा'न्य गय ख्वश हालो, आगन वो'लुनय दुशालो।
व्यश्वाम्यत्रन बत् को'रुय,अर्जन दीवन पिलनोवुय,रामचंद्रन वातनोवुय।
कोरुथ मालि बता ख्रावा छून्थि, नावा द्रोय मालि राज़ बीरबल।
बता कोरुथ मालि बागन अंदर, आगस क'र्थ मालि ज़ियाफथ।
टे'किस मंज़बाग छुय मालि च्युवय, जिवन ति क'र्थ मालि ज़ियाफथ।
बता कोरुथ मालि नो'रा फिरिथ, व्वन्य बेह त् मालि थरा दिथ।
वा'गीश्वरी कलपा'न्त का'सी, वखनय सा'न्य ज़िंद् आ'सिन आद्यअंत तान्य।
वस्दीव राज़् ल'सिन,ह'स्तिस ख'सिन, बत्बो'ड आ'सिन पत्वत तान्य।
वसदीवस मों'गुन नेथ्र बलरामन को'रुस आ'मीन, ज़ा'मीन चसय गणपथ सा'ब।
दिवकी माजि छय चपक'ल्य वछस, पछस सुम्ब करना'विन आतश बा'ज़्य।

ब्रह्मणस -लग्न् चोरि वनवुन

ह्यंजे,र'थ्य वो'थ ब्रह्मुण खो'त व्यमानस, यो'त आव सा'निस थानस प्यठ।
ओर् आव ब्रह्मुण च़ाव द्वारिकाये, योर् द्रायस दिवकी आलथ ह्यथ।
होवस्यव सूज़यो ब्रह्मुण को'नुय, महाराज़ लालस त् लूक् लछस।
ओर् आव ब्रह्मुण त् ग'छ़ितोस शरण् ,प्येयतोस परन्य पादन तल।

वीगिस नच़न्क्य वच़न ।

१. हुम् वो'थुम त् वीगि खो'तुम, तोत् वो'थुम यारबल।
मास् लालन क्वछि ह्योतुम, तोत् वो'थुम यारबल।
रंग् यंदरस तोस् को'तुम, तोत् वो'थुम यारबल।
२. हा'र व'छ़्म नच़ने, सा'र स्वन् स्ंज़ये।
हारि गछ़ि त्वलसी, स्वति स्वन् स्ंज़ये।
हारि गछ़ि जुमक् जूर्य, स्वति स्वन् स्ंज़ये।
हा'र व'छ़्म नच़ने, सा'र स्वन् स्ंज़ये।
३. नीलिस द्रमनस अमरे'त् वर्शुन, म्यह बालि राशुन प'पिथ आव।
ये'लि ज़ाव लाल् सा'ब, त्यलि को'र करशुन
ज़न आव त्यलि असि गटि मंज़ गाश।
कृष्णय आ'ठम द्यतनम दर्शुन, म्यह बालि राशुन प'पिथ आव।
४. पोंपुर शमहस क'रिथ गथा, रथहा वंदय मालिञो।
मे' छम बब् लालञ सथा, रथहा वंदय मालिञो।
म्यह छम बा'य लालञ सथा, रथहा वंदय मालिञो।

पोंपुर दिवान शमहस गथा, रथहा वंदय मालिञो।

५. चिंदान लाल् गोम गिंदान ला'ले। चिंदान लाल् गोम गिंदान ला'ले।

बा'ग्य बो'ड लाल् गोम गिंदान ला'ले, यार बाश लाल् गोम गिंदान ला'ले।

माम् बो'ड लाल् गोम गिंदान ला'ले, बडि शान् लाल् गोम गिंदान ला'ले।

६.खांदरस प्यठ रोव हुर्य बा'थ-- म्यानि तरफ् यज़मन बायन कुनः-

ल्वति ल्वति प्'र्य त्राव यज़मन बा'ये, यज़मन बा'ये,
स्वर्गा प'रिये, नचि़ रंग् चऱिये, नचि़ रंग् चऱिये।

प्यरनस चा'निस कलाबोत का'री कलाबोत का'री,
ह्यो'र खार न'रिये, नचि़ रंग् चऱिये, नचि़ रंग् चऱिये।

प्यरनस चा'निस ज़ा'विज डूर छय, ज़ा'विज डूर छय।
को'्ठि थाव द'रिये, नचि़ रंग् चऱिये, नचि़ रंग् चऱिये।

माल्यन्यन चान्यन कोंकल चाल छय, कोंकल चाल छय,
पोह ट्रंक् ब'रिये, नचि़ रंग् चऱिये, नचि़ रंग् चऱिये।

रेशे वारि ह्रंज़ अ'स्'ल ज़ात कूर छख, अ'स्'ल ज़ात कूर छख,
अ'्सि छिन् ख'रिये, नचि़ रंग् चऱिये, नचि़ रंग् चऱिये।

वास् स'स्य व्यस् दास् लीला छय परान, लीला छय परान,
प्यठ तुम्बक ना'रिये, नचि़ रंग् चऱिये, नचि़ रंग् चऱिये।

रीशिम साडि चानि बोने प'त्र्य, बोने प'त्र्य,
सोल तिल् ज़'रिये, नचि़ रंग् चऱिये, नचि़ रंग् चऱिये।

बालि ओस तमना, मेखल दिमना, मेखल दिमना,
ब्रह्मण शुरिये, नचि़ रंग् चऱिये, नचि़ रंग् चऱिये।

बालि ओस तमना, मुथ्य मो'र रटना, मुथ्य मो'र रटना,
ज़रबाफ न'रिये, नचि़ रंग् च़रिये, नचि़ रंग् च़रिये।
मा'ल्य ग'रिय कनवा'ल्य, माजि जुमक् जूरी, माजि जुमक् जूरी।
बा'य दू'र् ह'रिये, नचि़ रंग् च़रिये, नचि़ रंग् च़रिये।
नरचन चान्यन स्वन् सूंद्य क'रिये, स्वन् सूंद्य क'रिये,
ज़न छि वाल् ब'रिय, नचि़ रंग् च़रिये, नचि़ रंग् च़रिये।
स्वन् सूंज़ि कंगने पाटिव पन तोर, पाटिव पन तोर,
चांदि हूंद्य ब'रिये, नचि़ रंग् च़रिये, नचि़ रंग् च़रिये।
म्वख चोन शू'भान, कीश चा'ञ परेशान, कीश चा'ञ परेशान,
रोयस ठ'रिये, नचि़ रंग् च़रिये, नचि़ रंग् च़रिये।
हियि पोशस कुन अख नज़रा त्राव, नज़रा त्राव,
हय गुलाब थ'रिये, नचि़ रंग् च़रिये, नचि़ रंग् च़रिये।
गूव्यंद् नावुक श्र'वञ गोम कनन्य, श्र'वञ गोम कनन्य,
र'वनि ग्वड़् ह'रिये, नचि़ रंग् च़रिये, नचि़ रंग् च़रिये।

टिप्पनी तथा संदर्भ।

1 श्रीमती तारादेवी, टंकीपुर श्रीनगर निवासी द्वारा 'कश्मीरी वनवन माला' का संकलन करके तीन भागों में छपवाया था। जो कि परम संता माता राधा देवी की प्रेरणा से लिखवाया गया था। यह पुस्तकें अब बाज़ार में उपलब्ध नहीं हैं।

2. 'का'शूर वनवन माला' नवंबर १६७७ नार्मल प्रस श्रीनगर कश्मीर में छपवा कर व्यशमा'ली राज़दान द्वारा प्रकाशित ।

3 श्रीमती कमलावती कौल द्वारा लिखित,'लोल् वखनय' तथा प्रकाशक श्री सूरज कृष्ण कौल,(के, ए, एस) उदयवाला जम्मू। 4 श्रीमती लक्षमीश्वरी कांदरू अनंतनाग।

5 गोपी रैणा कुलगांव, अनंतनाग प्रकाशन 1981। 6 'वनवनमाला' (वैदिक अनुसार-?) जयकिशोरी बखशी 1980. 7। श्रुत ह्यंज़े वनवुनः—श्रीमती मुगलानी वची निवासी, श्रीमती ज़ालाजी (बहूरानी) दर श्रीनगर, श्रीमती शोभावती दर हरमैन, शुपयान निवासी तथा श्रीमती परमीश्वरी दर सहीपुर कुपवारा कश्मीर-गोलगुजराल जम्मू ,आदि।

8. अभिज्ञान शकंतुलम 9 अमर कोष 10. शंकर कृत सौंदर्य लहरी, तथा कश्मीरी अनुवाद श्री ओमकार नाथ च्रोंगू 11 श्री चक्र -एस शंकरनरायनन 1979। 12 नालंदा शब्दकोष।

2 ह्यंज़े का अर्थः-

आवाहन कोरुख ब्रह्म लूकस तय, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ह्यथ आव।

सतुरे'श ये'ति बीठ्य वीद परनस तय, दिवता आयि पोशि दसतय ह्यथ।

ह्यंज़े वैदिक शब्द का अपभ्रंश है जिसका अर्थ है 'किसी उच्च व्यक्ति को पुकारना या बुलाना (a collective vedic meteric call)। ह्यंज़े का अर्थ संस्कृत शब्द कोष में नहीं मिलता है अपितु अमर कोश में इस का इशारा दिया गया है। अभिज्ञानशिकुन्तलम act I page 19. by M.R. Kale Ist Edition 1898.p.19- हला A particle of address for a friend (of high rank; see com.) also हण्डे, ह्येंजे, हलावाहे,, नीचां, चेटीं, सखीं प्रति A.Kosh (अमर कोष) Thanks to prof. M.M Tikoo Anantnag.

नाद दिन् सूत्यन आयि पार्वतिये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।'नाद दिन् सूते'न'

में पार्वती माता को ही संबोधन है तथा Shri Chakra by S. Shankaranan, Pondichery 2 ,Sri Aurobindo Ashram, 1979.p 13 publishers Dipti Publications.

'Thus the concept of Chakra puja in the Tantra is a bold one, a practicle means to convert the whole community of men into an assembly of gods'. (Here men can mean inclusive of women).

Also see ibid,pp 12,13-'Man does not live all by himself. He lives amidst his fellow beings and whether he wills or not, he is influenced by him. The Tantra Sastra recognizes this fact and seeks to correlate their solutions in a way that is mutually enriching. It gives, so to say, a way of life, a religion to the society also, so that both the individual and aggregate can join and help each other in their common effort which is to realize the Harmony and Joy of the Spirit in terrestrial creation.' M.P. Pandit: Lights on the Tantra

कश्मीर के कुछ विद्वानो ने हिमज़ा या हेमज़ा को ह्यंज़े शब्द का उद्गम माना है।

3.शांतरस की अनुभूति तथा ह्यंज़े —The transformation of the atmosphere of phenomanality into spiral dimension is enhanced through the the totality of music and sound by giving rise to Shant Ras or delight of 'I' consciousness and in terms of which is experienced divinity or 'chmatkar'..enstatic absorption or 'samavaesh'

4.संस्कार-यूं तो समस्त हिंदु समाज के लिए सौलह संस्कार नियमित किये गए हैं किंतु पुरातन ऋषियों द्वारा कश्मीरी ब्राह्मणों के लिए चौबीस संस्कारों का नियमित रूप से अनुष्ठान करना अनिवार्य रखा गया है जिनका कश्मीरी पंडित समाज पालन करता आया है। प्रत्येक संस्कार अपने निश्चित समय पर ही आयोजित करने का विधान है, इसका समय किसी भी प्रकार से (किसी असाधारण परस्थिति को छोड कर) टाला नहीं जा सकता है। पहला संस्कार संपन्न किये बिना अगला संस्कार नहीं हो सकता। हर संस्कार पर 'ह्यंज़े वनवुन' नहीं होता है। इसी लिए वर्तमान में हो रहे मेखला या विवाह संस्कार में ह्यंज़े वनवुन में लडके अथवा लडकी का गर्भाधान से लेकर प्रस्तुत संस्कार तक पिछले सारे संस्कारों के निश्चित समय पर अनुष्ठान किए जाने का व्योरा साक्ष्य के निमित इसलिए दिया जाता है कि अब बच्चे प्रस्तुत संस्कार के लिए नितांत उपयुक्त हैं। जैसेः-

आ'ठन र्‍यतन क्रेठ क्या बो'रमय, नविमे रे'तय ज़ाव ल्यलबान। (प्रसूती)
त्रुयिस त्रे'ह त्रख तेल क्या को'रमय, शे'यि त्रे'कि श'स्त्र ग'रू्म क्राय। (त्रुय)
दन्द गूज सा'र्य मसालृक्य क'रमय, को'रमय बरख्वरदारू्य नाव। आदि

अर्थ यह कि विवाह या मेखला के समय इन संस्कारों के बारे में गाया जाता है कि आज के संस्कार से पहले के सारे तुम्हारे संस्कार संपन्न हो चुके हैं। तो लोगों ने इस वनवुन का अर्थ यह निकाला कि सारे संस्कार मेखला या विवाह के समय ही संपन्न किये जा सकते हैं जो कि नितांत अनुचित है। असाधारण परस्थिति को छोडकर समय पर ही हर संस्कार संपन्न करना शुभ होता है। जैसे काहनेथ्रू (जातकर्म) ग्यारहवें दिन, मेखला संस्कार ८ से १५ वर्श की आयु में ही करना शुभ है। एक स्नातक या प्रोफेसर को तखती पर गुरुजी जब पहला अक्षर (अ, आ) लिखाते हैं तथा महिलाएं गाती हैं-

'स्वन् सुंदि दुर्दल रुव्य् सुंदि कलमो, ग्वडन्युक अछुर छुय ओमाओम'।

आगे चलकर लडके को महिलाएं वनवुन द्वारा स्नान तथा संध्योपासना के बारे में बताते हैं।

त्रेह वोम करिथ त्रे'ह ओम वाख छुय, रुद्र वोम, भद्र वोम श्रानय व्यद।।

बीस पच्चीस वर्ष या इससे अधिक आयु वाले स्नातक को जनेऊ संस्कार के समय स्नान विधि बताना तथा पहला अक्षर 'ओमाओम' पढाना हंसने योग्य बात है ऐसा करना निरर्थक औपचारिकता ही है। ऐसा ही दूसरे संस्कारों जैसे लोसि व्थुन, बुर्ज़्म्यट, लठ मो'कलावृन आदि के बारे में भी कहा जा सकता है।

५. **ग्वर** (गुरु)- ब्राह्मण जो वेद, शास्त्र तथा कर्म कांड का जानने वाला, व्यावहारिकता में परांगत तथा मंत्रों का अर्थ जानने वाला हो अर्थात ब्रहस्पति जैसा व्यक्ति। कश्मीर में रहने वाला हर पुरुश नारी सभी ब्राह्मण हैं। इनमें कोई वर्ण विभाजन नहीं था न अब ही है। इनका कोई पुरोहित नहीं होता था। कहा जाता है पहले कि कश्मीर में रहने वाला हर ब्राह्मण निर्धारित कर्म कांड में परांगत होता था तथा प्रत्येक संस्कार कर्म स्वयं ही करता था। अंतेष्टि आदि विशेष संस्कार अपनी बरादरी का वरिष्ठ ब्राह्मण ही संपन्न करता था। महिला वर्ग भी पूर्ण रूपेण कम विद्वषी नहीं थी, पुरुष वर्ग को पुरुष ब्राह्मण तथा महिला वर्ग को ब्राह्मणी

ज्ञानार्जन करती थीं। समय के परिवर्तन से मुसलमान शास्कों के दौर में ब्राह्मणों ने अपने काम को दो वर्गों में बांट लिया ताकि रोज़गार भी प्राप्त हो तथा अपना धर्म कर्म भी डूब न पाए। जो समाज की कर्म काण्ड प्रक्रिया को जारी रखेंगें। वे शास्त्र विद्या सिखाने के साथ साथ परोहित का काम भी करने लगे, समाज में उनको शुद्ध ब्राह्मण गुरु या ब्राह्माजी कहा जाने लगा। इन का घर गुरु कुल का भार वहन करने लगा। कन्याओं को गुराईन स्त्री संबंधित सारे गुप्त संस्कारों की जानकारी तथा शिक्षा देती थी। बालिका को उसके घर पर ही विद्यार्जन कराया जाता था। यह कार्य गुराईन संभाल लेती थीं। बालिका को मंत्र आदि सिखा कर घर ग्रहस्थी के पवित्र नियम सिखाये जाते थे। जिनमें प्रातः जागकर उठना, हाथ मुंह धोने की विधि, शोचाचार (श्रोचा़चा़र), शुद्ध श्रूच़ भोजन या खान पीन, जीवन मूल्य जैसे हया शर्म, दया धर्म, उच्च कर्म तथा क्रिया कर्म, घर की स्वच्छता जैसे (ब्रांदफश, सनिवा'र खा़न्य, द्वारस लव़् दिनि, दानस लिवुन त़् संद्रावुन, अग्नस छत्रहार् तो'मुलचि आहुति दिनि, दानस म्यट, त़् सनिवारे'न बत़् त्रावुन') तथा प्रातः पक्षियों का भाग देना। इसके अतिरिक्त मात्रत्व शिक्षा के मुख्य गोपनीय नियम, जैसे रजुसुलापन आदि को संभालना आदि तथा संस्कारों की जानकारी इत्यादि। अत्‌गथ, ज़ंग आदि की भी जानकारी दी जाती थी। अध्यात्म की शिक्षा सरल रोचक किंतु ऊंचे स्तर की पहेलियों में प्रशनोत्री द्वारा दी जाती थी। जैसे.

हु कुस ब़् कुस ते'लि वन च़् कुस- तथा जून मा'ज जूने अंगन मंगन --।

गुरुओं को अत्यंत आदर की दृष्टि से देखा जाने लगा। इस आदर की भावना ने आपस में विवाह का सूत्र टूट गया (पिता त़् पुरोहित कुनुय गव' सथ च़्यथ आनंद विज्ञान रव'। परमानंद ज्ञान प्रकाश पृष्ठ १४४)।

६. **ड्यजहो'र** या **ड्यजहुर- ड्यजहोर** का जोडा अर्थात सोने का वह षटकोणी आभूषण या मंगल सूत्र जो पिता अपनी पुत्री को विवाह के समय पहनाता हैं। शंकर रचित सौंदर्य लहरी के श्लोक ५९-६० में माता भगवती के कानों में पहने जाने वाले अलंकारों के बारे में वर्णन गया है।

श्लोक - स्फुरद्गण्डाभोग-प्रतिफलित-ताटंक युगलं,

चतुष्चक्रं मन्ये तव मुखंदिम मन्मथरथम। ५९

अर्थ-हे माता! अनेक रत्नों की चमक से दैदीप्यमान आपका कपोलस्थल निर्मल दर्पण के समान है उनमें आपके कर्णयुगल में धारण किए हुए कर्णफूल जो गोलाकार होने से ऐसे लगते हैं कि वे मनमथ के रथ के पहिए हों। तथा- सरस्वत्या सूक्तीरमश्त-लहरी-कौशलहरीः

पिबन्त्याशर्वाणिश्रवण-चुलुकाभ्यामविरलम् ।चमत्कार-श्लाघा-

चलितशिरः कुण्डलगणो, झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इवते। ६०

अर्थः हे भगवती! गद्य-पद्य स्वरूप स्तुतियों को जो कि देवी सरस्वती की शोभन वाणी तथा अमश्त लहरी के कौशल को दूर करने वाली है, उसको आप निरंतर अपने कर्णरूप चशकों से सादर सुनती हैं, उसके चमत्कार पूर्ण एवं माधुर्य से आनंदित होकर जब आप उसकी प्रशंसा में अपना मस्तक हिलाती हैं, तब वे कण्डलगण भी उस स्तुति वाणी के श्रवण से चमत्कृत हो कर हिलते हैं, जिससे मणिगणों की जो झंकार-ध्वनि होती है,उस से ऐसा लगता है कि वे कुण्डल भी माधुर्यपूर्ण, अमृतमय वाणी की प्रशंसा का अनुमोदन कर रहे हों। श्री ओमकार नाथ च्रोंगू द्वारा कश्मीरी भाषा में इन का अनुवाद इस प्रकार हैः-

ड्यजहो'र ज़ूर्य मुगंडन प्रव् त्रावान,। ज़न कामदीवसुंद च़् पयि रथ पकान। ५९

वाखदीवी ह्वंज़ अमश्त् अस्तुति, छ्य लगान मीठ त् कन चे़ आनंद तुलान।

ड्यजह'र्य कन वज़ान व्यकासस तिम यिवान। ६०

ऊपर दिये अर्थ में 'ताटंक युगलं एवं कुण्डलगणो' को 'ड्यजहो'र' के अर्थ में लिया गया है। मेरे विचार में यदि 'मनमथ रथं' के चक्रों को ध्यान में रखा जाए तो यह कानों के कुंडलों को दर्शाता है तथा कुण्डलगण' कुंलडयों को दर्शाता है न कि ड्यजहो'र को जो कि षट्कोणी आकार का होता है। फिर भी इसका आंकलन जनता ही कर सकती है

मेरी अनुभूति में ड्यजहो'र या ड्यजहुर आभूषण पहनने का प्रचलन शिव पार्वती विवाह जितना पुराना हो सकता है। ड्यजहो'र शब्द ड्यज तथा हो'र दो शब्दों की संधि से

बना है। 'ड्यज' 'डीज' अर्थात दान में दी गई वस्तु का पर्याय ही है और 'हो'र' का अर्थ जोडा होता है। जैसे दूर् हो'र, वनवनहुर, नरि हो'र, अ'ट् हुर(शरीर के साथ बांधकर रखने वाला रसी का जोडा) आदि। 'डीज' शब्द एक नहर का नाम भी है जो लडकी को दहेज (दायज, दायजा) में दी गई थी।(बूछू त्राल के एक वरिष्ठ पुरुष लस् बूछू जो अपनी आयु ११० वर्ष से अधिक बता रहे थे, ने १९६३ ई० में तेजराम के चक पंचपोरा में सुनाई थी कि एक वर्ष भयंकर अकाल पडा था तो एक पिता ने बूछू ग्राम में बियाही गई अपनी बेटी के सूखे खेतों की सींचाई के लिए एक नहर खुदवाई थी)। यह नहर लारीयार ग्राम के खंडवाव नदी के साथ मिलकर वर्तमान मंदिर के पास से होकर वातल आरा को चीर कर बूछू पहुंच जाती है (लारीयार तथा बूछू तक का भाग की यह नहर अब शेष नहीं रही है)। यह डीज शब्द एकवचन होने के कारण 'हो'र' साथ में नहीं लगा है। अर्थात डीज का ड्यजहो'र शब्द के साथ अवश्य निकट संबंघ स्थापित किया जा सकता है। कन्या को दान के रूप में दी हुई मूल्यवान वस्तु सोने के आभूषण हो'र के सिवा और क्या हो सकता है? जिस ड्यजहो'र को दिवगोन के समय मंत्रयुक्त करके लडकी को सौंप कर कन्या दान किया जाता है। वास्तव में की बनावट श्रीचक्र का ही बिंब है जो दो त्रिकोणों को आपस में उलटा सटाकर (षट्कोण) बनता है इस प्रकार इस में बने दो सुराखों के बीचों बीच अठ की रस्सी को उतारा जाता है। डे'जहो'र के नीचे की ओर अट्हो'र पिरोया जाता है जो कि विकास का सूचक है तथा त्रिकोण के दो भुजाओं को आगे बढा कर कानों में पिरोया जाता है। कहा जाता है कि अपने भक्तों को दर्शन देने के लिए शारिका रूप माता पार्वती तरंग, फिरन, लूंगि, डे'जहो'र, अठ अटहो'र, जूज, पूच़ आदि पहने हुए सफेद शेर पर सवार होकर प्रगट हुई थीं।

७. व्यूगः देखें अंतिम पृष्ठ- purified circular place with drawing of 2 to 3 feet dia 16 lotus petals inside and filled with red powdered lime, mehendi and white lime, a first meeting(union) point of bride and groom at the time of reception of marriage party accompanying groom. Also used on thread ceremony with different purpose.

व्यूग का अर्थ है योग अर्थात एक होना। साफ भूमि पर गाय के गोबर तथा मिट्टी से लिपाई की जाती है, तथा इसी पर गोलाकार व्यूग बनाया जाता है। दुल्हे के आने के बाद उसको

आदर से व्यूग पर लाया जाता है। जो श्रीचक्र का सर्वशापरिपूरक नाम चक्र ही है। इस में श्रीचक्र के १६ घर होते हैं। जो त्रिकोण, षटकोण तथा लकीरों से बनता है। जहां प्रत्येक देवता के लिए एक ही मण्डल लगता है वहां श्रीचक्र केवल शिवशक्ति के लिए ही है। इसका आकार बाहर से मंडलाकर होता है। १६ कमलदल इन 16 घरों का प्रतीक है। यह **16 घर कामकर्शणी, बद्धि, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, चित्त, धैर्य, स्मृति, नाम, बीज, आत्मा, अमृत तथा शरीर है।** इसलिए व्यूग बनाते समय १६ दल कमल के बनाये जाने को कहा गया है। जिसमें दूसरे रंगों के अतिरिक्त चूना, महेंदी तथा लाल रंग का समावेश होना आवश्यक माना गया है। लाल रंग अंड का प्रतीक है मरेद या चूना बीज तथा मेहंदी जीवन का प्रतीक है।

Shree charka which verily the macrocosm as well as macrocosm is the body of the two in one. p45 chapter 8. Sri Chakra s.Shankanarayanan.1979 Edition

व्यूग गोलाकार बनाया जाता है। 'ह्वंज़े वनवुन' में व्यूग के लिए १६ घर कहे गए हैं– इस का अर्थ योग या मिलान, जोड, शिवपार्वती के स्तर तक पहुंचकर एक दूसरे के हृदय में प्रवेश करके एक होना अर्थ सिद्ध होता है। श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः। अर्थात 'Sri Chakra is the one body of Shiva couple' Bharav Yamla pp 39 . ibid

वीगिस चा'निस शुराह गरय, मां'ज़ि मरेदि बर'यो।
व्यूग लेखयो शिवय नाथो, नकाश आव व्यूग लेखने।

श्रीचक्र के १६ कमल दल के स्थान पर

कुंड़लिनी योग में इस तथ्य को १२ घरों से दर्शाया गया है। इनमें

कमल दल १२ अनाहत चक्रं खं गं घं डं चं छं जं झं न्यं टं ठं, प्रवृतियोग, स्थानत्र हृदय, प्रहरी देवतात्र पार्वती शिव, फल त्रपरकाया प्रवेश, गुणत्र सर्व में भगवत दृष्टि, शक्ति काकिनी, रंग अरुण–आदि। (देखें पृष्ठ १५०, जीवनी स्वामी गोविंद कौल वनपोह, मुद्रित २००६ अंतिम पृष्ठ पर की तालिका। लेखक पुष्कर नाथ रैणा, लारीयार त्राल,९६ मनोरमा विहार बोडी पट्टा २ जम्मू)।

- पुष्करनाथ रैणा

व्यूग पर चावल से भरी दो छोटी थालियां रखी जाती हैं जन पर व'र (गर्म मसालों से बनी टिक्की) तथा मोहर या रुपया रखा जाता है। स्मरण रहे कि योग में वासना तृप्ति का कोई स्थान नहीं है।

7 (क) मंडल विशेष लकीरें खेंचकर बनाई जाती हैं।

'The Mandal is pictorial representation of process of the descent or devolution of one supreme consciousness, step by step, layer by layer into this creation of multitude forms'. In south India, it is a practice in most of the homes to draw a Mandal in front of the house in the morning to bring auspiciousness and to ward off evil. The Tamil name of Mandal is Kolam. The Concept Of Cakra By S.Sankarnarayanan page 9 & note below .

8. द्वार पूज़ा (लडकी के घर के दरवाज़े की पूजा करना)-द्वार कोटि तीर्थ ही कहा जाता है। इसी लिए प्रातः दरवाज़े को सब ओर से ताज़े पानी की मंत्र (ओम सिद्ध लक्ष्मी नमः, महा लक्ष्मी नमः।) पढकर छींटे दी जाती हैं। जिनका अपना घर हो तो विवाह के समय अवश्य अपने द्वार की ही पूजा हो जानी चाहिए। इससे संपन्नता आती है। द्वार पूजा के समय केवल दम्पति, उनके पिता तथा दोनों ओर के गुरुजी होते हैं इस कारण द्वार पूजा तथा लगन अपने ही घर में सम्पन्न होना चाहिए यदि संभव हो।

9. पारम डून्य -संतान उत्पत्ति के बारे में मंत्र का अर्थ कन्या को बताकर गुरुजी ७ से ११ अखरोट इसके पल्लू में डालता है। जो संतति का ही प्रतीक है। यह अखरोट लेकर लडकी अपने सुसर के पल्लू में कर डालती है जिसका आशय है कि जितने यह अखरोट हैं इतनी संतति उत्पन्न करके अपने परिवार की वृद्धि करूंगी। सुसर अपने पल्लू में इन्हे लेते हुए संतति का पोशन करने का वचन देता है। **इस प्रण को निभाना समाज का धर्म है। इसी प्रण को न निभाने का परिणाम समाज देख ही रहा है।**

10. लायबोय गंग्र् व्यस- अग्नि के गिर्द फेरे देते समय लडकी का छोटा भाई लाज या लायि फेंकता हुआ अग्न के समक्ष साक्षी देता है कि उस की बहन इन्हीं लाज के समान स्वछ हैं तथा लडकी की छोटी बहन गंगा का पानी लेकर साक्षी देती है कि उसकी बहन गंगा के पानी के समान निर्मल तथा निर्दोश है।

11.नील वठ- लगन के अंतिम चरण में वर वधू दोनों अपना दाईयां पैर एक पत्थर पर एक दूसरे के ऊपर रखते है कि दोनों का अब एक होकर नया जीवन आरंभ हो रहा है। दोनों के आपसी धर्मयुक्त संबंधों की बुनियाद इसी पत्थर के मानंद सुदृढ रहेंगे, टूटेंगे नहीं, गुरुजी को परमीश्वर जानकर ही उनके सामने दंपति द्वारा यह शपथ ली जाती है।

12–.विदाई -पिटार् (ट्रंक),दही- डोली या विदाई के समय दुल्हन के ट्रंक में थोडा नमक, अन्न जैसे रोटी (च़्वचि), थोडे से सूखे मेवे जैसे मूंगफली, अखरोट बादाम, कुछ मीठा पदार्थ जैसे शीरीनी या नबात तथा खजूर खोबानी अब टाफी, चॉकोलेट आदि रखे जाते है, तथा इसमें अतगत, आलथ जंग जैसे कुछ रुपए, नून, व'र, चावल, छत्रहार, दही, अटहुर तथा कलव'ल्युन, कपडे, खडाऊं या चपल, बर्तन आदि भी साथ में रखे जाते हैं। लडकी को खिडकी से निकाल कर विदाई दी जाती है क्योंकि दान दी हुई कन्या वापस पिता के घर के द्वार में से होकर नहीं आ सकती। क'न्यको'ट या को'न भी साथमें दिया जाता है जो दही के घडे को भी संभालता है। इसके अतिरिक्त दोनों के कुठ ध्रुन (honeymoon) के वासते शुभ मुहूर्त तथा शुभ वार (It is now well accepted fact that good qualities in a child is combination of gene chemistry at the conception time.)हो तो रोठ खबर भी साथ में दी जाती है। माता पिता एक वर्ष तक लडकी का यूग प्रूग करते हैं ताकि संपर्क में रह कर लडकी मानसिक तोर से स्वस्थ रहे। महत्व पूर्ण पर्वों पर लडकी को अवश्य बुलाया जाता है।

नोटः-(रजसुलापन चार दिन, एकादशी और त्रियोदशी मिलाकर कुल छः दिन गर्भदान नहीं करना चाहिए। शेष प्रशस्त दस दिन गर्भादान के लिए उत्तम हैं। उन में भी युग्मरात्री even nights में पुत्र तथा अयुग्म रात्री odd nights में पुत्री गर्भ में आती है। शेष बचे चौदह रात्रियां निष्फल होती हैं। दिन, सायं प्रातः को संभोग नहीं करना चाहिए।) देखें मनोस्मृति श्लोक विवेचन पृष्ठ ११ पर।

13.टे'क्य पूच़- गुरुजी जनेऊ संस्कार के समय य'ज़मनबाय के पूच़ पर सिंदूर से श्री चक्र तथा अरतल पत्ते के आकार लिख लेता था। कार्यक्रम के बाद टे'कि पूच़ सात दिन तक रखने का विधान है। इस को ज़ा'ग्यश्वर कहा जाता है। सातवें दिन महिलाऐं इक्कठे मिलकर तरंग पूच़ का थोडा सा भाग धोते है। उसके बाद ही शेष कपडे धो सकते हैं। आपत काल

तथा देश धर्म के नाते कपडे धोने के विधान में परिवर्तन की संभावना हो सकती है।

14.त्रे'ह लर् ग्वर् सुंज़् त्रे'ह लर् बब् सुंज , शु-लों'र योने प्रोवूथो। अर्थात गुरु कुल में रहकर बालक को क्रिया सिखाने के लिए तीन लडी वाला सूत्र अस्थाई तोर पहनाय जाता था। अपने घर आकर पिता उसको गृहस्थ में रहने के योग्य बनाने के लिए विधिवत जनेऊ संस्कार करते समय अपनी ओर से तीन लडी जनेऊ पहनाते हैं तथा गुरु द्वारा डाली गई अस्थाई लडियां उतारी जाती हैं। किंतु विवाह पर लडकी का पिता लडकी की तीन लडियां दुल्हे को पहनाता है।

15. कश्मीरी पंडित समाज का लक्ष्य-ऋषियों ने किसी भी समाज संगठन के लिए विशेष परस्थिति को ध्यान में रखकर कोई एक मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया हुआ होता है। जिस को ध्यान में रखकर समाज या संगठन आगे का कार्यक्रम चलाता है जैसे महाराष्ट्र में गणेश उत्सव समाज के रगों में घुस गया है। या श्री जगन्नाथ भगवान तथा रथ सवारी का महोतस्व उडीसा क्षेत्र के निवासियों के अंतःकरण में घुस गया है। पुरातन ऋषियों ने कश्मीरी ब्राह्मणों में स्थानीय वातावर्ण तथा परस्थितियों के अनुरूप सरस्वती देवी की प्राप्ति का लक्ष्य निर्धारित किया हुआ रखा है। इस सीमा तक कि सरस्वति देवी कश्मीरी पंडितों के रक्त में आत्मसात हो गई लगती है। जिसके बारे में अधिकांश जनता अनभिज्ञ हैं। कितना ही सम्पन्न मनुष्य हो या कितना ही दीन या कंगाल किंतु सरस्वति रूपी विद्या को अवश्य ही प्राप्त करना लक्ष्य रहा है। ऋषियों द्वारा कश्मीरी पंडितों के लिए सरस्वति का लक्ष्य निर्धारण करना ही हमारी वर्तमान दुर्दशा के निवारण में सहायक हुआ है और हो रहा है जो हम स्वयं अपनी आंखों से देख रहे हैं। जबकि हमारे हर विलाप प्रलाप को अवज्ञा के कानों से सुना जाता है। १६८६ कश्मीर में ही हमारे घर तथा धरती छिन गए है तथा इस समय संसार में हमारे बारे में कोई व्यक्ति देश या धर्म परवाह भी नहीं करता है। हमारे लिए रखा हुआ वही लक्ष्य अर्थात सरस्वति हमारे काम आकर हमारी सहायता कर रही है और आगे भी करेगी।

इस लक्ष्य प्राप्ति की साधना के लिए हमारे लिए कुछ नियम रखे गए हैं जो अत्यंत अनिवार्य

तथा आवश्यक हैं वे हैं-

१. **लक्ष्य प्राप्ति के प्रति समर्पण** २. शुद्ध भाव तथा जागरूता से **साधना** करना ३. ईमानदारी तथा **निष्कपटता**। इस शुद्धता की प्राप्ति के लिए ही कश्मीरी पंडितों के लिए शुद्ध संस्कारों को सुदृढ तरीके से अपनाने के लिए जोर दिया गया है। इस लिए संस्कारों का स्थान प्रथम है। जिस से आने वाली पीढी सुदृढ तथा अपने धर्म पर अडिग तथा सुसंपन्न हो। समय समय पर इन संस्कारों को विकृत होने से बचाया गया है। कश्मीरी पंडितों में प्रचलित विवाह या जनेऊ आदि अन्य संस्कारों की पृष्ठ भूमि बहुत ही श्रेष्ठ तथा ऊंची है। जिस में, स्थूल, सूक्षम शरीर तथा अंतःकरण को स्वच्छ तथा शुद्ध बनाने के लिए विधान बनाया गया है ताकि हमारी आगामी पीढी या संतान शुद्ध संस्कार युक्त होकर संसार में आयें तथा आने वाले समय के लिए पवित्र मन तथा अंतःकरण संपन्न होकर चलें।

24 संस्कार-कश्मीरी पंडितों में सम्पन्न होने वाले इन २४ संस्कारों का सक्षेप में व्योरा क्रमबद्ध शंश्खला में दिया जाता है जिन को अपने ही निधारिंत समय पर सम्पन्न करना अनिवार्य है (किसी असाधारण परस्थिति जैसे मश्त्यु या शल्य चिकितसा आदि को छोडकर) समय निकल जाने पर इन का करना न करने जैसा है तथा कुछ भी फलदायक नहीं होता है। अंत्येष्टि को छोड कर शेश २३ संस्कारों का संक्षिप्त व्योरा नीचे दिया गया है (इन में से छः संस्कार महिलाओं से संबंधत हैं)। जैसेः-

1.गर्भादानः-conceptional ceremoneyशुभ समय, वार, तिथि, नक्षत्र को ध्यान में रखकर प्रजलन द्वारा गर्भ स्थापित होने के पश्चात गर्भादान संस्कार होता है। बच्चे की सर्वांगीन विकास की प्रक्रिया माता के पेट से ही आरम्भ होती है। अर्थात यह संस्कार माता के पेट में आने पर ही घरवालों द्वारा सावधानी के तोर पर आरंभ कर दिया जाता है। क्योंकि बच्चे पर वैदिक संस्कारों का प्रभाव माता के गर्भ में आते ही पडना आरंभ होता है। हमारे इतिहास के अनुसार महर्षि बामदेव, श्री हनुमान जी, प्रहलाद भक्त और अष्टावृक आदि ने माता के गर्भ में ही वेद और शास्त्रों की विद्या प्राप्त कर ली थी और जन्मते ही पूर्ण ज्ञानवान हो गए थे। इसी तरह माता सुभद्रा के पेट में ही अभिमन्यु ने शस्त्र विद्या प्राप्त कर ली थी

और वह अपने पिता अर्जुन की गैर हाज़िरी में कौरवों के चक्र व्यूह का भेदन कर दिया था। महर्षि वालमीकी जी ने लव और कुश को युद्ध विद्या शस्त्र प्रयोग, शास्त्रो के रहस्य गर्भ में ही सिखा दिए थे। प्रहलाद भगत जब गर्भ में थे तो ऋषि के आश्रम में रह कर उसकी माता ज्ञान सुनती थी उसी ज्ञान सुनने के कारण प्रहलाद जी राक्षस जाति के होते हुए भी परम भक्त हो गए थे। (श्री नवलकिशोर द्वारा अनुवादित उर्दू भागवत १६३६ लाहोर)।

गर्भवती माता यदि दूर्दशन के कार्यक्रम नियमित ढंग से देख लेती होगी तो इसका प्रभाव बच्चे पर भी अवश्य पडता है और शिशु जन्म लेने के पश्चात ही टी वी की ओर आकृष्ट होता है। श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करने के लिए पहला संस्कार गर्भादान है।

गर्भादान के तीसरे मास में गुरुजी अग्नि में आहुति देकर वैदिक मंत्र पढ कर गर्भवती पर पानी की छींटें छिडक देते है।

2.सीमांतोन्नयनः-limiting the movement on odd times during pragnency and mental upgradation of featus गर्भादान के चौथे, छटे या आठवें मास में किया जाता है। चौथे महीने में बच्चे की मानसिक शक्तियों की वृद्धि के लिए किया जाता है (हिंदी शब्द कोष तथा रिसाला ओम १६५३ ई)। आठवें महीने में अग्नि में आहुति दी जाती है। नारीवन लपेटे दो समधि को एक दूसरे को काटते हुए तीन बार चेहरे के सामने लाकर गर्भवती शपथ लेती है कि वह प्रौढ महिला की तरह व्यवहार करेगी तथा गर्भावस्था में निषध समय पर घर से बाहर दूर न जाएगी। समधि को लपेटे हुए नारीवन को पहनाया जाता है ताकि किसी भी आगंतुक को इस के गर्भवती होने का आभास हो जाए।

3.पनसुवनः-reduction of pains (आहुति) जब शिशु माता के गर्भ में आता है। तो गर्भ की रक्षा के लिए यह संस्कार किया जाता है। अग्नि में आहुतियां दी जाती है तथा आठवे मास में यह संस्कार लडका होने के लिए भी किया जाता है। महिलाएं जलते चूल्हे में चावल की आहुतियां देती थीं।

4.लठ मोक्लावुन-for better milch सातवे मास में दूध देने का विधान है जिसमें गर्भवती को मायके से दूध दही साथ देते हैं जिसमें वह खडाऊं पहनकर सुसराल के बरामदे

तक आकर खडाऊँ बरामदे पर ही छोड कर घर में प्रवेश करती है।

5.त्रुय- A home made preparation distribured on the 3rd day of parturationप्रसूती के बाद तीसरे दिन दंद गूज तिल, अखरोट चीनी नमक आदि तेल में बुनकर बांटा जाता है। प्रसूती के सात दिन तक हुर के गिर्द लिपाई करके तेल चूना डाला जाता था। तथा हुर्य राजा के लिए पवित्र अन्न कोनों पर डाला जाता था।

6.श्रान स्वंदर- A herbal antiseptic hot water bath of baby and mother on seventh day प्रसूती के सातवें दिन नवजात तथा प्रसूता तथा को औषद्धि युक्त उबले पानी से नहलाया जाता है तथा पहली बार शिशु को नए कपडे पहनाये जाते हैं। तथा उसकी माता को भी साफ तथा शुद्ध कपडे पहनाए जाते है। अब दोनों शुद्ध हो जाते हैं। फिर शोख तू पुनसुन किया जाता है। जिसे स्वंदर कहते हैं। जिसकी विधि इस प्रकार है। कि पडोस की सारी महिलाएं मिलकर इस संस्कार का आयोजन करती हैं। सामने शुद्ध पानी का घडा रखकर शिशु को माता की गोद में बिठाकर घर की वरिष्ठ महिला बोज पत्र की बती बनाकर सामने रखे हुए दीपक की लो से जलाती हैं और आर्शीवाद देते हुए सरके गिर्द तीन बार घुमाकर शोख तू प्वनसुन बोल कर पानी के घडे में डालती हैं। अब उपस्थित दूसरे लोगों के सर पर घुमाती हुई यही प्रक्रिया दुहराई जाती है। अनुपस्थित लोगों के नाम पर भी ऐसा तीन बार किया जाता है। फिर महिलाओं में भोजन वितरण होता है।

7.नामकरणः allot name to baby जन्म पत्री के अनुसार श्रान स्वंदर के रोज़ ही नवजात का नाम रखा जाता है।

8.जातकर्म या काहनेथ्रूरः-purification from previus births and refresh piety of couples' relation बालक का पिछले जन्म की जाति से शुद्धिकरण के लिए एक होम किया जाता है। बालक का पिता बालक को सूंघ कर साक्षी देता है कि शिशु उसी के बीज से है यह संस्कार ग्यारहवें दिन ही किया जाता है। उस दिन इसके लिए किसी महूर्त की आवश्यकता नहीं। काहनेथ्रूर के किए बिना शिशु के माता पिता को संभोग नहीं करना चाहिए क्योंकि 'आत्मनो जायते पुत्रः' अर्थात 'पिता पुत्र के रूप में ही पैदा होता है। इस

लिए पत्नि आंशिक रूप से पति की मां बन जाती है। काहनेथूर संस्कार करने से इस दोष का निवारण होता है। बालक का पिता बच्चे की जीहवा पर सोने की सिलाई से घी और शहद से ओम लिखता है और उसके कान में 'त्वंवेदोसि' कहता है। यदि किसी कारण वश ग्यारहवें दिन जातकर्म नहीं होसके तो शुभ महूर्त में तुरंत इसको संपन्न करना आवश्यक है।

9.सूर्य दर्शन expose the baby to sun to cure some liver and alied disorders 12 वें दिन शिशु को आंगन में बने व्यूग मंडल या रंगोली पर लाया जाकर काजवठ के साथ बिठाया जाता है और सूर्य दर्शन कराने के बाद नानके भेज कर वापस लाया जाता है। कुछ रोज़ थोडी देर के लिए सूर्य दर्शन नवजात के लिए शुभ होता है।

10.मास नेथूर- birthday after one month जब शिशु एक मास का हो जाता है। तो क्षीर बनाई जाती है और जलते चूल्हे में आहुतियां दी जाती हैं।

11.शिशुर safety from evils during winter using lime & iron mixtureछः सात वर्ष की नई दुल्हन (पहले समय में) अथवा गर्भवती महिला के तरंग के ऊपर शिशरगोर अथ्वा शिशर मो'ण्ड सी कर लगाया जाता है। जिसमें तिल, चूना तथा लोहे का चूरे का मिश्रण होता है इस मिलावट को ज़रबाफ कपडे के छोटे टुकडे को तिकोण में सी दिया जाता है। गर्भवती महिला के अतिरिक्त छोटे बच्चों की टोपी या कंधे के सीध में कपडे पर लगाया जाता है। यह शिशुर माघ मास में लगाया जाता है। इस से रोगों से बचाव होकर डर की भावना भी मन से दूर चली जाती है। दावत उडाने का इस संस्कार से कोई सरोकार नहीं है।

13. निष्क्रमण:-First outing of both after birth घर से बाहर निकालने की क्रिया तीसरे मासके बाद की जाती है। इस समय मन्दिरों के दर्शन कराए जाते हैं।

14. दंतदावन. teething दांत निकालना।

15. अनुप्राषण:. First solid eating दांत निकलने के बाद छटे या आठवें मास में शिशु को कुछ अन्न खिलाना ।

16. ज़रकासय-First shaving of head बूड़ाकरण या चूडाकर्ण या मुण्डन। इससे दिमाग की नशुनुमा होती है। यादाश्स्त तेज़ होती है।

17. वोहरवोद. First birthday celeberation पहला जन्म दिन मनाने पर पूजा करवाना, तथा जलते चूल्हे में आहुतियां देना।

18. कर्णभेदन punching the ears तीसरे या पांचवें वर्श में कान छेदना इससे सारी उमर ब्रहमचर्य की रक्षा होती है तथा रीह के दर्द से राहत मिलती है। कानों में सोना डालने से कुछ रोगों का शमन होता है। कान का ऊपर वाला छेद बालिकाओं को **पक्षाघात** से रक्षा करता है।

19. उपनयन या यज्ञोपवीत Thread ceremony

वेदारम्भ to start formal education सातवें वर्ष की आयु में विद्या का आरम्भ कराना ठीक है

20. समावर्तनः reception ceremony at home after graduation अध्ययन समाप्त कर लेने पर गुरुकुल से स्नातक बनकर लौटने पर होने वाला समारोह या संस्कार।

21 विवाह marriage22—गृहस्थ, family life **23**— वानप्रस्थ, unattached to house hold

५० वर्ष की आयु में घर के कार्यों से निवृति।

24. अन्त्येष्टि disposal ritual of dead body:- मृत शरीर का संस्कार।

विशेष 1- बालक तथा बालिकाओं दोनों के लिए विद्यारम्भ का एक ही नियम है।

2. ऋषि लवगाक्ष निर्मित कर्मकाण्ड काश्मीर में प्रचलित है ३. ऋषि अत्रेय का बनाया कर्मकाण्ड पूर्व भाग में, ४. ऋषि पाराश्वर का आर्यवर्त के दक्षिण भाग में, ऋषि गोबिल का बनाया कर्मकाण्ड आर्यवर्त के मध्य तथा उत्तरी भाग में प्रचलित है।

हिन्दू साहित्य दर्शन तथा जीवन पद्धति।

हमारे धर्म को सनातन धर्म कहते हैं अर्थात सदा रहने वाला। यही आर्य धर्म है जिसका अर्थ है सुसंस्कृत मानव धर्म। अब इसी को हिंदु धर्म भी कहा जाता है।

भारतके प्राचीन धार्मिक साहित्य दर्शन में चार वेद अठारह पुराण, छः शास्त्र, चार आश्रम, चार पदार्थ सम्मिलित हैं।४ वेद=(१ऋगवेद-दृष्टाः-अग्निऋषि। २ सामवेद-दृष्टाः-आदित्य

- पुष्करनाथ रैणा

ऋषि। ३ यजुर्वेद- दृष्टाः-रघु ऋषि। ४- अथर्ववेद-दृष्टाः-अंगिरा ऋषि।)

१८ पुराण = (१-ब्राह्मण पुराण। २-पद्म पुराण।३-शिव पुराण। ४-भागवत पुराण ५- नारद पुराण ६-मार्कण्डेय पुराण। ७-अग्नि पुराण।८-भविष्य पुराण।९-ब्राह्मण वैवर्त पुराण। १०-लिंग पुराण ११-वराह पुराण।१२-स्कंद पुराण। १३-वामन पुराण।१४-कुरुम पुराण।१५-गरुड पुराण।१६-मतस्य पुराण।१७-ब्रह्माण्ड पुराण।१८- विष्णु पुराण।)

८,उपनिषदः-१-केन,२-कठ,३-मण्डुक, ४-तैतरीय, ५-हंस, ६-स्कंद, ७-प्रशन, ८- छान्दोग्य।

छः दर्शन शास्त्रः- १-कर्णद का वैशेषिक शास्त्र २-गौतम का न्याय शास्त्र। ३-पतन्जली का योग शास्त्र। ४-कपिल का सान्ख्यशास्त्र। ५-जैमिणी का मीमांसा शास्त्र। ६-वादरायण का वेदांनत शास्त्र शामिल हैं। चार आश्रम-ब्राह्मचर्य, ग्रहस्त, बाण परस्त, सन्यास।

जीवन में चार पदार्थों का लक्ष्य रखा गया है। वे हैं :-धर्म (अपने शास्त्र धर्म पर अडिग रहकर धर्म का पालन करना), अर्थ (धर्म पूर्वक धन कमाना तथा खर्च करना), काम(धन को संसार बसाने, दान आदि के कार्यों में धर्म पूर्वक व्यय करना) और मोक्ष (संसार में रहकर अंत में मोक्ष प्राप्त करने हेतु पहले से प्रयत्न करना)। पशचमी देशों में केवल अर्थ कमाने का ही लक्ष्य है, जो वासनाओं की पूर्ति का ही साधन बन जाता है। जिस को अर्जित करने हेतु उनकी दृष्टि में कोई भी साधन या विधि अपना सकते हैं।

हिंदू जीवन पद्धति (क) **4** वर्ण :(समाज में गुण कर्मे की दृष्टि से) १ ब्राह्मण-शिक्षक २ क्षत्रीय-रक्षक ३ वैश्य- पोशक ४ शुद्र-सेवक (ख)४ आश्रम- १ ब्रहमचर्य विद्याध्ययन २ ग्रहस्त कुटम्भ सेवा ३ वानपरस्थ ४ संयास, मानव सेवा- चित निरोध

(ग) ४ पुरुषार्थ-१ धर्म-उपासना २ अर्थ-द्रव्यार्जन ३ काम-इच्छापूर्ति ४ मोक्ष्य- ईशवर प्राप्ति

(घ) ४ ऋण- १ देवऋण-स्वधर्माचरण २ः ऋषिऋण-ज्ञानार्जन ३ पितृऋण-वंशसा तत्त्व ४ समाजऋण- समाज सेवा(ड) ४ तीर्थ कः अर्थ तीर्थ -व्यापार केन्द्र खः काम तीर्थ -कलाशस्त्र केन्द्र गः धर्मतीर्थ-सांस्कृतिक केन्द्र घः मोक्ष तीर्थ- आध्यात्म केन्द्र। (च) ४ देवता- क, मात्रदेव। खः पितृदेव। गः आचार्यदेव। घः अतिथिदेव

शब्दार्थ

अडक'ल्य- मासूम।

आय त् राय- शुर्य।

अवल्कि कवलो-पहली श्रेणी में पढने वाला कौल या उत्तम कुलीन।

अरतलिव'थूर-पूच़ पर कढाए अरतल पत्ते, अरतल-एक घास जिसके पत्ते स्फेद होते हैं।

अर्कनदाज़, बरकंदाज़, ग्वरंदाज़- अहलकार, ड्योडी वान,फिरंगीनोकर,

आ'रव्यिन लछ़जे-आ'र वोन्न्य,जंगली घास

आशेनय-आ'्सिनय

आ'नक् दानस-दर्पण से सजा चूल्हा

अरन्नि वेरे-उदालक मुनि का महा ज्ञानी पुत्र अर्थात दुल्हे के लिए, अलत-लाल रंग।

अभीद-भिक्षा (तू और मैं) अभेद हैं।

अभिषीख-सिंहासन पर बिठाने के लिए दर्भ से पानी छिडकना।

अ'त्र्ज हूंज़ तोलय-सोने के बहुत सारे ज़ेवर।

अरण्यरो'थ-अरणि-एक प्रकार का त्यागी या संयासी,

रुथ-जनेऊ संस्कार।

अंजूल्य.- अंजलि, द्रछ्।

आ'लति-पैरों में लगाने का अलत, महावर।

आद्यासीमन्त। दुर्गा की उपाधि देकर सुम या चीर निकालना।

आज़ि दर्शुन-घी में अपना मुख देखना।

आ'न्तधार-अनंत धारा। जैसे गंगा की धार।

आ'तन मा'ली-लाडली, खान् मा'ज।

आ'्टि पनः-श्रानपट बान्धने के लिए कमर के गिर्द आठ धागों से बनाधागा।

इशमसंड दस्तय -हांगल ह्यंग।

कनदरे- मकान की ऊपरी मंज़िल के दो खिडकियों के बीच में बाहरी भाग की ओर रखे हुए बारीक कशीदा कारी किये हुए लकडी से बने सजावटी त्रिकोण।

कनिके-कन्या ने।

कार-विज़, कार्य।

करनिके-इंद्र देवता की माता।

कहि किरिमिज-सोज़न का'री

कर्म्क्रूल-कर्म रूपी बेल बूटे।

कस खो'दायस-किस भाग्यवान की मंहदी रात है।

कूंश-ज़री पुलहोर।

कर बुलि खानो-खान् मोल।

कपटुय-कटाई की।

क्रेठ-सखती, क्रेछर।

क्रंड्-तीलियों से बुना-पिटारा ।

ख्यलि वोल-बडे ग्रहस्थ वाला।

खिर्य- चा'न्गिज, चटाई।

ख्रिकिदस्तार-ओं'गुड थो'गुड, गोल मटोल पगडी।

- पुष्करनाथ रैणा

ग'जगाह-वाव करुन?
गुको'श-कनक बूरा।
गुमन ग'लि- आ'रख श्रान गछ्न्न।
गूदान-जौ
गोश पेश (कलपुश)।
चव, चिव-भस्मी तिलक।
च़ाक'ट्य, च़ाकत्य-चक्र, फेरे।
चूंडाकार -मुंडन।
च्राजि-ज़री शू मेकर।
च़्वंज़-नोकरानी।
छ'त्रहार,स्वखदासे-चावलके प्रकार।
जन्थरि-टोकरी।
जिवुन-जामात्र।
जुर -पोता पोती।
ज़ूनि-नाम।
जामय गेरन-चूर्यदार पलव।
ज़ूरि-स्टैंड।
ज़यवोनुय -ज़्यवुवुन्य, प्राच़न द्रद ला'रिथ, छोटा।।
ज़ायोनुय-डालुन, हटावुन।
जो'न्नलन -पाज़ेब
त'रकि- कानों की मोटी बालियां।
तापदानस-
द'य- आदरनीय।
द'छिन- दक्षणा।
दायक-लाभप्रद।
दाग्-जगह का नाम।

दुर्दल-स्यफ।
पूस्तीन-फर
दर्भि डेंटोन-कमरमें बांधने की कुषा रस्सी
दूरनशाह-प्रसिद्ध धनवान राजा।
द्रुब् वायोनयु-ढोल बजाना।
द'र्य-कतार।
दानय दा'जी-बढ चढ कर
दान देने वाली।
दिव रा'यिस-पति।
दिवरा'यिस-प्रकाशमान सरदार या राजा, सूर्य समान पति।
दिवच़ि-देवियों ने।
दुलरी पोश-दो लडी वाले फूल।
दोरेदोर-तुरंत।
दिदर्य होक्-पाईप या सिग्रेट
नीरे-नज़दीक
नर्मद् पो'ट-मशगछाला।
नज़ि-नहीं
नकाश बा'ज़ी- नक्शे बनाकर।
नसतुवाजे-नाक में पहने का दायरा।
नरमद पो'ट- स्रूसि मूसल्
न्यछि-नख, कंधा।
नागूर्य पन-पान का पत्ता।
निर्नूदन-बारह प्रकार लक्षमी युक्त होकर भी अलक्षमी होना, लक्षमी का स्वार्थ छोड कर अध्यात्मिक उत्थान, समाजोपकार हेतु व्यय। करना,

लक्षमी युक्त होकर लक्षमी से संयास।

टोख टोख- हो हो।

टा'न्पट कुल-फलकुल,अवलाद युस ज़िंदन ख्यावि तू मरिथ चावि।

डेंटोनुय-कमर में बांधने वाली कुशा की रसी।

डबकू-सुंदर डिब्बे जैसा।

टा'क्य-मिट्टी का पर्व।

डों'ड-कमरबंद।

डेरबल- गरू या घर।

पोरुत-तखती।

दिदूर्य होकय-सिग्रेट

प'ल्युन दस्तार- तिलू पलूदार।

पुत्य, पुत्य -पुत्र।

प'त्य आसमानय-पितर लोग आकाश में।

पा'थूर- अंग, रिवायत, प्रदर्शन

पिली टोक-बुगनी।

पतिमे सरने-पिछला कर्म।

पुनसुवन-जलते हुए आग के चूल्हे में आहुति देकर शोक का निवारण करना।

प'ल्युन-पलूदार।

परवाना-लिस्ट बनाकर सामान भेजना।

पंच गव्य -गुहि, ग्यवू द्वधू ग्रुमति नाबद का मिश्रण।

पा'नी-स्वयं।

पतनूय-४५जोडना-

पोशि क्षुर- फूलों की टोकरी।

प्रास-नकदी

पिल्यटोक-बुगनी

प्रासक्यन द्यारन-क्वछि ह्यवून्य।

ब'डब्यन्य-पुफी,

बडा-बढा- कल, विचार।

बुर्ज़न-एक अमीर ज़ात।

बेठानू व'तिये-बेठालस प्यठ बिहिथ मशवरू दिनू वाजन्य।

बं'दिथ-यकजा।

बोराकि वादा-?४७

बोलतू-हवसू या चाव के साथ।

बोलाकिग्राक-महाराज़ू नथ या नो'कूड।

बोलाकि-नथ।

स्वनू बूत का'री-कढाई करना।

बालि-सुंदर सखी।

बुसरख- खस्ता घी के कुलचे।

बुदाह सादून-विद्या साधन।

ब्रग द'र्य-ब्रगों (एक पंछी) की कतार।

बोधय -सीधा साधा।

बोलत-हावसू।

मारकन- लूकन या आमस मंज़।

मरेद - चूना।

मचि-म'ट-मिट्टी का ऊंचा पक्का बर्तन या वूंचि।

- *पुष्करनाथ रैणा*

मुचा- बेगजोश- संतान।
मुरि-हलमस, क्वछि।
मर्म- बाजू या हाथ।
मृगाज़ल-मृगछाला।
मर्म-बाजू या हाथ।
मिहीन्-पा'लिश।
म्वंगरहकाय-म्वंग् खार।
म्वखतुक पोशो- मुक्ता से बने फूल।
मद्मति-मामी।
मालि-तिकूनी थज़र,बालस,ग्रटस त् येर
व्यछ़नावन्चि कंगनि येर् माल, माल।
मालि, सीरि- येर् कंगनि। (कंघी)
मानरयनि-गंभीर, मान रखने वाली।
प्यठ व्यछ़ना'वमूच़ तोस् माल त् तथ
बनेमूच़ फंब सीर,(पोनी)।
मोन्यन गछ (चीन्यन, ल'बन)।
रा'शी गगनूचि - क्रांति वृत्ति में पडने
वाले तारों के बारह समूह जैसे मेश,
वेश्श, कन्य आदि।
रोशनाम बट्-प्रसिद्ध
रुपूल् कां'कून्य-चांदी का कंगन।
लादन-attachment लालूच।
लते-ल'तिये।
लोट् रा'निम-बडी रानी।
लोशवुय- लेखनोवुय(लिखाया)
लशेनम -ल'सिन।

ल्यलबान-संतान।
लूयिनूय गाश- पुत्र पैदा होना।
वर् दाये-वर देना।
वखनय- बोलना ।
वान्यन्य-पवित्र।
वनि कुल-खुले मैदान में उगा पेड-सुंदर।
वय मुच़-म्वछि फो'ल।
वुद(पुं)- विज़(स्त्री)।
यंबूरज़लि कोज़ो-नरगिस फूलों
का गुच्छा।
लव्- छींटें देना।
यज्ञनूकि बीज़य-बीजमंत्र।
रोब खान्-रवक, सजा हुआ लंबा
चौडा कमरा।
र'न्य-पत्नि।
वुलग-उत्तम प्रकार का चावल।
वुद्यूतुय-उद्योत(सं)-उज्जवल, चमकदार।
व्यशनारि-पत्नि।
वा'न्कलि-लंबी चोटी वाली।
वासूस'सि-हमदर्द।
वान्यन्य-असलज़ात,शर्मदार।
वा'ल्य- मर्दों के कानोंके लिए मोटे दायरे।
व्यपहार-उपहार।
विलि-उपयुक्त समय पर।
वस- नक्शदार तालव
व्यद- विधि।

शिशर मो'ण्ड-तिल, चूना तथा लोहचूर्ण से भरा चांदी या ज़रबाफ का बनात्रिकोणी कोश।

शुमल् -पश्मीना, तोसा।

शेर -बुथ, चेहरा।

शैयि- आशावान।

शुमल् दस्तार-पश्मीन

शुफतस-मांस या कद्दू का कोफतह।

संग शावरिये-रा'नी।

सेरे (सेले)रसय-अवशधिमिला पानी।

सस् क'ण्डि- मूंग से भरे क्वंड या बर्तन

सोव-शुभ, सावेतोन-शुभ, फूस

सोगुन-स्वकृत का।

सद्दूर होम (संस्कृत)- साधु की जटा, कलगी, चोटी तथा प्रातःछींटें लगाना सिखाना।

सुरथ-लाल रंग।

सोज़ा'नी-सोज़नकारी वाला जालीदार परदा।

सीर-फंबसीर।

स'सतिस-आसनवोल।

सूंत्य -वसंत।

स्वठक- बिलोर।

स्वन-गोमूत्र।

स्वन् बुतका'री- सोने के धागे से कढाई।

ह्यो'तये-सहानुभूति-अनुकूल।

हंग् व'चि -(दरवाज़े के हंग का कोण जैसे कछ् वचि, सर का दाहिना तथा बाहिना तरफ)।

हा'बिलि-द्रमुन।

ह्नूरय-बिंदरि, चूनि।

हा'न्कयटाठ्यो-बहुतप्यारा

होगे-होग-क्रख,मशहूरी

होकय-शोकसान

त'रकि-पुरुष के कान की बाली।

नागर्य पन- पान के पत्ते,बीडा।

सट्ट-दरवाज़े की चौखट पर।

त्रो'ट- माला

त्राग-दो चहाडोंकी मैदानी जगी

- पुष्करनाथ रैणा

Henzey comentary

'Henzey Vanvun' is a uniform type of song exclusively sung by Kashmiri Pandit women in kashmiri language at the time of yajnia performed specially at the time of Sanskars (rites) like Thread ceremony ' yagiopaveet and marriage etc while sitting nearer to the yagnia mandap. Women folk likes to sing it whether they understand its meanings or not. For general public only buzzing and humming note is heard without understanding an iota of it.

I learnt it and was astonished to find its depth, gravity and integrity which represented the true but strong KP culture which has been preserved by our simple but saintly women folk facing all odds put forth by alien cultures. Or we can say it as index of KP culture, the very existence of which is in shambles now. Briefly it contains, in a full sequential order, all rites to be performed by KP families. So it was pertinent to preserve and inform the true picture of 'Henzey Vanvun' to my society in general and culture preservators ie KPwomen folk in particular. A book 'Henzey Vanvun' Heemal was published in 2007 and contains all these explanations.

Here is given a brief sketch of 'Henzey Vanvun' with some meaning of the abandoned technical words also.

1. Meaning-The word 'Henzey' is not found in Sanskrit dictionary however, in 'Amar kosh' the word has been given a meaning as a 'call for a higher person' Hunday, henzey, Halavanay and Neechan etc (a collective vedic meteric call)Abhigianshukantulam act I page 19. by M.R. Kale Ist Edition 1898.p.19- A particle of address for a friend (of high rank; see com.) also हण्डे, हेंज़े, हलावाहे,, नीचां, चेटीं, सखीं प्रति A.Kosh (अमर कोष)।

In 'Henzey Vanvun Heemal' page 103 first edition, there is a verse which says,

"Parvati came to us by calling her"
"Nad din siten aayi Parvatiyae Naran heotyae ashanai'
नाद दिन्‌ सूते'न आयि पारवतिये, नाराण ह्यो'तये आ'शेनय।'

so 'Henzey' means address to Parvati for coming to the spot of yagnia where 'Henzey Vanvun' is sung. It is, essential to get blessings of Mother Shakti.

2. Henzey is sung by an expert lady who must have learnt it from a teacher –Guru- she recites a verse quickly and the followers sing it jointly in a set rhythm. Every verse starts with the pious word, 'Henzey'. It takes 40 to forty five seconds to recite each verse at least 5 seconds for each word. It looks that set vibrations thus created must be of some importance for the environment at the sight.

3. Each verse shows step by step directions in sequential order in performing a yagnia in kashmiri language, for example at the fake end of yaginiopavit

havan, the verses are sung thus:- After Athifol is offered A beautiful well decorated 'vyoug' is written for you(the mekhal maharaza), Your mama ji will lift you in his lap or on a horse, to take you to yarbal (near water) with(a) janeev(thread) in your right arm and (b) jap mala(beads) in the left hand and (c) 'sadfutji' (a pack of corn etc. hanging from your shoulders (d) to practice recite (e)OM (f) pranayam or breathing practice, (g) learn bathing technique(the concerned guruji has to accompany him to demonstrate the practices), (h) to get the holy water from the kalsh sprinkled on you after returning from water, (i) stand before high flame of havan kund to get illuminated, (j) show yourself (darshan) to all who are present there, (k) get one almond as Prasad-(now a days walnut, it shows the premitiveness of the Henzey when walnuts were not in use or available in Kashmir except in forests) and in the end offer flowers to yaginia-(Khshima posh). Page 100 of 'Henzey Vanvun Heemal'-2007 edition. The whole 'Henzey Vanvun' containes such practices throughout.

4. The verses are, basic techniques of performances of sanskars with extensions called 'vakhny' means repetition replacement of nouns with person performing the particular sanskar . Who performs the Yaginia is generally addressed to (i) Dashratha, king Janak , king Vasudev etc. then after the actual performer is named in Henzey. (ii) The son or daughter who's is addressed as Krishna Rama and parvati, (iii) Pufi is addressed as Subhadra,who is all in all in the fuction.(iv) The spouse is called as Devki. To cite an example (ibbid). Invitation function-(dapun) they sing the following verse:-

'You mother Devki you have set for inviting relatives on a royal chariot'. Extention or vakhny:- the name of spouse of the performer and later on other nearest relative ladies is recited:- say 'Radha mali you have set for inviting relatives in a royal chariot' and so on. Likewise the names of the concerned participants are taken one after the other.

5. Warnings regarding punctuality of the programs ie. Timing of thread ceremony, laying mandals, lagan time. In no case the fixed timing should get altered which causes harm to the family.

6. It has a uniform character throughout Kashmir valley.

7. It has a special type of vyug, exclusively meant for the bride and groom, a form of Shiva and Parvati, having sixteen houses represented by 16 lotus petals with three different colors (i) outer petals in red (ii) central portion green filled with Mehandi and (iii) white lime powder in the centre as shown in the book 'Henzey Vanvun Heemal'. 8. some key words the meaning of which has been derived as Nirnudhan means dhan laxmi exeption, satdhar meaning sprinkle water on the main door of the house with mantra- ओम सिद्ध लक्ष्मी नमः, महा लक्ष्मी नमः। and evening deep with mantra (ओम शंभु भवति कल्यानम् आरोग्यं सुख संपदम। मम ज्योति प्रकाशाय दूप ज्योति नमस्तुते।।) , Artal means a grass with white beautiful leaves and so many other words.

9. 'Henzey Vanvun' needs a thorough study to understand its value.

10. The present book Heemal 'Henzey Vanvun' is presentation of a novel and maiden form which was never even referred to, not to speak of commenting on it. It is store house of KPs culture events of different times.

11. 'Henzey Vanvun' has a place for KPs' social and economic ups and downs in different historical periods.

12. It finds place for the social reformers and guides appeared in the hour of need like Chamba Nath and Hargopal. When the rival culturists boycotted the supply of cheese and vegetables at the time of marriages, the public obeyed the dictat in full spirit and served the baraties with dal(pulses) and khulfa(nunar) vegetable.

13. It contains all rituals as Zung, with noon, ver, mohra prass, change the name of bride, Aalat, tilak, narivan, sundiya- chong, teki pootch, dejhur as symbol of shree chakra, and verses in the praize of Brahmins and Pandits.

14. It possesses hidden informations like date of birth of ShriKrishna, the names of flowers in different seasons of Kashmir and their practical use.

15 .'Henzey Vanvun' is gravid with well defined terminology of sanskars to be performed well in time and with special care to the healthy development of the fetus soon it gets conceived. A well defined sequence from Garbhadan, Kahnether to marriage of the new comer to this world is maintained in the very beautiful verses,(see Heemal .'Henzey Vanvun' on page 77 of 2007 edition) which male folk of KPs have never taken care of. The treasure is now in the hands of educated folk who hold the responsibility to preserve and nourish it for themselves and the future generations. It is also their duty to unfold the hidden meaning of many Henzey verses which I should call as Sutras. Many words have been unveiled for the first time in the book mentioned above.

The home address of all kashmiri pandits is hidden in Henzey vanvun. This Henzey needs to be read with sympathy attention and honesty and then to come forward with stern will to propagate and get it implemented in the real sense at the time of Mehkla and marriage sanaskars, that will be a noble contribution to (now ignorant but craving society) then we can find our **home address.**

WE HAVE EITHER TO FOLLOW THE TRADITIONS OR REJECT THEM, NO MIDDLE PATH.

Bori Jammu (Tawi) 11-09-09

Thank you.

P.N.Raina,lariyar Tral,
96-7B, Manorama Vihar Patta
Bori, Jammu Tawi 180002

कन्यादान

अथवास

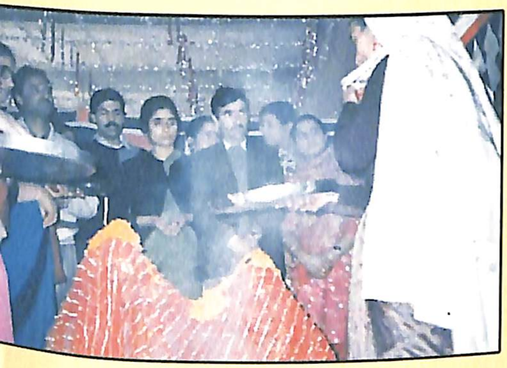

पोशपूज़ा

दयबत

श्रीचक्र

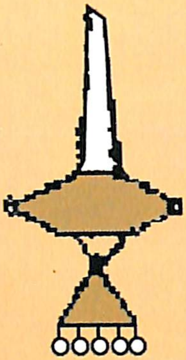

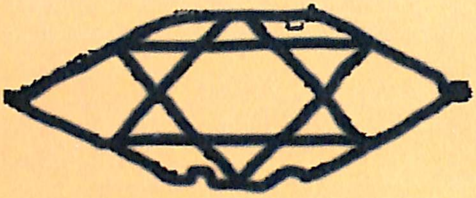

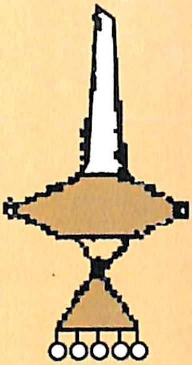

डे´जहो´र

डे´जहो´र

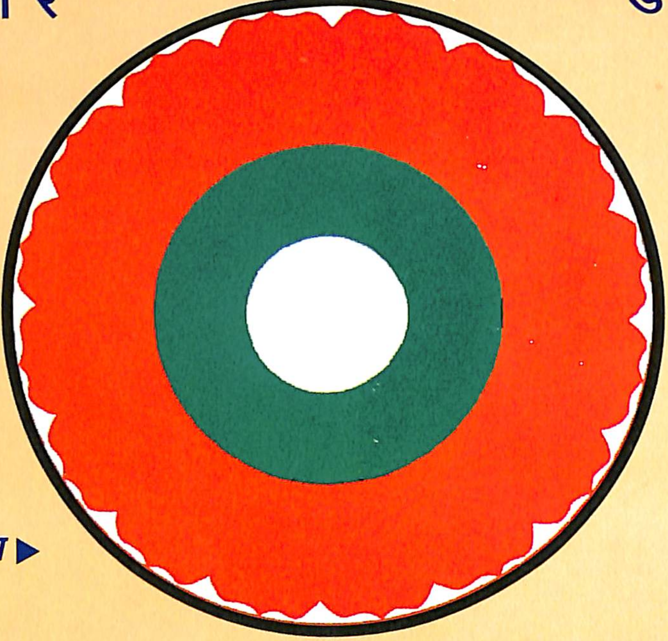

वयूग ▶

सर्वाशापरिपूरक चक्र

लेखकः
पुष्करनाथ रैणा

मिलने का पताः
97-7B मनोरमा बिहार
बोड़ी, जम्मू - 180002
दूरभाषः 2502888
Mob. : 9469173422

Jandiyal printing press = 2553140